ओ३म्

पाक्षिक परोपकारी

ऋग्वेद
यजुर्वेद
सामवेद
अथर्ववेद

वर्ष ५८ अंक १४ मूल्य ₹१५ महर्षि दयानन्द की स्थानापन्न परोपकारिणी सभा का मुखपत्र जुलाई (द्वितीय) २०१६

महर्षि दयानन्द सरस्वती

योग साधना शिविर (१२-१९ जून २०१६)

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा का मुख पत्र

वर्ष : ५८ अंक : १४
दयानन्दाब्द: १९२
विक्रम संवत्: आषाढ़ शुक्ल, २०७३
कलि संवत्: ५११७
सृष्टि संवत्: १,९६,०८,५३,११७

सम्पादक
प्रो. धर्मवीर

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,
केसरगंज, अजमेर- ३०५००१
दूरभाष: ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर
वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।
दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

-परोपकारी का शुल्क-
भारत में
वार्षिक-२०० रु., **द्विवार्षिक**-३९० रु., **त्रिवार्षिक**-५८० रु., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-२००० रु.।
एक प्रति का मूल्य - रु. १५/-
विदेश में
वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस. डालर, **द्विवार्षिक**-९५ पा./१५२ डा., **त्रिवार्षिक**-१४० पा./२२५ डा., **आजीवन**-(=१५ वर्ष)-५०० पा./८०० डा.। **एक प्रति का मूल्य** - पाउण्ड-३
एक प्रति का मूल्य - डालर - ४

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०
ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

लेख में प्रकट किए विचारों के लिए सम्पादक उत्तरदायी नहीं है। किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।

ओ३म्

विद्याविलासमनसो धृतशीलशिक्षा:,
सत्यव्रता रहितमानमलापहारा:।
संसारदु:खदलनेन सुभूषिता ये,
धन्या नरा विहितकर्म परोपकारा:।।

RNI. No. ३९५९ / ५९

अनुक्रम

१. गोमूत्र में सुवर्ण तो गोदुग्ध में विष क्यों?	सम्पादकीय	०४
२. कुछ तड़प-कुछ झड़प	राजेन्द्र जिज्ञासु	०७
३. 15 Minute Dhyan....	S. Anand	१२
४. वैदिक पुस्तकालय के नये संस्करण		१६
५. मेरी अमेरिका यात्रा	डॉ. धर्मवीर	१७
६. पुस्तक परिचय	देवमुनि	२०
७. हिन्दी को राजभाषा के रूप में.....	सत्येन्द्र सिंह आर्य	२२
८. सार्वभौम मानव धर्म	मोहनचन्द	२४
९. प्रबल राष्ट्रवाद के पर्याय - प्रो.....	इन्द्रजित् देव	२६
१०. जिज्ञासा समाधान-११५	आचार्य सोमदेव	३०
११. संस्था-समाचार		३८
१२. स्तुता मया वरदा वेदमाता-३७		४१
१३. आर्यजगत् के समाचार		४२

www.paropkarinisabha.com
email : psabhaa@gmail.com
- उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएँ -
www.paropkarinisabha.com → Daily Pravachan

सम्पादकीय

गोमूत्र में सुवर्ण तो गोदुग्ध में विष क्यों?

२९ जून २०१६ को समाचार पत्रों में यह समाचार प्रमुख रूप से प्रकाशित हुआ है कि अनुसन्धान से सिद्ध हुआ है कि गोमूत्र में सुवर्ण के कण पाये गये हैं। समाचार की मुख्य सूचना इस प्रकार है-

गुजरात के जूनागढ़ कृषि विश्वविद्यालय के बायो टेक्नोलोजी विभाग के प्रमुख उक्त अनुसंधान करने वाली टीम के अगुवा डॉ. बी.ए. गोलकिया ने बताया कि गुजरात के सौराष्ट्र इलाके के गिर में पाई जाने वाली गायों के मूत्र में प्रति लिटर तीन से दस मिलीग्राम तक सोना, २ मिलीग्राम चाँदी, ०२५ मिलीग्राम जस्ता और १.२ मिलीग्राम बोरॉन होने की पुष्टि हुई है। यही नहीं, इनके अतिरिक्त अन्य ५१०० रसायनों की भी पहचान की गई, जिनमें एंटी कैंसर, एंटी कॉलेस्ट्रोल, एंटी डायबिटीज, एंटी एजिंग के गुण वाले रसायन शामिल हैं। ऐसा प्रयोग गायों की अन्य प्रजातियों पर नहीं हुआ है। यह सोना जैविक सोना है, जो चिकित्सकीय गुणों के मामले में लाजवाब तथा आम तौर पर चिकित्सा के लिये प्रयुक्त होने वाली स्वर्ण भस्म आदि से कहीं आगे है।

इस देश का यह दुर्भाग्य है कि अनुसन्धान में गोमूत्र में सुवर्ण की उपस्थिति प्रमाणित हो रही है, परन्तु आज प्रत्येक व्यक्ति दूध के नाम पर जो पी रहा है, खा रहा है, वह केवल विष है। पहले समय में दूध जब अधिक था, अतिथि का सत्कार दूध से किया जाता था, पानी पिलाना सम्मान के प्रतिकूल समझा जाता था। तब इस देश में गौओं की संख्या मनुष्यों से अधिक थी। जैसे-जैसे हिंसा के कारण, अनुपात घटता गया, परिस्थितियाँ बदलती गईं। दूध माँगने पर भी दूध न मिले, ऐसी दशा में दूध में पानी मिलाकर दिया जाने लगा। दूध में पानी की मिलावट करना, उसे बेचना एक सर्वप्रचलित अपराध बन गया। घर में दूध की मात्रा कम होने पर पानी मिला कर उसकी पूर्ति करना एक सामान्य आचार बन गया। पशुओं की निरन्तर घटती संख्या ने इस परिस्थिति को बदल दिया। अब दूध में पानी मिलाने के स्थान पर पूरा दूध ही नकली बनने लगा। दूध वाशिंग पावडर, तेल आदि डालकर बनाया जाने लगा। एक बार दिल्ली में श्री कृष्णसिंह जी के गाँव में कार्यक्रम में जाते हुए वहाँ के निवासी ने बताया- आचार्य जी, इस गाँव में पशु नहीं हैं, परन्तु हजारों लीटर दूध प्रतिदिन डेयरी को भेजा जाता है। अब आप कल्पना कर सकते हैं कि यदि ऐसा दूध डेयरी में एक गाँव से लिया जा रहा है, तो क्या शेष लोग मूर्ख हैं जो शुद्ध दूध डेयरी को देंगे? एक बार उत्तर प्रदेश में दिल्ली की ओर आने वाले दूध की जाँच की जाने लगी तो सारे के सारे दूध बेचने वालों ने अपना दूध सड़कों पर फेंक दिया और किसी भी प्रकार के परीक्षण के लिये तैयार नहीं हुए। उस समय समाजवादी नेता और मुख्यमन्त्री मुलायमसिंह की टिप्पणी थी- दूध बेचने वालों को भी तो अपने बच्चे पालने हैं, वे मिलावट नहीं करेंगे तो उनके परिवार का भरण-पोषण कैसे होगा? इस प्रकार दूध में मिलावट ही नहीं, नकली दूध को भी हमने मान्यता दे दी, चाहे ऐसा करने से किसी की भी मृत्यु हो तो हो!

दूध की कमी को पूरा करने के लिये बाजार में सोयाबीन और मूंगफली का दूध बनाकर बेचा जाने लगा। सोयाबीन और मूंगफली का घोल दूध जैसा दीखता है, तो कुछ गुण भी मिलते हैं, परन्तु वह घोल क्या दूध का स्थान ले सकता है? इधर हमारा अनुसन्धान विपरीत दिशा में बढ़ता ही जा रहा है। दूध का आधार पशु बढ़ाने के स्थान पर पशु को समाप्त कर दूध के विकल्प खोज रहे हैं। पशु बढ़ाने के स्थान पर पशु में दूध की मात्रा बढ़ाने की बात करते हैं। पशु से अधिक दूध प्राप्त करने के लिये पशुओं पर तरह-तरह के अत्याचार करते हैं। दूध के लिये पशुओं को इंजेक्शन लगाते हैं, यह बिना सोचे कि इसका पशु पर और दूध पर क्या प्रभाव पड़ेगा? यह एक कष्ट व पीड़ा देने वाला उपाय है। इस औषध का उपयोग प्रसव शीघ्र कराने के लिये किया जाता है। इसके लगाने से गर्भाशय में संकोच होकर शीघ्र प्रसव होता है। इस इंजेक्शन के लगाने

से पशु में प्रसव पीड़ा होती है बिना सोचे दिन में दो बार पशुओं को यह इंजेक्शन लगाते हैं।

इस दवा का यदि पशु पर प्रभाव पड़ता है तो दूध पर भी पड़ता है, दूध में इसके प्रभाव से जो बच्चे ऐसा दूध पीते हैं, उनके अन्दर वयस्कता का भाव जल्दी प्रकट होने लगता है। जो बच्चे १५-१६ वर्ष में बड़े लगते थे, उनमें यह परिस्थिति १०-१२ वर्ष में ही दिखाई देने लगती है। ऐसा दूध, दूध के प्राकृतिक गुणों से रहित हो जाता है। हम दूध अधिक लेने के लिये गाय-भैंस के बच्चों को मार देते हैं तथा कई लोग उनके अन्दर भूसा भर देते हैं। जब दूध निकालना होता है, तब उसे पशु के सामने रख देते हैं, पशु उसे चाटता है और आप सरलता से दूध निकाल लेते हैं। यह अपने स्वार्थ की पूर्ति के लिये किया जाने वाला पाप है।

हमारे समाज में दूध की आवश्यकता तो बढ़ रही है, परन्तु दूध का स्रोत घट रहा है, ऐसी परिस्थिति में अपराध ही शरण बन जाता है। चोरी और मिलावट तभी होती है, जब वस्तु दुर्लभ हो। आज कोई व्यक्ति कितने भी पैसे देकर शुद्ध घी-दूध प्राप्त नहीं कर सकता, जब तक उसके अपने पशु न हों। हमें दूध, दही, मक्खन, पनीर, मावा, मिठाई, घी-सब कुछ चाहिए, परन्तु गाय नहीं चाहिए, तब ऊपर बताये सब विकल्प ही काम आयेंगे। गत दिनों मध्य प्रदेश के एक गाँव में जाने का अवसर मिला, वहाँ एक व्यक्ति भट्टी जलाकर मावा बना रहा था। हमने सोचा-अच्छा मावा मिलेगा, ले चलते हैं। भट्टी के पास जाकर बैठे, तो एक व्यक्ति चम्मच से डालडा दूध में मिला रहा था। पूछने पर पता लगा कि पहले यह व्यक्ति गाँव से दूध लाता है, उसकी क्रीम निकाल कर घी बनाता है, फिर बचे हुए दूध में वनस्पति तेल डालकर मावा बनाता है। आज जितने भी उपाय जिसको आते हैं, उतने उपायों से दूध और खाद्य पदार्थ बनाये जा रहे हैं। इसमें भारत हो या विदेश, गरीब हो या अमीर, गाँव हो या शहर, किसी की कोई भी सीमा नहीं है। जितना अपराध नगर में होता है, उससे कम ग्राम में नहीं होता। जितना हमारे देश के अन्दर दूध में मिलावट का पाप हो रहा है, उससे अधिक यूरोप अमेरिका आदि के नगरों में किया जा रहा है। **वहाँ अपराध करने का प्रकार वैज्ञानिक साधनों से साफ-सुथरा, आधुनिक है। हमारे देश में दूध में मिलावट करते हैं, उन्होंने गाय में ही मिलावट कर दी।**

आज बड़ी-बड़ी विदेशी कम्पनियों का दूध और दूध का चूर्ण विष के अतिरिक्त कुछ नहीं है। भारत की सभी डेयरियाँ दूध की मात्रा को पूर्ण करने के लिये इसी दुग्ध चूर्ण का उपयोग करती हैं। यूरोप के लोगों ने दूध के लिये नई गाय बना डाली, इन गायों को हम जर्सी, रेड डेन, हेलिस्टन आदि के नाम से जानते हैं। इनसे प्राप्त होने वाले दूध की मात्रा ने हमें पागल बना दिया है। हम अपनी गिर, राठी, साहीवाल, नागौरी, थारपारकर आदि सैंकड़ों देसी नस्ल को छोड़कर विदेशी गायों को ले आये। उनके बीज से अपनी गायों को संकर नस्ल का बना लिया। आज जब विदेशों में अनुसन्धान किया गया, तो पता चला कि हम ठगे गये। विदेशी गायों के दूध से मधुमेह, कैंसर घुटने का दर्द जैसी अनेक बीमारियाँ हमारे समाज में बढ़ रही हैं, परन्तु विदेशी कम्पनियों का अरबों-खरबों का व्यापार दूध, दूध के पाउडर, घी तथा दुग्ध उत्पादों का है, वे इस पाप को न रोकना चाहते हैं, न प्रकाशित होने देना चाहते हैं। वास्तव में गाय जैसा दीखने वाला विदेशी पशु अमेरिका में पाये जाने वाले जंगली सूअर और युरास नामक पशु के प्रजनन से अधिक दूध और अधिक मांस प्राप्त करने के लिये वैज्ञानिकों द्वारा बनाई गई एक नई प्रजाति है। इसके कारण इस मांस और दूध का सेवन करने वाले चाहे अमेरिकी हों या भारतीय, सभी में घातक रोग बड़ी तेजी से बढ़ रहे हैं।

आजकल जहाँ यह पशु है, उन देशों ने भी इन पशुओं के दूध को पीना छोड़ दिया है और वहाँ के लोग इसे सफेद जहर मानने लगे हैं। वहाँ के लोग मांस के लिये भी भारतीय गाय को ही पसन्द करते हैं, इस कारण भारत विश्व का सबसे बड़ा गो-मांस निर्यात करने वाला देश बन गया है। दूध के लिये जर्मनी, ब्राजील जैसे देशों ने भारत की गिर गाय को बहुत वर्षों पहले से ले जाना प्रारम्भ किया था। आज वहाँ बड़ी संख्या में इनका पालन किया जाता है। आज वहाँ इन देसी गायों का मूल्य एक करोड़ रुपये प्रति गाय तक पहुँच गया है। हम अपने पशु और अपने मनुष्यों

के स्वास्थ्य का मूल्य नहीं समझते हैं, अत: विदेशी गायों के प्रति मोह रखते हैं, उनके दूध से अपने अन्दर कैंसर, मधुमेह, घुटनों के दर्द जैसे रोगों को आमन्त्रण दे रहे हैं। हम मांस के लिये सोना देने वाली गाय को मार रहे हैं।

आज हमें विचार करने की आवश्यकता है कि केवल दूध की मात्रा का लोभ करने से समस्या का हल नहीं होगा। इसके मूल में जाकर इस समस्या का हल करना होगा, नहीं तो महर्षि दयानन्द का यह वाक्य सार्थक होगा- गौ आदि पशुओं के नाश से राजा और प्रजा का भी नाश होता है, क्योंकि जब पशु न्यून होते हैं, तब दूध आदि पदार्थ और खेती आदि कार्यों की भी घटती होती है। देखो, इसी से जितने मूल्य से जितना दूध और घी आदि पदार्थ तथा बैल आदि पशु सात सौ वर्ष पूर्व मिलते थे, उतना दूध, घी और बैल आदि पशु इस समय दस गुने मूल्य से भी नहीं मिल सकते, क्योंकि सात सौ वर्षों में इस देश में गौ आदि पशु को मारने वाले मांसाहारी विदेशी मनुष्य बहुत आ बसे हैं। वे उन सर्वोपकारी पशुओं के हाड़-मांस तक भी नहीं छोड़ते, **नष्टे मूले नैव फलं न पुष्पम्।** जब कारण का नाश कर दे तो कार्य नष्ट क्यों न हो जावे। हे मांसाहारियो! तुम लोग जब कुछ काल के पश्चात् पशु न मिलेंगे, तब मनुष्यों का मांस भी छोड़ोगे वा नहीं?

हम जहाँ पशुओं को मारकर दूध बढ़ाने के उपाय कर रहे हैं, उसी प्रकार उपजाऊ भूमि को घटाकर अन्न बढ़ाने का उपाय भी कर रहे हैं, यह गणित उल्टा पड़ेगा। अन्न भी नकली और बीमार मिलेगा, दूध भी नकली और रोगकारक ही प्राप्त होगा। इन दोनों समस्याओं का हल हमारी प्राचीन परम्परा में निहित है। उसका हमारे पास कोई विकल्प भी नहीं है। पुराने समय में जंगलों की सुरक्षा अनिवार्य थी। नगर-ग्राम के समीप जो जंगल होते थे, वह गोचर भूमि कहलाती थी। जंगल के अधिक होने से पशुओं की सुरक्षा और वृद्धि सहज सम्भव है, वहीं जंगल के कारण वनस्पतियों की प्राप्ति से दूध में औषधीय गुण प्राकृतिक रूप में सहज प्राप्त होते हैं। गाय आदि पालतू पशुओं के अतिरिक्त जंगली पशु-पक्षियों की भी सहज रक्षा हो जाती है। जंगल में घूमने वाली गायों के दूध से आरोग्य, बल, बुद्धि, पराक्रम आदि सद्गुण मनुष्यों में बढ़ते हैं। पशु-पक्षियों की अधिकता से जंगल में गोमूत्र-गोबर आदि से भूमि को पर्याप्त खाद मिलने से वृक्ष-वनस्पतियों की वृद्धि होती है। वृक्षों की अधिकता से वर्षा, जलवायु की शुद्धता तथा उष्णता की मात्रा भी कम हो कर वातावरण सौम्य बनता है। इसका दूसरा लाभ भी होता है। दूध-घी की मात्रा अधिक होने से गरीब-से-गरीब आदमी को भी उचित पौष्टिक भोजन मिलता है तथा दूध-घी का उपयोग करने वाले व्यक्ति को अन्न खाने की कम ही आवश्यकता पड़ती है। इससे मलमूत्र, दुर्गन्ध भी न्यून होकर पर्यावरण की शुद्धि होती है। रोग कम होते हैं। दुर्गन्ध कम रहने से वायु व वृष्टि-जल की शुद्धि बनी रहती है।

आज हम दूध की कमी को अन्न से पूर्ण करना चाहते हैं। मांस को अन्न का विकल्प मान बैठे हैं, जबकि वास्तविकता यह है कि मांस खाने वाला व्यक्ति अन्न भी अधिक खाता है। अधिक अन्न से रोग बढ़ते है। मांस खाने वाले लोग पशुओं को समाप्त कर देंगे तो दूध तो समाप्त होगा ही, मनुष्य की प्रकृति मांसाहारी होकर मनुष्य का मांस खाने की प्रवृत्ति बढ़ेगी। इस सबका उपाय गो-संवर्धन है। जब तक मनुष्यों के पास अधिक गायें नहीं होगी, तब तक समस्या का हल नहीं होगा। पशु-पक्षी अधिक हों, इसलिये परमेश्वर ने जंगल अधिक बनाये हैं। ईश्वर की सृष्टि में मनुष्यों से अधिक पशु-पक्षी आदि अधिक रहने से ही मनुष्यों का कल्याण सम्भव है। इनके लिये भोजन की व्यवस्था परमेश्वर ने प्राकृतिक रूप से की है। घास, वृक्ष, फल-फूल, पशु-पक्षियों के लिये बनाये हैं। सारी वनस्पतियाँ स्वयं उत्पन्न होती हैं। परमेश्वर ने पशु-पक्षियों की मात्रा मनुष्य के भोजन से अधिक बनाई है। पशु-पक्षियों को भोजन के लिये खेत नहीं जोतना-बोना पड़ता, इसलिये प्रकृति में इनका अधिक होना मनुष्य के हित में है। परमेश्वर के नियम के विपरीत चलकर हम कभी सुखी नहीं रह सकते। अत: वेद ने कहा है-

यजमानस्य पशून् पाहि।।

- धर्मवीर

राजा और प्रजा जन परस्पर सम्मति से समस्त राज्य व्यवहारों की पालना करें।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ६.२६

कुछ तड़प-कुछ झड़प

– राजेन्द्र जिज्ञासु

मुद्रण दोष था, सर्वज्ञता का प्रश्न ही नहीं:- आर्य समाज चौक प्रयाग के विद्वान् प्रधान श्री श्याम किशोर जी ने परोपकारी के एक गत अङ्क में हजरत मुहम्मद के खलीफाओं की हत्या विषयक तड़प-झड़प में प्रकाशित अटपटे वाक्य को पढ़कर लेखक से कहा कि आप भी क्या सर्वज्ञ हो गये, जो पैगम्बर मुहम्मद की हत्या के बारे में यह ज्ञान दे दिया? वे पूज्य उपाध्यायजी के शिष्य हैं। गुरुभाई हैं। मुझे कोसने का, कान खींचने का उन्हें अधिकार है। उन्हें बताया गया कि मैंने तो तीन खलीफाओं की हत्या की चर्चा की थी। एक वाक्य छूट गया और शब्द आगे-पीछे छप गये। श्री अनिल आर्य जी के ध्यान दिलाने पर एक अगले अङ्क में स्पष्टीकरण देते हुए मुद्रण दोष पर खेद प्रकट कर दिया गया था। यह सुनकर वे प्रसन्न हो गये।

मेरी कई पुस्तकों में यह प्रसंग छपा है। सर्वज्ञ बनने वालों की आर्य समाज में भी कमी नहीं। हमें जीव होने पर ही सन्तोष है। परोपकारी में भूल सुधार के लिए हम सदा तत्पर रहते हैं। प्रूफ रीडर पर भी कभी दोष नहीं थोपा। दोष स्वीकार करने का भी अलौकिक आनन्द होता है।

काशी से कहा गया:- काशी से प्रतिष्ठित आर्य भाई श्री अशोक त्रिपाठी जी ने परोपकारी द्वारा पूर्वजों का नामोल्लेख करके उनके मौलिक तर्कों व युक्तियों को प्रचारित करने के लिए छेड़े गये अभियान की भूरि-भूरि प्रशंसा करते हुए बधाई दी। उन्होंने कहा-मैंने आपको बहुत सुना व पढ़ा है। आप सदा पं. धर्मदेव जी, स्वामी सत्यप्रकाश जी, पूज्य देहलवी जी का नाम लेकर उनके तर्क देते हैं। सेवक ने उन्हें कहा कि आप परोपकारी में श्री सत्यजित् जी, श्री सोमदेव जी, श्री सत्येन्द्र जी और मान्य धर्मवीर जी-सबके सैद्धान्तिक लेखों की ऐसी ही रंगत पायेंगे।

दक्षिण से दो शुभ समाचार:- हैदराबाद से एक के पश्चात् दूसरा शुभ समाचार पाकर हार्दिक आनन्द हुआ। पं. नरेन्द्र जी के मानस पुत्र श्री पं. प्रियदत्त जी ने चामधेड़ा में सेवक को यह शुभ सूचना दी कि दैनिक मिलाप के द्वारा श्री युद्धवीर फाऊंडेशन मान्य आर्य विद्वान् कवि डॉ. विजयवीर जी की संस्कृत हिन्दी सेवाओं के लिये उनका बहुत बड़ा सन्मान कर रहा है। विजयवीर जी वैदिक विद्वान्, संस्कृत हिन्दी के कवि हैं। छोटी आयु में ही उनमें काव्य कला प्रस्फुटित हो गई। आप आचार्य सत्यप्रिय जी हिसार के आरम्भिक काल के शिष्यों में से हैं। पूज्य पं. नरेन्द्र जी के बहुत प्यारे भक्त और मेरे अत्यन्त स्नेही कृपालु हैं। मैं आर्यजगत् के साथ हर्षोल्लास में भागीदार हूँ। उनसे आत्मीयता के कारण तत्काल मुझे सूचना दे दी गई।

दूसरा समाचार भी हैदराबाद से है। भारत के जिस विज्ञान संस्थान में आर्य विद्वान् वैज्ञानिक श्री शत्रुञ्जय कार्यरत हैं, उस संस्थान का सर्वोच्च सन्मान (Award) इस वर्ष परोपकारी के प्रबुद्ध युवा प्रेमी प्रिय पुलकित को दिये जाने की घोषणा हुई है। पुलकित गुजरात के स्वर्गीय आर्य सुधारक विचारक शिवगुण बापू का प्रपौत्र, श्री विश्राम भाई जी का पौत्र है। मुझे यह बताते हुए गौरव होता है कि पुलकित मेरा नाती है। श्री ओम्मुनि जी गत दो-तीन वर्षों से उसे ऋषि मेला पर आमन्त्रित करना चाहते हैं। उनका परिवार तो यदा-कदा आता ही रहता है। पुनः जब कभी विशेष प्रेरणा देंगे तो वह अजमेर आयेगा ही। पूरे आर्य जगत् को तो बधाई देना बनता ही है। श्रीमान् शत्रुञ्जय जी तथा डॉ. बाबूराव जी प्रख्यात् आर्य वैज्ञानिकों को विशेष बधाई जो उसकी प्रेरणा का मुख्य स्रोत हैं।

भले ही पदलोलुप सिद्धान्तहीन कुर्सी प्रेमियों के कारण आर्य समाज के संगठन की क्षति हो रही है तथापि माता आर्य समाज के पास आज भी ऐसे-ऐसे रत्न हैं। स्वामी श्रद्धानन्द जी (महाराष्ट्र) जैसा तपस्वी और डॉ. बाबूराव जी जैसा रत्न महर्षि के मिशन की शोभा हैं।

दस्तावेज सभी की सम्पदा हैं, बिक्री का सौदा नहीं:- गत दिनों एक ठग ने श्री ओम्मुनि जी से, मेरे से व सभा के कई व्यक्तियों से सम्पर्क करके हमें ठगना चाहा। उसने अलभ्य स्रोतों (Documents) को हथियाने के लिये बड़े पापड़ बेले। राहुल जी को भी फँसाना चाहा। राहुल जी ने कहा-जिज्ञासु जी से बात करें। उस भलेमानस

ने मन्त्री जी का नाम लेकर सभा कार्यालय से बहुत कुछ माँगा।

हम सबने अपने-अपने ढंग से कहा दिया कि सब स्रोत सभा की सम्पदा हैं। प्रधान जी, मन्त्री जी भी दिखा तो सकते हैं। इनका छाया चित्र बिक्री के, व्यापार के लिये नहीं है। मैंने सत्तर वर्ष तक निरन्तर खोज कर करके जो बौद्धिक सम्पदा क्रय की, इकट्ठी की, उसे एक भावना के साथ सभा को सौंपे जा रहा हूँ। मैं भी बेच सकता था। राहुल कुशल व्यवसायी कुल में जन्मा है। राहुल व उसके साथी पर्याप्त धन फूँककर जो कुछ ला रहे हैं, वह सब कुछ उदार हृदय से भक्ति भाव से ऋषि मिशन के लिए आगे पहुँचा रहे हैं। हमारे लिये यह एक यज्ञ है।

अभी दिल्ली के एक माननीय आर्य पुरुष ने मुझे बहुत पुराने पत्र से एक समाचार का छाया चित्र देने को कहा। मैंने विनम्रता से कहा-यह पत्रिका और यह अंक अभी अजमेर नहीं पहुँचा, परन्तु इसका छाया चित्र नहीं मिलेगा। अजमेर आकर देख लेना। वह बुद्धिमान् भाई मेरे कथन का महत्त्व समझ गये।

जिगर का खून दे देकर ये पौधे हमने पाले हैं:- एक बार माननीय डॉ. धर्मवीर जी ने आज पर्यन्त आर्यों पर चलाये गये अभियोगों का इतिहास क्रमश: प्रकाशित करने की घोषणा की थी। मैंने कई आर्य विद्वानों पर चलाये गये अभियोगों पर कई अंकों में लिखा था। किसी समाज ने, किसी सज्जन ने परोपकारी को कोई जानकारी न भेजी। मैंने भी लिखना बन्द कर दिया। आर्यों पर सर्वाधिक अभियोग मिर्जाइयों ने चलाये। किस-किस की चर्चा करूँ ? मैंने दसवीं की परीक्षा दी थी या कॉलेज में प्रवेश पाया ही था कि रब्बे कादियाँ जी (इन्द्रजीत जी के कुल के एक निडर अद्भुत वक्ता) ने गुरुद्वारा गोबिन्दगढ़ (मन्दिर के साथ) कादियाँ में मिर्जाइयों का उत्तर देने के लिए एक जलसा किया था। रब जी का और मेरा भाषण हुआ। श्री राम शरण प्रेमी आर्य कवि की पुरजोश कवितायें हुईं। मिर्जाइयों ने धर्म निरपेक्षता की आड़ में हम तीनों को जेल भिजवाना चाहा। रब जी ने सूझबूझ से डी.सी. के सामने हम तीनों का पक्ष रखा। हमारा कुछ न बिगाड़ा जा सका। मेरे पिता जी को पता ही न चला कि मेरे ऊपर केस बनने वाला है।

कादियाँ में ऐसी घटनायें प्राय: घटती रही हैं। सन् १९९६ में स्वामी सम्पूर्णानन्द जी ने पं. लेखराम जी के बलिदान पर मेरा खोजपूर्ण ओजस्वी भाषण करवाया। तब पुलिस सक्रिय हो गई। मुझे कम से कम दो वर्ष तक जेल में भिजवाने पर मिर्जाई तुले बैठे थे। स्वामी सम्पूर्णानन्द जी मेरे साथ जेल जाने को तैयार बैठे थे। हम फिर बच गये।

पं. निरञ्जनदेव जी पर और रब जी पर इसी विषय का कांग्रेस ने तुष्टीकरण व वोट बैंक के लिये लम्बा केस चलाकर दोनों को बहुत यातनायें दीं। हमने वे भी हँसते-हँसते सहीं। पं. शान्तिप्रकाश जी पर पं. लेखराम जी के बलिदान विषयक इल्हामों की शव परीक्षा पर ऐतिहासिक केस चला था। श्री महाशय कृष्ण सरीखे नेता पण्डित जी की पेशी पर लाहौर से गुरदासपुर आते रहे। स्वामी स्वतन्त्रानन्द जी और दीवान बद्रीदास के कुशल नेतृत्व में आर्य समाज एक बार फिर अग्नि परीक्षा में उत्तीर्ण हुआ। पं. शान्तिप्रकाश भट्टी से कुन्दन बनकर निकले। हाईकोर्ट से पण्डित जी बड़ी शान से केस जीत गये।

हाथों में हथकड़ियाँ, पाँवों में बेड़ियाँ डाली गईं। टाँगों में घावों के कारण लहू बह रहा था, तब जेल से बाहर आने पर झंग (पश्चिमी पंजाब) में रामचन्द्र जी (स्वामी सर्वानन्द जी) ने आपकी पट्टी की। किस-किस केस व अग्नि-परीक्षा का उल्लेख किया जावे? हमने लहू देकर वाटिका को सींचा है। रक्तरंजित इतिहास रचा है।

अब इतिहास प्रदूषणकार एक उठता है, वह मिर्जाइयों की बोली बोलकर लिखता है कि मिर्जाई मत का खण्डन पं. लेखराम का उद्देश्य था, जबकि पं. लेखराम जी ने सदा आत्म रक्षा में ही लिखा। यह कोर्टों व सरकार ने माना। ईद के दिन पण्डित जी की हत्या कतई नहीं हुई। यह मिर्जाई प्रचार सर्वथा मिथ्या है। एक मिर्जाई चैनल भी सुना है कि विदेश से यही प्रचार करता चला आ रहा है। उ.प्र. के कई युवकों ने उनके दुष्प्रचार का परोपकारी में उत्तर देने के लिए उनकी सामग्री भेजी है। **उनके स्वर में स्वर मिलाकर 'आर्य सन्देश' के २८ मार्च के अंक में ईद के दिन पण्डित जी की हत्या होना लिखा है।**

पं. देवप्रकाश जी, पं. शान्तिप्रकाशजी से लेकर राजेन्द्र जिज्ञासु तक हमारे विद्वानों ने इस विषय पर सहस्रों पृष्ठ

लिखे हैं। आर्य सन्देश ने तो यह अनर्गल लेख देकर हम सबकी हत्या करके रख दी है। हम अपनी व्यथा किसे सुनावें? हम जानते हैं, ये लोग आर्य समाज पर दया नहीं करेंगे। हम फिर भी यही कहेंगे कि कोई इन्हें समझावे। **जिगर का खून दे दे कर ये पौधे हमने पाले हैं।**

रही उत्तर देने की बात। इस विषय पर मेरा छः सौ पृष्ठों का ग्रन्थ आर्यवीरों ने छपने को दे दिया है। इसमें उद्धृत पुस्तकों, पत्रिकाओं के सैंकड़ों प्रमाण पढ़कर विरोधी भी दंग रह जायेंगे। इस ग्रन्थ के प्रसार में पं. लेखराम जी विषयक सब मिथ्या विषैले लेखों का उत्तर मिल जायेगा। यह अपने विषय से सम्बन्धित अब तक का सबसे बड़ा और प्रमाणों से परिपूर्ण ग्रन्थ है।

''**मेरे लिये सन्ध्योपासना करिये?**'' एक विचित्र प्रश्न उ.प्र. से किसी ने किया है-''यदि मैं किसी से अपने लिये सन्ध्योपासना गायत्री जप या यज्ञ कराऊँ तो इसका पुण्य लाभ मुझे क्यों न मिलेगा?''

ऐसे भाई यह बतायें कि आपके लिये व्यायाम कोई करे तो लाभ किसको मिलेगा? रोगी की बजाय उसका कोई भाई बन्धु औषधि का सेवन करे तो क्या रोगी रोगमुक्त होगा? एक पौराणिक ने हैदराबाद सत्याग्रह में जाने वाले एक आर्य को बड़ी श्रद्धा से कहा, ''भाई! आप जेल में मेरे लिए गायत्री जप करते रहना। मैं चार रुपये सैंकड़ा के दर से तेरे घर पर भुगतान करता रहूँगा। मुझे तू यह सूचना पहुँचा देना कि कितना जप मेरे लिये किया है? यह घटना श्री मेहता जैमिनि जी को स्वयं उस आर्य ने अम्बाला में सुनाई। श्री ओमप्रकाश वर्मा जी को भी इसका ज्ञान होगा। उस आर्य ने सत्याग्रह में भाग लेकर यश पाया और गायत्री जप से कमाई भी कर ली। उसे पता था कि जप से गायत्री क्रय करने वाले को कोई लाभ नहीं होगा। अब उदूसरों के लिए यज्ञ करने वाले संगठन भी मैदान में आ गए हैं और लुभावनी घोषणाएँ कर रहे हैं। पाप पुण्य, धर्म-कर्म के लेन-देन का व्यापार तो याज्ञिकों पाठियों के लिए बहुत अच्छा है, परन्तु है तो वेद विरुद्ध।''

वेद का आदेश उपदेश है:-''**स्वयं यजस्व स्वयं जुषस्व।**''

स्वयं कर्म कर और स्वयं फल चख। यही कल्याणी शिक्षा है।

बड़ों की सेवा के प्रेरक प्रसंगः- एक जन्मजात दु:खिया के दुष्प्रचार के प्रतिवाद के लिए हमने पूज्य विद्वान् महात्माओं की आर्यों द्वारा सेवा के कई दृष्टान्त देकर लिखा था कि आर्य समाज ने महात्मा आनन्द स्वामी जी आदि को अन्तिम वेला में फेंक दिया, ये सब घृणित व मिथ्या प्रचार हैं। ऐसे प्रचारकों ने आप तो जीवन भर कभी किसी की सेवा की नहीं, सस्ते उपदेश देते हैं।

महात्मा आनन्द भिक्षु जी के पुत्र जैमिनि जी ने भक्तों से घिरे अपने पिताजी को अन्तिम दिनों में सेवा का अवसर देने का अनुरोध किया। मेरे सामने महात्मा जी पर दबाव बनाया। सेवा उनकी हो ही रही थी। मैंने ऐसे किसी व्यक्ति को पूज्य मीमांसक जी और आचार्य उदयवीर जी के अन्तिम दिनों में उनके पास फटकते नहीं देखा था। कुछ लोग पं. युधिष्ठिर जी मीमांसक से श्री धर्मवीर जी, विरजानन्द जी आदि विद्वानों के मतभेद को उछालते रहे। मीमांसक जी ने अपनी अमूल्य बौद्धिक सम्पदा तो धर्मवीर जी को ही सौंपी। क्यों? मीमांसक जी के निधन पर केवल परोपकारिणी सभा से जुड़े विद्वान् ही रेवली पहुँचे। और सभायें भी पहुँचती तो अच्छा होता। मान्य विरजानन्द जी, श्रीमती ज्योत्स्ना ने पहुँचकर आर्य समाज की शोभा बढ़ाई। आचार्य सत्यानन्द जी वेदवागीश तथा यह सेवक भी वहाँ था। पहले भी पता करने कई बार गये। पूज्यों को छोड़ने व फेंकने का प्रचार कोरी शरारत है।

प्रो. सतीश धवन कौन थे?:- हरिकोटा से वैज्ञानिक उपलब्धियों के समाचार प्रो. सतीश धवन प्रख्यात भारतीय वैज्ञानिक के नाम से सुशोभित केन्द्र से प्रचारित होते रहते हैं। अन्य-अन्य संस्थायें तो यह नहीं बताना चाहेंगी कि श्री सतीश धवन कौन थे? आर्यो प्रचार में पिछड़ते न जाओ। देश को स्वाभिमान से बताओ कि भारत का यह यशस्वी वैज्ञानिक आर्यसमाजी था। आप प्रसिद्ध आर्य नेता व विद्वान् श्री ठाकुरदत्त जी धवन (शिष्य पं. गुरुदत्त विद्यार्थी) के सगे पौत्र थे। उनके पौत्र ही नहीं, स्वयं भी आर्य थे। मेरे पाठक व कृपालु थे। आपने मुझे सन्देश भेजा कि मैं उनके पितामह का जीवन चरित्र लिख दूँ। मैंने उनके दादाजी पर

शेष भाग पृष्ठ संख्या ३७ पर .....

(परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित)

योग–साधना शिविर

दिनांक : १२ से १९ अक्टूबर, २०१६

आज समाज के अनेक क्षेत्रों में अनेक प्रकार से लोग साधना के लिए प्रयासरत हो रहे हैं। अनेक प्रशिक्षकों द्वारा इस विषयक ज्ञान–विज्ञान भी प्रदान किया जा रहा है। फिर भी साधकों को साधना की सन्तुष्टिदायक स्थिति प्राप्त नहीं हो पा रही है। इसका कारण है कि साधना के विषय **साध्य, साधन, साधक व अन्य साधकों–बाधकों** के ज्ञान का वैदिक परम्परा से दूर होना। इस योग–साधना शिविर में इन्हीं विषयों का वैदिक–दर्शनों के द्वारा ज्ञान करवाया जायेगा, उससे सम्बन्धित जिज्ञासाओं का समाधान व आत्मनिरीक्षण के द्वारा अपनी उन्नति का मापदण्ड बताया जायेगा। यह शिविर अवश्य ही आपकी साधना की उन्नति में विशेष साधन बनेगा, जिससे कि मानव जीवन के मुख्य व चरम लक्ष्य की प्राप्ति उत्तरोत्तर काल में आप अपने निकट अनुभव करने लगेंगे।

प्रार्थियों हेतु नियम व अनुशासन

१. प्रत्येक प्रार्थी के लिए पूर्ण मौन अनिवार्य होगा।
२. शिविर के काल में किसी साधक के द्वारा नियम व अनुशासन भंग करने पर उसे शिविर के मध्य में ही शिविर छोड़ने के लिए बाध्य किया जा सकता है।
३. पूरे शिविर में साधक के द्वारा किसी भी माध्यम से बाह्य–सम्पर्क करना निषिद्ध रहेगा।
४. शिविर काल में किसी भी साधक को ऋषि उद्यान परिसर से बाहर जाने की अनुमति नहीं होगी।
५. साधकों की मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति ऋषि–उद्यान परिसर में ही की जायेगी।
६. बाह्य–वृत्ति उत्पादक साधनों जैसे समाचार–पत्र पढ़ना, आकाशवाणी श्रवण व दूरदर्शन देखना, पर पूर्ण प्रतिबन्ध रहेगा।
७. किसी प्रकार का शारीरिक रोग यथा सर्दी, खाँसी, जुकाम अथवा अन्य कोई ध्वनि उत्पादक रोग वाले को प्रवेश नहीं दिया जायेगा।
८. बच्चों को साथ लाये जाने पर प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जाएगा।
९. किसी भी मादक द्रव्य, चाय–कॉफी आदि का सेवन निषिद्ध होगा।
१०. शिविर के प्रारम्भ दिन से लेकर समापन–सत्र पर्यन्त पूर्ण रूप से शिविर में भाग लेना अनिवार्य होगा।
११. नियम व अनुशासन के पालन को आवेदन में ही लिखित स्वीकार करना होगा।

उपरिलिखित किसी भी नियम व अनुशासन का पालन करने में असमर्थ व अयोग्य प्रार्थी को शिविर में प्रवेश नहीं दिया जायेगा।

प्रार्थियों के लिए सूचनाएँ–मन्त्री परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर (राज.) से संपर्क कर शिविर से पूर्व शुल्क जमा करवा कर अपने नाम का पंजीयन करा लें। शिविर में माता–बहिनें भी भाग ले सकती हैं। पुरुषों एवं महिलाओं के आवास की सामूहिक व्यवस्था पृथक्–पृथक् की जाती है। पृथक् कक्ष चाहने वालों को अतिरिक्त शुल्क १००० से २००० रु. देय होता है। पृथक् कक्ष की व्यवस्था पूर्व सूचना व उपलब्धता के अनुसार की जाती है।

ऋषि उद्यान में दरी, गद्दे, तकिए एवं बर्तन उपलब्ध हैं शेष दैनिक उपयोग की वस्तुएँ यथा मंजन, ब्रश, साबुन, तेल, दवाएँ, बिछाने-ओढ़ने की चादरें, लिखने के लिए संचिका (नोटबुक), लेखनी, करदीप (टार्च) आदि को साधक अपने साथ लाएँ। वस्त्र सादगी एवं शिष्टाचार के अनुकूल हों, आभूषणों एवं सुगन्धित द्रव्यों का उपयोग न हो। आपके पास योगदर्शन हो तो साथ लाएँ अन्यथा यहाँ भी क्रय किया जा सकता है। सतर्कता की दृष्टि से कीमती वस्तुएँ साथ न लायें। यदि आपको कोई संक्रामक रोग, तेज खांसी, दमा, मिर्गी आदि मानसिक रोग, वायु विकार या अन्य गंभीर रोग हो, तो कृपया शिविर में आना स्थगित रखें। यदि अपने कार्य स्वयं न कर सकते हों तो सहायक साथ में लायें। अजमेर या निकटवर्ती स्थल (पुष्कर) देखना चाहें, तो शिविर से पूर्व या पश्चात् अतिरिक्त समय निकाल कर आयें। लौटने का रेल-आरक्षण शिविर में आने से पूर्व करवा लें। अजमेर पहुँचने की सूचना घर पर देनी हो तो शिविर स्थल में प्रवेश से पहले दे देवें। खाने पीने की वस्तुएँ साथ न लावें।

यह शिविर परोपकारिणी सभा, अजमेर के सौजन्य से आयोजित किया जा रहा है। शिविर शुल्क १००० रु. मात्र जमा करना होगा। शिविर में भाग लेने वालों को शिविर के प्रारंभ दिनांक को सायं चार बजे तक शिविर स्थल ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर में पहुँच जाना आवश्यक है क्योंकि इसी दिन शाम को शिविर के अनुशासन एवं विभिन्न व्यवस्थाओं संबन्धी महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ दी जाएँगी। शिविर का समापन अन्तिम दिन दोपहर एक बजे तक होगा। शिविर समाप्ति से पूर्व जाने की अनुमति नहीं दी जायेगी।

इस शिविर में स्वामी विवेकानन्द जी परिव्राजक निदेशक दर्शन, योग महाविद्यालय, रोजड़, गुजरात का सानिध्य प्राप्त होगा।

शिविर से आपका जीवन श्रेष्ठतर व पवित्रतर बने, इन्हीं शुभकामनाओं के साथ।

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, केसरगंज, अजमेर दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

: मार्ग :

ऋषि उद्यान शिविर स्थल पर पहुंचने के लिए फॉयसागर की ओर जाने वाली सिटी बस या ऑटो-रिक्शा, रेल्वे स्टेशन व बस स्टेण्ड से (वाया-आगरा गेट/फव्वारा चौराहा) सर्वदा सुलभ रहते हैं।

email:psabhaa@gmail.com

-संयोजक

लेखकों से निवेदन

परोपकारी में उन लेखों, कविताओं, रचनाओं को दिया जाता है, जो **मौलिक व अप्रकाशित** हों। अत: सभी लेखकों से निवेदन है कि वे अपनी उन्हीं रचनाओं को भेजें जो मौलिक व अप्रकाशित हों।

अनेक लेखक मौलिक व अप्रकाशित रचना तो भेजते हैं, किन्तु उसे एक साथ **अनेक पत्रिकाओं को भेजते हैं।** अत: लेखकों से यह भी निवेदन है कि वे कृपया परोपकारी को वे ही रचना भेजें, जो अन्य पत्रिकाओं के लिए न भेजी हो। परोपकारी में छपने के बाद यदि अन्यत्र भेजना चाहें तो यह उनकी इच्छा पर निर्भर करता है।

कृपया लेख के अन्त में अपना **पूरा पता व चल-दूरभाष संख्या अवश्य लिखें।** लेख के स्वीकृत-अस्वीकृत होने की सूचना चल-दूरभाष पर संक्षिप्त संदेश द्वारा प्रेषित कर दी जायेगी। **परोपकारिणी सभा द्वारा रचनाओं के लिए किसी प्रकार का भुगतान नहीं किया जाता है।**

रचयिता अपनी रचना की एक प्रति कृपया अपने पास रखकर भेजें, क्योंकि **अस्वीकृत रचनायें डाक द्वारा लौटाई नहीं जाती हैं।** स्वीकृत रचना परोपकारी के किसी आगामी अङ्क में देखी जा सकती है। रचना के प्रकाशन में छ: माह या अधिक समय भी लग सकता है, अत: कृपया तब तक रचना को अन्यत्र न भेजें।

-संपादक

15 Minute Dhyan/Meditation Practice

- Sudhir Anand

At the request of many persons in India to advise them a simple and short meditation practice which a common person who is busy in daily life could still practice every day, a goshthi/council of Paropkarni Sabha. Ajmer India met several times in 2012-2013, and developed a 15 Minute Dhyan i.e. Meditation Practice. **The council included many learned Vedic scholars and yoga practitioners including Professor Dharmvir Ji, Acharya Gyaneshwar Arya Ji and Acharya Satya Jit Ji. This practice has been successfully tested with several groups of yoga aspirants and is being described below for use of general public. The original recommendations were published in Hindi in Paropkari (the official fortnightly publication of Paropkarni Sabha). This is an English translation of the recommendations with minor modifications so that they are understandable to readers in the West who are not familiar with many Sanskrit words and meditation practices described in the original.**

1. Sthir Aasana: Steady Posture/Position with Relaxed Body and Calm Mind **(One minute):**

The word Aasana refers to those postures, or positions, of the body, where the aspirant while meditating can sit comfortably and steadily for 15 minutes without changing positions. **The place for meditation should be, as much as possible, quiet and peaceful whether it is inside the house or outside.** The most commonly recommended aasana is Sukhaasana, the aasana of comfort. **The aspirant sits cross-legged in a relaxed manner without attention to the position of the feet (either facing up or down) with the head. Neck and spine in as straight a line as possible consistent with comfort. The hands either rest upon one another in the lap or over the respective knees with upturned half-opened grasp. The eyes are closed and mind is focused towards the midline just above the root of the nose between the two eye brows, a place anatomically known as the glabella. Most beginners and many advanced meditation practitioners use this as the only aasana. Variations on this aasana are the Padamaasana (lotus position), Siddhaasana and Swastiaasana. For those who have difficulty in sitting cross-legged, the kneeling posture (vajaraasana), or the posture of complete relaxation (Poorn Vishramaasana**[1]**) which is executed by lying down, may be useful. Whatever aasana is selected, it should never be forced or cause strain or discomfort, but rather be so natural that the aspirant would gradually become completely unaware of the posture he or she is in.** The next step is to make whole body relaxed and devoid of tension or rigidity in any muscles so that there will be no discomfort or bodily distractions during the meditation practice. Following this, the aspirant must make all effort to calm his/her mind away from its usual thinking activities and distractions, and make it peaceful. **This will further steady the mind and body in meditation practice.**

2. Om and Gayatri Mantra Chanting: Each One Time **(One minute):**

One begins this step by slowly chanting God's name as Om, **prolonged as** Ooo....mmm...(**M is hummed) while contemplating on Om's meaning which is: Dear God,** You are Sarva Rakshak i.e. our Protector and Nurturer. **Next, to help focus the mind, the aspirant** slowly chants/recites Gayatri

Mantra **in medium or low voice, or silently in the mind while contemplating on its meaning. The words are:** Om bhdur bhuvah swah. Tatsavitur varenyam bhargo devasya dhimahi. Dhiyo yo nah prachodyat **(Rig Veda 3: 63: 20, Yajur Veda 3: 35 and Saam Veda 6: 3: 10: 1). Its meaning is as follows:**

(Om) **Dear God You are,** (bhur) **the Giver and Sustainer of all life,** (bhuvah) **the Remover of all sorrows,** (swah) **the Bestower of bliss,** (Tat savitur) **The Creator of the Universe and the One who always inspires us,** (varenyam) **You alone are worthy of worship,** (bhargo) **You are the Source of Knowledge which enlightens us and burns away all our evil desires** (devasya) **You are the Divine Being, Supreme Giver to all of us,** (dhimahi) **we meditate on You,** (Yo) **Dear God, You who have all these attributes,** (prachodyat) **please inspire,** (nah) **our,** (dhiyo) **intellect so that we move forward in life, we may be able to tell right from wrong and always follow the right path.**

3. Sankalp: Firm Intention and Resolve **(One minute):**

Dear God, to get rid of my various dukhs[2] **i.e. sufferings and unhappiness as well as to obtain bliss in my life,** I have come to Your shelter with full faith and firm resolve and I will put in my best effort to concentrate my mind and meditate on You. **Dear God, please bless me and help me succeed in my effort.**

4. Deergh Shwasana: Deep Breathing **(One minute):**

One carries out this step by rhythmically taking in a deep breath (inspiration) slowly and then deeply exhaling it (expiration) slowly, This is repeated a few times for a total of one minute. During this step, the mind should be focused on deep slow rhythmic breathing and not on any other external distractions. **There is no holding of any breath during this step.**

5. Bahaya Pranayama[3]: Deep Exhalation with Chanting of Om **(Three minutes): This step is carried out by** exhaling deeply with force as one continuous breath and then holding the breath in exhalation **(expiration). However, this pranayama should be performed with a gentle force and should not be associated with any jerk(s) or breaks during expiration. When one starts to feel discomfort in continuing to hold the breath in exhalation, then one should slowly breathe in air again without any jerk.** Throughout this pranayama, in the mind one should silently chant (japa) God's name as Om. Subsequent to this one cycle of pranayam one should breathe in and out, two or three regular (i.e. average) comfortable breaths. **Then, restart a new exhalation pranayam cycle and complete two more such cycles (a total of three).** Subsequently one should sit quietly, breathe gently in and out, and silently chant Om in the mind until the three minutes are complete. **Before starting this step it is advisable to apply** mool bandh **by gently pulling in/up one's pelvic/anal/rectal muscles as one does when one has to hold stool/bowel movement from coming out when a bathroom is not conveniently available such as when travelling. Also, one should gently pull in lower abdominal (below navel/belly button) muscles towards the spine and sit upright with a straight spine.**

6. Pratyahara: Withdrawal from the stimulation of the senses **(One minute):**

The word pratyahara means the withdrawal/removal of the various senses e.g. eyesight, hearing, smell etc. away from their normal tendency to explore or be stimulated by everything that surrounds them that is

either new or exciting. During this step, the aspirant keeps his/her body relaxed and in the mind meditates solely on God to keep the mind away from usual worldly detractions. The aspirant acknowledges that dear God, You have no shape or form, yet You are Omnipresent inside and outside me as my closest companion. You watch over all my deeds, nothing I do, good or bad, is hidden from You and You will give me appropriate rewards or punishment based on my deeds. Moreover, You are the Ultimate Source of true knowledge and bliss as well as You will shower me with both of these as I consciously get closer to You through meditation.

During this step, if a loud sound, strong smell etc. come and try to distract the mind, one must make all effort to redirect the mind towards meditation of God. Do not let extraneous things distract the mind but stay focused on God. Gradually as one continues to make all effort to concentrate and meditate on God, the desire for external stimulation of senses and internal distractions of the mind become less and less and the mind gradually becomes calm.

The purpose of steps 1 to 6 is to steady the mind and various senses e.g. eyesight, hearing, smell etc. away from their usual worldly distractions, and more and more towards meditation of God so that the soul may obtain bliss and internal peace from God.

7. Dharana: Resolute Concentration of Mind **(One minute):**

This step of meditation begins with the focus and concentration of mind at one particular area of our physical body **such as the glabella (see above Section 1), heart, navel, throat, or the top of the head and while keeping the mind focused, steady and not letting it get distracted, one should proceed to the next step.**

8. Dhyana: Meditation of Om (Pranava Japa) and contemplation on God's Attributes as Omnipresent, Universal Protector and Perfection (i.e. No Deficiencies) **(Five Minutes): This step begins with a** silent mental Om Japa with deep devotion and contemplation that Dear God, You are Niraakaar i.e. without any shape or form yet You are Omnipresent. **Whatever beliefs I may have had about You in the past, such as that You have a physical body like a human being or You exist only in the heaven were wrong. From now on,** I firmly accept You correctly as being Niraakaar (i.e. without any shape or form) and Omnipresent **(also see Section 6 above). Other attributes of God one should meditate on and accept are that** God is Sarva Rakshak i.e. Our Universal Protector, and Nirvikaar i.e. God has no deficiencies and is Perfection. **At one time, one should concentrate and meditate on only one attribute of God and not all of them together.**

One should meditate and contemplate on God with a deep devotion, concentration, and seriousness as well as experience that my soul is immersed in God, and God with all of His attributes is present both inside me and outside me. **God is** Omnipresent, Niraakaar and Satchit-anand-swaroop **(Personification of Eternal Existence, Supreme Consciousness and Supreme Bliss). Also,** one should make a resolution and pray, "Dear God, I am in Your company and I will make all effort in my daily life, so that just as You are Nirvikaar i.e. You have no deficiencies and are Perfection, I will also steadily get rid of my bad and sinful thoughts, words, and deeds and replace them with good and generous (nishkaam) thoughts, words and deeds". **While meditating one should progressively start to feel inside one's soul increasing pureness, peace, and harmony.**

9. Samarpan i.e. Surrender to and Thanking God **(One minute):**

One completes the meditation by thanking God with the following prayer: Dear God, You are the Ocean of Kindness, with your grace and blessings may our prayer be successful and we soon achieve Dharma, Artha **(material wealth), Kama (fulfillment of desires) and** Moksha **(bliss). After this for a few moments, one's mind should be completely still in a thankful repose. One should end the meditation by thanking God by saying Om (one time) shanty (peace and harmony) shanty, shanty (three times)**

Reference remark

1. Translator's Note: This posture is recommended only for very frail or bed-ridden persons who cannot sit for 15 minutes and may use frailty as an excuse for not meditating. In this position, one is more likely to doze off or fall asleep. While dozing off may be relaxing and refreshing for the body, it has nothing to do with meditation.

2. There are three types of dukhs**: adhyatmic (personal physical, mental and spiritual) e.g. poverty, illness, depression, fears, emptiness in life etc.; adhibhoutic (inter-personal), pertaining to relationships between human beings, spouses, children, society, nation e.g. illness of a child, divorce, quarrelling neighbors, theft, robbery, war etc.: or it may be adhidevic, referring to the physical forces of nature e.g. drought, too much rain, earthquake etc.**

3. The word pranayama **is usually translated to mean the controlled taking in and expelling of breath for decreasing the agitation of the mind so that one can concentrate one's mind and meditate better. At a deeper level** prana **refers to the subtle life force, the vital energy of the body. There are several types of pranayama, the best pranayama for meditation is considered to be** bahaya **i.e. Deep exhalation and holding the breath at the end of exhalation.**

4. This relationship is sometimes compared to that of a small cotton ball (soul) soaked or immersed in a large bucket or ocean of water (God), where water exists both inside the cotton ball and outside it. It must, however, be remembered that God and soul are not physical objects but pure consciousness and have no shape, form or dimensions and cannot be measured like physical objects.

- L.A., U.S.A.

परोपकारी के सुधी पाठकों के लिए आवश्यक सूचना

परोपकारी शुल्क भेजते समय नये या पुराने ग्राहक के उल्लेख के साथ-साथ ग्राहक संख्या अवश्य लिखें अन्यथा व्यक्ति के नाम से शुल्क जमा करने में कठिनाई आती है। फलस्वरूप पाठकों के पास पत्रिका नहीं पहुँच पाती है। ऐसे ही अपना नाम हटवाते व जुड़वाते समय दूरभाष संख्या सहित अपना पूरा विवरण लिखकर भेजें। ई.एम.ओ. के द्वारा शुल्क भेजने वाले ग्राहक भी सन्देश के साथ अपनी ग्राहक संख्या सहित पूरा विवरण भेजें। परोपकारिणी सभा आप सभी का सहयोग चाहती है।

विद्वान् स्त्रियों को योग्य है कि अच्छी परीक्षा किए हुए पदार्थ को जैसे आप खायें वैसे ही अपने पति को भी खिलावें कि जिससे बुद्धि, बल और विद्या की वृद्धि हो और धनादि पदार्थों को भी बढ़ाती रहे।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.४२

वैदिक पुस्तकालय अजमेर
द्वारा प्रकाशित नये संस्करण

१. महर्षि दयानन्द का पत्र-व्यवहार (२ भाग में)

मूल्य - रु. ८००/- पृष्ठ संख्या - प्रथम व द्वितीय भाग-६९६+६९६

ऐतिहासिक महत्त्व का ग्रन्थ है। इस संस्करण की यह विशेषता है कि पत्र और उसका उत्तर साथ-साथ दिये गए हैं। आर्य जाति और आर्यावर्त्त के उत्थान की महती आकांक्षा ऋषिवर के पत्रों में स्पष्ट झलकती है। माननीय डॉ. वेदपाल जी द्वारा सम्पादित यह ग्रन्थ पठनीय एवं संग्रहणीय है। साज-सज्जा और मुद्रण भी उत्तम है। समाप्त होने से पहले- पहले क्रय कर लेवें तो अच्छा रहेगा।

२. 'नवयुग की आहट',महर्षि दयानन्द सरस्वती का जीवन-चरितः

मूल्य - रु. ६०/- पृष्ठ संख्या- १९२

१०० से अधिक उपशीर्षकों एवं १३ अध्यायों में लिखा गया ऋषि का यह अनुपम जीवन चरित है। लेखक हैं- ऋषि मिशन के दीवाने, आर्यजाति के प्रहरी, दिल जले आर्य साहित्यकार प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु। पुस्तक में आप जान पायेंगे कि ऋषि का पाखण्ड-खण्डन, सामाजिक दोषों के निराकरण, स्त्री-शिक्षा, अछूतोद्धार, वेदोद्धार, सामाजिक पुनर्जागरण, राष्ट्र-उद्धार के क्षेत्र में क्या योगदान है तथा उनके समकालीन और परवर्ती महापुरुष उनके विषय में क्या कहते हैं।

३. इतिहास की साक्षीः लेखक- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

मूल्य - रु. ५०/- पृष्ठ संख्या - ९६

९६ पृष्ठों की इस पुस्तक में विद्वान् लेखक ने महर्षि दयानन्द सरस्वती एवं पं. श्रद्धाराम फिल्लौरी के सम्बन्ध में तथ्यात्मक जानकारी दी है। श्रद्धाराम फिल्लौरी के हाथ के लिखे पत्र की एवं अन्य ऐतिहासिक दस्तावेजों की फोटो कापियाँ इसमें दी हैं, जो अन्यथा दुर्लभ हैं।

४. आत्म कथा- महर्षि दयानन्द सरस्वती

मूल्य - रु. १५/- पृष्ठ संख्या - ४८

५. जिज्ञासा-विमर्श लेखक-आचार्य सोमदेव

मूल्य - रु. १००/- पृष्ठ संख्या - २५८

आध्यात्मिक क्षेत्र में सूक्ष्म दार्शनिक सिद्धान्तों के सम्बन्ध में उठने वाले प्रश्नों का शास्त्रीय एवं तर्क-सम्मत समाधान इस ग्रन्थ में किया गया है। आत्मा, परमात्मा, मोक्ष आदि विषयों से सम्बन्धित प्रश्न बहुत जटिल होते हैं। विद्वान् लेखक ने अपने विस्तृत स्वाध्याय एवं ऊहा के बल पर ऐसे सभी प्रकरणों में सम्यक् समाधान प्रस्तुत किया है। पुस्तक पठनीय एवं संग्रहणीय है। कालान्तर में सन्दर्भ हेतु काम आने वाला ग्रन्थ सिद्ध होगी, क्योंकि अधिकांश समाधान महर्षि कृत ग्रन्थों, वेदों एवं वेदानुकूल आर्ष ग्रन्थों के आधार पर किये गए हैं। वैदिक सिद्धान्तों की पुष्टि की दृष्टि से भी यह एक उपयोगी पुस्तक है।

मेरी अमेरिका यात्रा

– डॉ. धर्मवीर

पिछले अंक का शेष भाग.....

८ अप्रैल को आर्य समाज के पुरोहित पं. वेदश्रमी जी ने घर पर नववर्ष का आयोजन रखा था, यज्ञ के पश्चात् प्रवचन किया। भोजन कर घर लौटे। सायंकाल का कार्यक्रम आर्य समाज के संस्थापक और संरक्षक दीनबन्धु चन्दौरा जी के घर था। आप डॉक्टर हैं, जोधपुर के निवासी थे, बहुत समय से अमेरिका में हैं। डॉ. ओम्प्रकाश अरोड़ा और आप सहपाठी थे, यहाँ फिर मिल गये। मिलकर और लोगों को साथ लेकर आर्य समाज की स्थापना की। पहले समाज घरों पर चलता था, फिर स्थान लेकर भवन भी बना लिया। आपने अनेक लोगों को पुरोहित के रूप में बुलाया, बाद में किसी कारण से विवाद हुआ, वे लोग पृथक् होकर कार्य करने लगे। लाभ यह हुआ कि इस बहाने आर्य समाज के अनेक प्रचारक अटलाण्टा में हो गये। सायंकाल का कार्यक्रम श्री चन्दौरा जी के घर पर हुआ। मैंने कुछ चर्चा की फिर प्रश्नोत्तर व भोजन हुआ, लौटकर विश्राम किया।

९ अप्रैल को विश्रुत जी ने तेलुगु लोगों के साथ कार्यक्रम रखा था। स्थान दूर था, पहुँचने में एक घण्टा लगा। परिवार में कार्यक्रम था ३०-४० स्त्री-पुरुष थे। तेलुगु अनुवाद की व्यवस्था थी। कार्य ११ बजे से चार बजे तक चला, मध्य में भोजन हुआ। इस चर्चा में ईश्वर, वेद, मूर्त्तिपूजा आदि दार्शनिक विषयों पर खूब चर्चा हुई, सबने उत्साह से भाग लिया। पश्चात् घर तक पहुँचा गये। रात्रि आर्य समाज में कार्यक्रम था, एक घण्टा व्याख्यान और आधा घण्टा प्रश्नोत्तर हुए। भोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यहाँ आर्य विद्वान् श्री आशीष जी देहरादून वालों की मौसी जी डॉ. विजय अरोड़ा रहती हैं। वे और उनके पति डॉ. ओम्प्रकाश अरोड़ा आर्य समाज का बहुत कार्य करते हैं, निर्माण के कार्य की देखरेख आप ही करते हैं। बच्चे बाहर रहते हैं। घर में दो ही प्राणी हैं।

१० अप्रैल रविवार था, तैयार होकर प्रातराश किया। श्रीमती अरोड़ा भोजन बनाने में व्यस्त रही, क्योंकि आर्य समाज के भोजन में सब सदस्य कार्य बाँट लेते हैं, किसे क्या-क्या लाना है और डॉ. अरोड़ा समाज पहुँचे, प्रथम यज्ञ हुआ फिर प्रवचन, विषय था 'समय का जीवन पर प्रभाव' पश्चात् प्रश्नोत्तर हुए। भोजन के साथ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के बाद डॉ. चन्दौरा जी के साथ उनके घर गया, आर्य समाज के विषयों पर चर्चा हुई। सायं विश्रुत के घर लौटा। ६ बजे डॉ. वीरदेव बिष्ट आ गये, उनके साथ उनके घर गये, उन्हें अपने मित्रों का आतिथ्य करने में बड़ा आनन्द आता है। वैसा ही स्वभाव उनकी श्रीमती का है। वे परिवार सहित अजमेर की यात्रा कर चुके हैं। डॉ. वीरदेव मूलरूप से नेपाल के नागरिक हैं, वे पूरे नेपाल देश के प्रथम पी-एच.डी. हैं। आपकी शिक्षा का प्रारम्भ गुरुकुल चित्तौड़ से हुआ फिर गुरुकुल झज्जर से व्याकरणाचार्य कर गुरुकुल काँगड़ी विश्वविद्यालय से एम.ए., पी-एच.डी. किया। नेपाल के त्रिभुवन विश्वविद्यालय में प्रोफेसर बने, वहाँ से दक्षिण अफ्रीका गये, जहाँ से डॉ. चन्दौरा के माध्यम से अमेरिका आये। कुछ मतभेद होने पर स्वतन्त्र रूप से वैदिक धर्म के प्रचार में संलग्न हैं। वे बता रहे थे कि उन्होंने अभी तक अमेरिका में ११ हजार कार्यक्रम किये हैं। आपकी दो पुत्रियाँ हैं, बड़ी पुत्री ने अमेरिका में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालय से चिकित्सा में एम.डी. किया है तथा छोटी पुत्र प्रशासनिक सेवा में चयनित होकर फ्रान्स में राजदूत हैं। आपके साथ गुरुकुल की पुरानी स्मृतियाँ दोहराने का अवसर मिला। सायं भ्रमण करते यहाँ का प्रसिद्ध अक्षरधाम मन्दिर देखा, आकर भोजन कर विश्राम किया।

११ अप्रैल प्रातः परिवार के साथ यज्ञ किया। आज उनको इस घर में आये २० वर्ष हो गये थे। भोजन करके विदा ली, विश्रुत के घर गया, वहाँ से चन्दौरा जी के छोटे भाई श्री ब्रह्मदत्त चन्दौरा जी मध्याह्न भोजन के लिये अपने घर ले गये। आप आर्य वीर दल के स्वयं सेवक रहे हैं। घर में दृढ़ शाकाहारी हैं, बच्चे भी शाकाहारी हैं, आपकी पत्नी भोजन की पवित्रता का बहुत ध्यान रखती हैं। सभा के पुराने सहयोगी हैं। भोजन करके विश्रुत के घर लौटा। सायं डॉ. दीनबन्धु चन्दौरा जी के साथ पं. गिरी जी के घर

गये, आपको भी डॉक्टर जी ही अमेरिका लाये थे। कुछ मतभेद होने से पण्डित जी ने स्वतन्त्र कार्य प्रारम्भ किया। आप भी आर्य समाज के प्रचार-प्रसार में तन-मन से लगे हैं। स्वभाव से सरल एवं सहयोगी हैं। आपने अपने घर यज्ञ एवं सत्संग का आयोजन रखा था, पड़ौस में मुस्लिम परिवार रहता है, वह भी प्रेम से सत्संग में भाग लेता है। आज बालकों के लिये प्रवचन किया, भोजन कर विश्रुत के यहाँ लौटकर विश्राम किया।

१२ अप्रैल को प्रस्थान का दिन था, परन्तु सभी बन्धुओं का अपने-अपने घर चलने का आग्रह था, सबकी इच्छा तो पूरी नहीं हो सकती थी। पहले श्रीमती रूपा लूथरा पधारीं, उनके घर प्रातराश करके अटलाण्टा का दर्शनीय स्थल देखा, यह पूरा पर्वत ग्रेनाइट पत्थर का है, इसे राष्ट्रीय स्मारक घोषित किया गया है, इस पर्वत में खोद करके तीन अमेरिकी राष्ट्रपतियों की मूर्त्तियाँ बनाई गई हैं। उद्यान है, वन है, मनोरञ्जन के स्थान हैं। वहाँ से बाजार देखते हुए घर लौटकर भोजन किया, फिर आर्य समाज में पं. वेदश्रमी जी के यहाँ पहुँचा। उनके साथ भारत जी के घर गये, आप भी इञ्जीनियर हैं, स्वतन्त्र रूप से काम करते हैं। विश्रुत विराट के साथ मिलकर अमेरिका से शाकाहार का आन्दोलन चलाते हैं। आधा घण्टा बात करके पं. वेदश्रमी जी के साथ हवाई अड्डे पहुँचा, वहाँ पर पहले विश्रुत धर्मपत्नी स्वाति तथा श्री श्याम चन्दोरा की धर्मपत्नी श्रीमती प्रवीण चन्दौरा सहित उपस्थित थे, घर से सायं का भोजन भी बनाकर साथ लाये थे। छः बजे हवाई अड्डे के अन्दर गया, सुरक्षा जाँच के बाद यान में बैठा, यथा समय चल कर यहाँ के समय अनुसार १० बजे सैनहोजे पहुँच गया। सुयशा भास्कर आ गये थे, वहाँ घर पहुँचकर विश्राम किया।

१३ अप्रैल का समय स्वाध्याय और लेखन कार्य में व्यतीत किया।

१४ अप्रैल प्रातराश करके लॉसएञ्जिलिस के लिये निकले। सुयशा भास्कर ने दो दिन का अवकाश ले लिया था, गाड़ी से मार्ग के दर्शनीय स्थलों का भ्रमण करते घर से निकले, जाने का मार्ग समुद्रतट वाला चुना। १७ मील होते हुए, समुद्र के किनारे पहाड़ी पर बने हुये एक महल के पास पहुँचे, इसको हर्स्ट कैसल कहते हैं। इस महल में बहुत से कक्ष, तरणताल, पुस्तकालय सभी कुछ हैं। यह व्यक्ति समाचार पत्र समूह का संचालक था, जिसने पूरे विश्व से साढ़े बाइस हजार वस्तुओं का संग्रह किया था। यह महल मरते समय वह व्यक्ति सरकार को दे गया था, जो एक संग्रहालय के रूप में देखा जाता है। उसको यह महल बनाने की प्रेरणा माता से प्राप्त हुई थी, जिसके साथ यूरोप की यात्रा पर गया था, उससे उस क्षेत्र की गाय का मांस बहुत प्रसिद्ध है, जिसे कैसल की दुकानों से बेचा जाता है। दो घण्टे तक इन वस्तुओं को देखकर आगे चले। इस महल से सब ओर समुद्र और पर्वतों के सुन्दर दृश्य दिखाई देते हैं। इसको बनाते समय एक भी पेड़ काटा नहीं गया, स्थानान्तरित किये गये हैं।

फिर समुद्र के साथ-साथ सान्ता बारबरा पहुँचे। समुद्र किनारे का सुन्दर नगर, समुद्र के अन्दर दृश्य देखने के स्थान को पीयर कहते हैं, यह लकड़ी का बना होता है, इसके ऊपर चलकर समुद्र के अन्दर दूर तक जाया जा सकता है। वहाँ दृश्य देखकर रहने का स्थान खोजा, पूरे नगर में कोई स्थान नहीं मिला। दस मील दूर जाके होटल में स्थान मिला, रात्रि विश्राम किया।

१५ अप्रैल प्रातः होटल से निकलकर समुद्र का किनारा पकड़ा, मार्ग में खेत, पहाड़ों का सौन्दर्य देखते हुये लॉसएञ्जिलिस के उपनगर सैण्टा मोनिका पहुँचे। यहाँ का समुद्रतट सुन्दर और मनोरञ्जन से भरपूर है, पहले रेलगाड़ी का अनुभव लिया। दोपहर लॉसएञ्जिलिस पहुँचकर शाकाहारी भोजनालय की खोज की। इण्डियन स्वीट्स नाम का भोजनालय मिला, यहाँ गोरे और भारतीय शाकाहारी भोजन के लिये आते हैं। होटल वाले ने कहा- भोजन एक घण्टा देर से मिलेगा, क्योंकि उसे नब्बे पराठों का ग्राहक मिला है, पहले उसका काम पूरा करूँगा। भोजन करके मुख्य बाजार में आये। विश्व प्रसिद्ध हॉलीवुड स्थान देखा। यहाँ की सड़कों की दोनों पटरियों पर पीतल के पट्टे पर थोड़ी-थोड़ी दूर पर हॉलीवुड के प्रसिद्ध हस्तियों के नाम लिखकर लगाये हुए हैं। वह विशाल भवन देखा, जिसमें ऑस्कर पुरस्कार दिये जाते हैं। एक वाहन लेकर नगर भ्रमण किया, जिसमें उसने हॉलीवुड के प्रसिद्ध अभिनेता-अभिनेत्रियाँ जिस क्षेत्र में रहते हैं, वहाँ का भ्रमण कराया।

मार्गदर्शक ने प्रसिद्ध लोगों के घर बाहर से बताये। सायंकाल होटल खोजते हुए एक उपनगर में गये, वहाँ कमरा लेकर विश्राम किया।

१६ अप्रैल को श्री सुरेन्द्र मेहता जी के घर कार्यक्रम था, उनसे सम्पर्क किया, दोपहर दिल्ली वाला भोजनालय पर मिलने का निश्चय हुआ। हम यथासमय पहुँच गये। मेहता जी भी पत्नी के साथ पहुँच गये, परिचय हुआ, भोजन करके उनके साथ घर पहुँचे। घर में दोनों प्राणी एकाकी रहते हैं। दो बेटे हैं, दोनों बाहर काम करते हैं। सायं पाँच बजे परिवार में सत्संग रखा था, ३०-४० व्यक्ति आ गये थे, श्री सुधीर आनन्द जी भी पहुँच गये थे। योग विषय पर चर्चा हुई, दो घण्टा कार्यक्रम चला, सबने भोजन किया, कार्यक्रम समाप्त कर घरेलू बातें की, विश्राम किया। दोनों पति-पत्नी आर्य समाज के अच्छे कार्यकर्त्ता हैं। आपने लॉस एंजिलिस में स्वामी रामदेव जी के योग शिविर का आयोजन किया था। आज भी नियमित योग कक्षा लेते हैं। रात्रि विश्राम किया।

आपने बताया कि यूरोपियन और अमेरिकी विद्वानों और राजनीतिज्ञों को भारत की कोई भी अच्छी बात स्वीकार करने का साहस नहीं। अपनी निम्नता को छिपाकर वे दूसरे को अपने से नीचा करके अपनी उच्चता प्रदर्शित करने का यत्न करते हैं। आजकल अमेरिका में एक विवाद चल रहा था। वहाँ की सरकार अपने इतिहास के पाठ्यक्रम में यह नहीं पढ़ाना चाहती कि भारत को इस काल में स्वतन्त्रता मिली। देश का उल्लेख करने से उसका अस्तित्व और इतिहास पर दृष्टि जाती है, इसके स्थान पर वे बच्चों को पढ़ाना चाहते हैं कि साऊथ ईस्ट एशिया को स्वतन्त्रता कब मिली? भारतीय लोगों ने वहाँ इसका इतना विरोध किया कि इस प्रस्ताव को समाप्त तो नहीं किया गया, परन्तु इसको स्थगित कर दिया गया है। ऐसे प्रयासों का उद्देश्य यही रहता है कि वहाँ रहने वाले भारतीय का अपने मूल से सम्बन्ध समाप्त हो जाये।

एक घटना का उल्लेख करना उचित होगा, जिससे मुस्लिम मानसिकता का पता चलता है। वे अमेरिका में रहकर भी हिन्दू विरोधी मानसिकता से कितना पीड़ित और प्रताड़ित है कि अमेरिका भी उसे आधुनिक नहीं बना सका। लॉस एञ्जिलिस में सुरेन्द्र कुमार मेहता बता रहे थे, ह्यूस्टन के एक मुसलमान ने समाचार पत्रों में विज्ञापन छपवाया कि कोई मुस्लिम युवक किसी हिन्दू लड़की से विवाह करके उसे एक साल बाद तलाक दे देगा तो उस युवक को वह पन्द्रह हजार डॉलर का पुरस्कार देगा। इस घटना में हिन्दू को मुसलमान बनाने से अधिक हिन्दू को अपमानित करने का भाव अधिक है।

अमेरिका के हिन्दू संगठनों ने इसका विरोध किया और इस विज्ञापन पर प्रतिबन्ध लगवाया।

१७ अप्रैल रविवार था, प्रातः घर पर मेहता जी से 'दर्शन' विषय पर चर्चा हुई। प्रातराश करके मेहता जी के साथ आर्य समाज पहुँचे। आर्य समाज का सत्संग एक क्लब में होता है, जो चार घण्टे के लिये मास में एक बार किराये पर लिया जाता है। पहले समाज का भवन था, परन्तु आपसी झगड़े में बिक गया। प्रथम यज्ञ हुआ फिर श्री सुधीर आनन्द जी ने मेरा परिचय दिया। मैंने 'आज के युग में वेदों की आवश्यकता' विषय पर व्याख्यान दिया, फिर प्रश्नोत्तर हुए। भोजन के बाद कार्यक्रम समाप्त हुआ। विश्रुत के भाई विराट यहाँ कार्य करते हैं, वे भी यहाँ कार्यक्रम में उपस्थित थे। सबसे विदा लेकर छोटे रास्ते से लौटे, यह मार्ग यद्यपि खेतों और फलों के उद्यानों का था, परन्तु वर्षा के अभाव में सर्वत्र सूखे का साम्राज्य दीख रहा था। मार्ग में पहाड़ों के बीच सुन्दर झील थी। इस प्रकार पाँच सौ किलोमीटर की यात्रा कर रात्रि को घर पहुँच गये। गाड़ी चलाने का काम भास्कर ने किया।

इन दिनों अधिकांश समय स्वाध्याय और लेखन कार्य में लगाया।

२३ अप्रैल की सुयशा और भास्कर के साथ सनफ्रान्सिस्को देखने का विचार किया, नगर पुराना और बहुत सुन्दर है। जहाँ से भी देखें स्वच्छता, सुन्दरता व्यवस्था सब ओर दिखाई देती है। हम पहले गोल्डन गेट पार्क देखने गये। यह उद्यान नगर के मध्य में होने पर भी कहीं कोई अतिक्रमण नहीं है। उद्यान एक हजार एकड़ में फैला हुआ है। इसमें संग्रहालय, खुला रंगमञ्च, विभिन्न उद्यान, खेल के मैदान, उल्लास यात्राओं के अनेक स्थान बने हुए हैं। अवकाश के दिन माता-पिता और बच्चे तथा पर्यटकों

का मेला लगा रहता है। एक घण्टे से अधिक समय गाड़ी खड़ी करने का स्थान खोजने में लगा। दो घण्टे उद्यान के अनेक भाग देखे। प्रकृति का संरक्षण बहुत अच्छे प्रकार से किया हुआ है।

उद्यान देखकर नगर का प्रसिद्ध स्थान लोम्बर्ड स्ट्रीट गये। नगर समुद्र के तट पर पहाड़ी पर बसा हुआ है। नगर के मार्ग बहुत ऊँचे-नीचे हैं। यहाँ पर एक दर्शनीय स्थल है, जिसे क्रुकेड स्ट्रीट कहते हैं। एक सड़क ऊपर से आते हुए एकदम नीचे सड़क से मिलती है, उस ऊँचाई पर एक सर्पाकार मार्ग कारों के उतरने के लिये बनाया है। सड़क के दोनों ओर उतरने-चढ़ने के लिये कम ऊँचाई की सीढ़ियाँ बनी हुई है। उनकी संख्या चार सौ के लगभग लिखी थी। इस मार्ग पर गाड़ी चलाने का अनुभव रोमाञ्च भरा होता है। हम सीढ़ियों से उतरे और चढ़े। यह स्थान एक सौ बासठ वर्ष पूर्व का बना हुआ है। दर्शकों की उत्कण्ठा और प्रसन्नता देखते ही बनती है। लौटकर सायं घर पहुँच कर विश्राम किया।

२४ अप्रैल को स्वदेश प्रस्थान का दिन था, विमान के चलने में विलम्ब की सूचना थी। समय का उपयोग कर के साप्ताहिक बाजार गये, सामान क्रय कर लौटे। ११ बजे घर से निकल सनफ्रांसिस्को हवाई अड्डे पर पहुँचे। सुरक्षा जाँच तक सुयशा भास्कर ने प्रतीक्षा की फिर नमस्ते कर अन्दर पहुँच गया, दो बजे के बाद वायुयान ने उड़ान भरी, सोलह घण्टे निरन्तर उड़ते हुए, जापान के मार्ग से अगले दिन ६ बजे दिल्ली इन्दिरा गाँधी हवाई अड्डे पर उतरा। विशेष बात यह रही कि तकनीकी दृष्टि से यात्रा में २५ घण्टे लगे। वास्तव में १६ घण्टे लगे। दिन में चलकर दिन में ही दिल्ली पहुँच गया, बिना मध्य में रात्रि आये दो दिन हो गये। विपरीत दिशा में चलते हुए ऐसा हुआ।

हवाई अड्डे पर ज्योत्स्ना और ऋचा पहुँच गये थे। उनके साथ घर पहुँच गया और अगले दिन अजमेर, इस प्रकार उक्ति सार्थक हुई- **'बेताल फिर डाल पर।'**

जैसे मेघ वर्षा समय में अपने जल के समूह से सब पदार्थों को तृप्त करता हुआ उन्नति देता है वैसे ईश्वर भी योगाभ्यास करने वाले योगी पुरुष के योग को अत्यन्त बढ़ाता है।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ७.४०

पुस्तक – समीक्षा

पुस्तक का नाम - **भारतीय पारंपरिक समाज तन्त्र**
लेखक - आचार्य रवीन्द्र
प्रकाशक - विश्व नव निर्माण न्यास (पं.),
सोनीपत-हरियाणा
मूल्य - ३०.०० **पृष्ठ संख्या** - ८०

प्राचीन काल में हमारा गौरव उच्चादर्शों का था। लेखक का चिन्तन यही है, पर हमारे समाज में अतीत को लेकर कुछ विचित्र स्थिति दृष्टिगत होती है। इसका मूल कारण क्या है? रामायण एवं महाभारत काल के सामाजिक एवं राजनैतिक मूल्य आज हमारी परम्पराओं के शत्रु बने हुए हैं, क्योंकि हमें उन परम्पराओं पर विश्वास नहीं है। चन्द्रगुप्त के समय चाणक्य जैसे बुद्धिजीवी भी अपरिग्रही माने जाते थे। चक्रवर्ती सम्राट् चन्द्रगुप्त ने अपने शासन को त्यागकर वानप्रस्थ का जीवन बिताया। लेखक की पीड़ा है कि आखिर ऐसा क्या है हमारे अतीत में? क्या एक ही संस्कृति में एक ही व्यक्ति विपरीत कार्य कर सकता है? रामराज्य का क्या स्वरूप था? प्राचीन संस्कृति गलत रूप से प्रचारित हुई। वेद केवल रटने के विषय रह गये। महर्षि दयानन्द के आगमन से हम जगे और जगाने लगे। आडम्बरों, छुआछूत, पर्दाप्रथा, विधवा विवाह, नारी अपमान के विरुद्ध बिगुल बजा। पुनः अतीत का गौरव झलकने लगा है, फिर भी हमें कटिबद्ध होकर इस आह्वान में खरे उतरना है।

लेखक ने जाति प्रथा एवं वर्णाश्रम व्यवस्था, गृहस्थधर्म, वानप्रस्थ, संन्यास, वेदशास्त्र एवं यज्ञ, समाज की स्थिरता, वर्णपरिवर्तन आर्य, अनार्या आदि बिन्दुओं की सहज सरल शब्दों में व्याख्या कर अतीत का स्मरण कराया है। हमारे लिये समाज तन्त्र को समझना आवश्यक है। इस ओर सभी का ध्यानाकर्षण हो। लेखक के विचारों से अवगत होने के लिए इसका पठन आवश्यक है। लेखक की पीड़ा जनमानस की पीड़ा है, जिसे हम समझने का प्रयास करें। लेखक के हृदय से आभारी हैं जिसने हमारा ध्यान आकृष्ट किया है।

हम क्या थे? क्या होंगे? क्या होना शेष है? इस पर विचार आवश्यक है।

- देवमुनि, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

दयानन्द धर्मार्थ चिकित्सालय

परोपकारिणी सभा द्वारा संचालित ऋषि उद्यान में पिछले लगभग तीन वर्ष से आयुर्वेदिक चिकित्सालय चल रहा है। चिकित्सालय में उपलब्ध सभी औषधियाँ नि:शुल्क दी जाती हैं। ऋषि उद्यान में रह रहे डॉ. रमेश मुनि जी चिकित्सक के रूप में इस चिकित्सालय का कुशलतापूर्वक कार्यभार सम्भाल रहे हैं।

दानी महानुभावों से सहयोग की भी अपेक्षा है।

१. बैंक का नाम–**भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।**

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**10158172715**

IFSC-SBIN0007959

२. बैंक का नाम–**आई.डी.बी.आई**, पावर हाऊस के सामने,

जयपुर रोड़, अजमेर।

बैंक बचत खाता **(Savings)** संख्या–**091104000057530**

IFSC-IBKL0000091

email : psabhaa@gmail.com

मन्त्री, परोपकारिणी सभा, अजमेर

आस्था भजन (चैनल) पर आर्य विद्वानों के प्रवचन

स्वामी रामदेव जी जन–जन के कल्याण को ध्यान में रखते हुए वैदिक धर्म के प्रचार–प्रसार के लिए 'आस्था–भजन' चैनल पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे तक दो घण्टे के बीच वैदिक विद्वानों के प्रवचनों को प्रसारित करवा रहे हैं।

इस कार्य में परोपकारिणी सभा द्वारा भी महत्त्वपूर्ण योगदान दिया जा रहा है। परोपकारिणी सभा द्वारा प्रवचनों की आपूर्ति के लिए ऋषि उद्यान में रिकॉर्डिंग–यूनिट चल रही है और लगातार नित नये प्रवचनों की रिकॉर्डिंग की जा रही है। परोपकारिणी सभा ये प्रवचन आस्था–भजन (चैनल) को प्रदान कर रही है।

इन दिनों 'आस्था–भजन' (चैनल) पर प्रतिदिन सायं ७ से ७.२० बजे तक **आचार्य धर्मवीर** के वेद–प्रवचन, ७.३० से ७.५० तक **स्वामी विष्वङ्** के योगदर्शन प्रवचन, ८.३० से ८.५० तक **आचार्य सत्यजित्** के प्रवचन प्रसारित हो रहे हैं। इसी प्रकार आगे भी 'आस्था–भजन' पर प्रतिदिन सायं ७ से ९ बजे के बीच अन्य विद्वानों के व अन्य विषयों पर प्रवचन प्रसारित होते रहेंगे।

धर्मप्रेमी जन इन प्रवचनों का अधिकाधिक लाभ उठाएँ और अन्यों को भी अधिकाधिक सूचित करें।

'आस्था–भजन' (चैनल) डिश–टी.वी. और डी.टी.एच. पर उपलब्ध है, किन्तु टाटा–स्काई, वीडियोकोन, बिग–टी.वी. आदि पर नहीं आ रहा है। जिनके पास ये नहीं आ रहा है, वे अपने प्रसारक (सर्विस प्रोवाइडर) को बार–बार कह कर प्रेरित करते रहें, जिससे कि ये भी आस्था भजन को प्रसारित करने लगें। ऐसा करके वैदिक–धर्म के प्रचार–प्रसार में आप भी सहयोग प्रदान कर सकते हैं। जो केबल से देखते हैं, वे भी अपने केबल ऑपरेटर को कह कर आस्था भजन आरम्भ करवा सकते हैं।

हिन्दी को राजभाषा के रूप में स्थापित करने के लिए संघर्षरत एक अधिवक्ता: श्री इन्द्रदेव प्रसाद

-सत्येन्द्र सिंह आर्य

भारत को स्वाधीन हुए लगभग सात दशक हो गए, परन्तु केन्द्रीय सरकार के कामकाज में राजभाषा के रूप में हिन्दी का प्रयोग नगण्य ही है। उच्च न्यायालय एवं उच्चतम न्यायालय में तो हिन्दी का प्रवेश ही वर्जित था। हम अपने पाठकों की जानकारी के लिए एक ऐसे संघर्षशील अधिवक्ता का जीवनवृत्त यहाँ दे रहे हैं, जिन्होंने विधि अनुसार उच्च न्यायालय में अपना अधिवक्ता के रूप में सारा विधिक कामकाज हिन्दी में निष्पादित करने में सफलता प्राप्त की है।

श्री इन्द्रदेव प्रसाद जी का जन्म श्री बालेश्वर महतो के परिवार में ग्राम-जमुआरा, पोस्ट-जमुआरा, जिला नवादा, राज्य बिहार में १३ मार्च १९६७ को हुआ। आपकी प्रारम्भिक शिक्षा (वर्ग १ से ४ तक) राजकीय प्राथमिक विद्यालय जमुआरा में, वर्ग ५ से ७ तक राजकीय मध्य विद्यालय जमुआरा, माध्यमिक शिक्षा वर्ग ८ से १०वीं बोर्ड तक राजकीय उच्च विद्यालय हिसुआ में हुई। बी.ए. आनर्स आपने टी.एस. कॉलेज हिसुआ से किया तथा विधि स्नातक की शिक्षा विधि महाविद्यालय नवादा में पूर्ण हुई। शिक्षा पूर्ण होने पर अधिवक्ता के रूप में विधि व्यवसाय का प्रशिक्षण माननीय पटना उच्च न्यायालय में १७-०२-१९९८ से लगातार एक वर्ष तक लिया। तभी से आप वहीं पर अधिवक्ता के रूप में कार्य कर रहे हैं और अपने सम्पूर्ण कार्य में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी का प्रयोग कर रहे हैं।

श्री इन्द्रदेव प्रसाद जी ने अपने जीवन का उद्देश्य बनाया है- ''माननीय उच्च न्यायालय पटना एवं माननीय उच्चतम न्यायालय भारत की न्यायिक कार्यवाहियों में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी का प्रयोग जीवन भर करते रहना तथा और लोगों को भी इसके लिए उत्प्रेरित करते रहना।''

उनके द्वारा इस दिशा में किये जा रहे कार्यों का विवरण उन्हीं के शब्दों में इस प्रकार है-

१. मैं अधिवक्ता बनने के पूर्व से ही, माननीय उच्च न्यायालय पटना की न्यायिक कार्यवाहियों में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी का प्रयोग करता आ रहा हूँ। मैं अधिवक्ता बनने के बाद भी अपने प्रत्येक मुअक्किल का प्रत्येक मुकदमा भारत संघ की राजभाषा हिन्दी में ही दाखिल करता हूँ और अपने प्रत्येक मुअक्किल के प्रत्येक मुकदमे की बहस, भारत संघ की राजभाषा हिन्दी में ही करता हूँ।

२. माननीय उच्च न्यायालय, पटना के पूर्व माननीय न्यायमूर्ति श्री एस.के. कटियार ने मेरे एक मुअक्किल विनय कुमार सिंह के हिन्दी आवेदन को भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४८ के संदर्भ में यह कहते हुए खारिज कर दिया था कि हिन्दी भाषा में लिखी हुई रिट याचिका पटना उच्च न्यायालय में पोषणीय नहीं है, जो निर्णय विधि २००३ बी.एल.जे. ४१८ विनय कुमार सिंह बनाम बिहार राज्य विद्युत बोर्ड एवं अन्य के रूप में ज्ञापित है।

३. मैंने अपने उक्त मुअक्किल विनय कुमार सिंह को, हिन्दी आवेदन को रोकने वाले उक्त निर्णय विधि २००३, २द्ध बी.एल.जे. ४१८ के विरुद्ध (एल.पी.ए.४७५/२००३) दाखिल करने की सलाह दी थी। मेरे मुअक्किल विनय कुमार सिंह ने मेरी सलाह मानकर मुझे नया अधिकार पत्र दिया था, तद्नुसार मेरे द्वारा हिन्दी आवेदन को रोकने वाले उक्त निर्णय विधि के विरुद्ध (एल.पी.ए. ४७५/२००३) दाखिल हुआ था, जिसमें पारित माननीय न्यायमूर्ति श्री नवीन सिन्हा एवं माननीय न्यायमूर्ति श्री दिनेश कुमार सिंह वाली न्यायखंडपीठ का अंतिम आदेश दिनांक-१२.०५.२०१० द्वारा हिन्दी आवेदन को रोकने वाले उक्त निर्णय विधि को अपास्त करते हुए अभी निर्धारित कर दिया गया है कि हिन्दी भाषा में तैयार की गयी रिट याचिका पटना उच्च न्यायालय में पोषणीय है, जो निर्णय विधि २०१०, ३द्ध बी.एल.जे. पी.एच.सी.-८३ विनय कुमार सिंह बनाम बिहार राज्य विद्युत बोर्ड एवं अन्य के रूप में ज्ञापित है। इस प्रकार माननीय उच्च न्यायालय पटना में पटना की न्यायिक कार्यवाहियों में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी का

प्रयोग करने में अब कोई रुकावट नहीं है। **वर्ष २०१० में ही माननीय उच्च न्यायालय पटना में हिन्दी अंग्रेजी के विवाद का अंत हो गया है जो आजादी के पहले का विवाद था।**

४. मैंने भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५०, ३५१, ५१,कद्ध१९, कद्ध १४ एवं १३ में भरोसा करके माननीय उच्चतम न्यायालय भारत में भी भारत संघ की राजभाषा हिन्दी में कुछ मुकदमे दाखिल किये हैं, जिनका विवरण निम्नलिखित है-

(१) डब्लू पी., सिद्ध डी. नं. ३०६२/२०१६ दिनांक-२३.०१.२०१६ इन्द्रदेव बनाम भारत संघ एवं अन्य

(२) एस.एल.पी., क्रिद्ध डी. नं.-४७४९/२०१६ दिनांक-०८.०२.२०१६ वीरेन्द्र कुमार बनाम बिहार राज्य एवं अन्य

(३) एस.एल.पी. क्रिद्ध डी. नं.-११७३६/२०१६ दिनांक-०४.०४.२०१६ मुन्ना कुमार बनाम बिहार राज्य

(४) एस.एल.पी. सिद्ध डी. नं.-११७४१/२०१६ दिनांक-०४.०४.२०१६ संजय कुमार अधिवक्ता बनाम बिहार राज्य द्वारा विधि संचिव बिहार सरकार पटना वगैरह

५. उक्त चार मुकदमों में से प्रथम मुकदमा डब्लू.पी., सिद्ध डी.नं.-३०६२/२०१६ का दाखिला भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४८ के बल पर रोक दिया गया था, जिसके परिप्रेक्ष्य में मैंने माननीय उच्चतम न्यायालय भारत के सहायक निबंधक महोदय को भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५०,३५१,५१, कद्ध, १९, कद्ध, १४ एवं १३ का स्मरण करवाया था, जिसका प्रभाव भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३४८ से स्थगित नहीं हो सकता है।

६. माननीय उच्चतम न्यायालय भारत के सहायक निबंधक महोदय ने भारतीय संविधान के अनुच्छेद ३५०, ३५१,५१, कद्ध, १९, कद्ध, १४ एवं १३ का स्मरण करते ही हिन्दी भाषा में लिखी हुई रिट याचिका की दाखिला स्वीकार करने का आदेश अपने कार्यालय दूरभाष से अपने कार्यालय को दिया और उसी दूरभाषिक आदेश के आलोक में बिना किसी रोक-टोक के माननीय उच्चत्तम न्यायालय भारत में भारत संघ की राजभाषा हिन्दी में मुकदमा दाखिल होने लगा है। भारत संघ की राजभाषा हिन्दी में दाखिल उक्त सभी मुकदमे, माननीय उच्चतम न्यायालय भारत में हिन्दी आवेदनों एवं हिन्दी अनुलग्नकों का अंग्रेजी अनुवाद हेतु लंबित है। नियम से हिन्दी आवेदनों एवं अनुलग्नकों का अंग्रेजी अनुवाद माननीय उच्चतम न्यायालय भारत को अपने अनुवादक से ही करवाना है।

७. श्री इन्द्रदेव प्रसाद जी का वर्तमान पता है-

इन्द्रदेव प्रसाद ,अधिवक्ता,
पटना उच्च न्यायालय
सदस्य-एडवोकेट एसोसियेशन
बैठने का स्थान-रूम नं.-३,
चलभाष: ०९३८६४४२०९३
दूरभाष: ०६१२-२२४१६२१

८. श्री इन्द्रदेव प्रसाद जी के प्रयत्नों का ही सुफल है कि १ फरवरी २०१६ के अंक में नवभारत टाइम्स समाचार पत्र ने यह टिप्पणी एंव समाचार प्रकाशित किया-

''सुप्रीम कोर्ट पहुँची हिन्दी''

''प्रशंसा करनी होगी बिहार के एक वकील इन्द्रदेव प्रसाद की, जिन्होंने एडी-चोटी का जोर लगाकर देश की सबसे बड़ी अदालत को हिन्दी में लिखी याचिका स्वीकार करने के लिए बाध्य किया। सुप्रीम कोर्ट में अब तक हिन्दी में लिखी याचिका दाखिल नहीं की जाती थी, लेकिन इन्द्रदेव प्रसाद ने इस परम्परा का विरोध किया। वे पटना उच्च न्यायालय में हिन्दी में लिखी याचिका ही दायर करते हैं और हिन्दी में ही बहस करते हैं। हिन्दी में याचिका देखकर सुप्रीम कोर्ट का रजिस्ट्रार कार्यालय भड़क गया और वकील से कहा कि पहले वह अपनी याचिका का अंग्रेजी अनुवाद कराएँ, लेकिन राष्ट्रभाषा हिन्दी पर गर्व करने वाले प्रसाद ऐसा करने को तैयार नहीं हुए, जब रजिस्ट्रार ने कहा कि संविधान के अनुच्छेद ३४८ की बाध्यता के कारण हिन्दी याचिका दायर नहीं की जा सकती तो याचिकाकर्त्ता ने उन्हें संविधान के अनुच्छेद १३ एवं १९ भी दिखाए, जिनमें हिन्दी के साथ भेदभाव करने से मना किया गया है। वकील इन्द्रदेव प्रसाद का यह कदम आगे भी देश के ऐसे याचिकाकर्त्ताओं और वकीलों के लिए मिसाल साबित होगा जो अपना मामला सुप्रीम कोर्ट में हिन्दी में लड़ना चाहते हैं।

अंग्रेजों के जमाने से आज तक कितने ही राज्यों के हाईकोर्ट में अंग्रेजी में ही कामकाज होता आ रहा है, केवल मध्यप्रदेश, उत्तरप्रदेश, राजस्थान, बिहार और छत्तीसगढ़ के उच्च न्यायालयों में हिन्दी में सुनवाई होती है तथा वकीलों को हिन्दी में बहस की अनुमति है, यह भलीभाँति सिद्ध हो चुका है कि हिन्दी में कोर्ट का कामकाज सुगमता से चल सकता है, फिर अंग्रेजी की गुलामी क्यों कायम रखी जाए? हिन्दी में तमाम अंग्रेजी कानूनी शब्दों के पयार्यवाची शब्द उपलब्ध हैं, इसके अलावा मुवक्किल भी समझ सकता है कि उसका वकील तथा प्रतिपक्षी वकील क्या कह रहा है। अंग्रेजी में अदालती कामकाज होने से कितने ही मुवक्किलों के पल्ले कुछ भी नहीं पड़ता, जब हिन्दी करोड़ों भारतीयों की प्रभावशाली एवं सामर्थ्यपूर्ण संपर्क भाषा है तो सुप्रीम कोर्ट को भी अंग्रेजी की बाध्यता पूरी तरह हटा लेनी चाहिए।''

श्री इन्द्रदेव प्रसाद जी को बहुत-बहुत बधाई एवं साधुवाद।

-ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

सार्वभौम मानव धर्म

-मोहनचन्द

महर्षि दयानन्द ने स्वरचित ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका व उसकी अनुभूमिकाओं में बहुत-सी महत्त्वपूर्ण बातें लिखी हैं। वे संसार के सब धार्मिक मत-मतान्तरों में एकता स्थापित करना चाहते थे। परस्पर प्रीति पूर्वक वाद-विवाद, परस्पर विचार-विमर्श द्वारा एक सर्वमान्य धर्म अथवा मानव धर्म की स्थापना करना चाहते थे। इस संबंध में उन्होंने सर्व धर्म सम्मेलन का भी आयोजन किया था, किन्तु वे उसमें सफल न हो सके। उक्त विषयक महर्षि के वचन सत्यार्थ प्रकाश की भूमिका, अनुभूमिका व स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश से उद्धृत कर नीचे प्रस्तुत किये जाते हैं-

'और जो मतमतान्तर के परस्पर विरुद्ध झगड़े हैं, उनको मैं प्रसन्न (पसंद) नहीं करता, क्योंकि इन्हीं मतवालों ने अपने मतों का प्रचार कर मनुष्यों को फँसा कर परस्पर शत्रु बना दिये हैं। इस बात को काट, सर्वसत्य का प्रचार कर, सबको ऐक्यमत में करा, द्वेष छुड़ा, परस्पर में दृढ़ प्रीतियुक्त कराके सबसे सबको सुखलाभ पहुँचाने के लिये मेरा प्रयत्न और अभिप्राय है।'

(स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश)

'यदपि (यद्यपि) आजकाल (आजकल) बहुत से विद्वान् प्रत्येक मत में हैं, वे पक्षपात छोड़ सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् जो-जो बातें सबके अनुकूल सब में सत्य हैं, उनका ग्रहण और जो एक-दूसरे से विरुद्ध बातें हैं, उनका त्याग कर परस्पर प्रीति से वर्तें-वर्तावें, तो जगत् का पूर्ण हित होवे। क्योंकि विद्वानों के विरोध से अविद्वानों में विरोध बढ़कर अनेक विध दु:खों की वृद्धि और सुखों की हानि होती है। इस हानि ने जो कि स्वार्थी मनुष्यों को प्रिय है, सब मनुष्यों को दु:ख सागर में डुबा दिया है।'

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

'इसमें यह अभिप्राय रक्खा गया है कि जो-जो सब मतों में सत्य-सत्य बातें हैं, वे-वे सब में अविरुद्ध होने से उनका स्वीकार करके जो-जो सब मत-मतान्तरों में मिथ्या बातें हैं, उन-उनका खण्डन किया है। इसमें यह भी अभिप्राय रक्खा है कि सब मत-मतान्तरों की गुप्त वा प्रगट बुरी बातों को प्रकाश कर, विद्वान्, अविद्वान् सब साधारण, सब मनुष्यों के सामने रक्खा है, जिससे सबसे सबका विचार होकर परस्पर प्रेमी हो के, एक सत्यमतस्थ होवें।'

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

'इसलिये जैसा मैं पुराणों, जैनियों के ग्रन्थों, बाइबिल और कुरान को प्रथम ही बुरी दृष्टि से न देखकर, उनमें से गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग तथा अन्य मनुष्य जाति की उन्नति के लिये प्रयत्न करता हूँ, वैसा सबको करना योग्य है।'

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिका)

'इसी मत-मतान्तर के विवाद से जगत् में जो-जो अनिष्ट फल हुए, होते हैं और होंगे, उनको पक्षपात रहित विद्वज्जन जान सकते हैं। जब तक इस मनुष्य जाति में परस्पर मिथ्या मत-मतान्तर का विरुद्ध वाद न छूटेगा, तब

तक अन्योन्य को आनन्द न होगा। यदि हम सब मनुष्य और विशेषकर विद्वज्जन ईर्ष्या-द्वेष छोड़कर सत्यासत्य का निर्णय करके सत्य का ग्रहण और असत्य का त्याग करना-कराना चाहें तो हमारे लिये यह बात असाध्य नहीं है।'

(सत्यार्थ प्रकाश भूमिकर)

'यह सिद्ध बात है कि पाँच सहस्र वर्षों के पूर्व वेद-मत से भिन्न दूसरा कोई भी मत न था, क्योंकि वेदोक्त सब बातें विद्या से अविरुद्ध हैं। वेदों की अप्रवृत्ति होने का कारण महाभारत युद्ध हुआ। इनकी अप्रवृत्ति से अविद्यान्धकार के भूगोल में विस्तृत होने से मनुष्यों की बुद्धि भ्रमयुक्त होकर जिसके मन में जैसा आया वैसा मत चलाया।'

(अनुभूमिका-१)

'जब तक वादी-प्रतिवादी होकर प्रीति से वाद वा लेख न किया जाय, तब तक सत्यासत्य का निर्णय नहीं हो सकता। जब विद्वान् लोगों में सत्यासत्य का निश्चय नहीं होता तभी अविद्वानों को महा-अन्धकार में पड़कर बहुत दु:ख उठाना पड़ता है। इसलिये सत्य के जय और असत्य के क्षय अर्थ मित्रता से वाद वा लेख करना हमारी मनुष्य जाति का मुख्य काम है। यदि ऐसा न हो तो मनुष्यों की उन्नति कभी न हो।'

(अनुभूमिका-२)

'जो-जो सर्वमान्य सत्य विषय हैं, वे तो सब (मतों) में एक से हैं, झगड़ा झूठे विषयों में होता है। अथवा एक सच्चा और दूसरा झूठा हो, तो भी कुछ थोड़ा-सा विवाद चलता है। यदि वादी-प्रतिवादी सत्यासत्य निश्चय के लिये वाद-प्रतिवाद करें तो अवश्य निश्चय हो जाय।'

(अनुभूमिका-३)

'और यही सज्जनों की रीति है कि अपने वा पराये दोषों को दोष और गुणों को गुण जानकर गुणों का ग्रहण और दोषों का त्याग करें और हठियों का हठ-दुराग्रह न्यून करें करावें।'

(अनुभूमिका-४)

महर्षि दयानन्द एक ऐसे सर्वतन्त्र सिद्धान्त जिसको वे साम्राज्य सार्वजनिक धर्म कहते थे, उसकी स्थापना करना चाहते थे, जिसको आजकल की भाषा में हम मानव धर्म कह सकते हैं। वे ऐसे धर्म के बारे में स्वमन्तव्यामन्तव्य-प्रकाश जो कि सत्यार्थ प्रकाश का अन्तिम अध्याय है में लिखते हैं-

'सर्वतन्त्र सिद्धान्त अर्थात् साम्राज्य सार्वजनिक धर्म जिसको सदा से सब मानते आये, मानते हैं और मानेंगे भी, इसलिये उसको सनातन नित्य धर्म कहते हैं, कि जिसका विरोधी कोई भी न हो सके।'

महर्षि दयानन्द मत-मतान्तरों से संसार में प्रचलित अनेक धर्म-धर्मान्तरों का ग्रहण क रते हैं और इसी को मानव जाति में व्याप्त कलह का कारण मानते हैं।

- ५, हरि ओम् मार्ग, भजनगंज अजमेर।
०९४६८६९५७९०

यू-ट्यूब पर वीडियो प्रवचन उपलब्ध

वेद एवं आर्ष साहित्य में रुचि रखने वाले आर्यजगत् एवं धार्मिक जनों को यह जानकर प्रसन्नता होगी कि अब यू-ट्यूब पर अनेक वैदिक आर्य विद्वानों के सैंकड़ों नये-नये प्रवचन उपलब्ध हैं। विश्व में कहीं पर भी इन्टरनेट से जुड़ कर ये प्रवचन नि:शुल्क सुने-देखे तथा डाउनलोड किये जा सकते हैं। आप जहाँ भी हैं, यदि आपको वैदिक आर्ष ज्ञान की पिपासा है, वेद एवं आर्ष ग्रन्थों के स्वाध्याय के साथ आप इन पर विद्वानों के प्रवचन भी सुनना चाहते हैं, तो इन्टरनेट से जुड़ कर सरलता से सुन सकते हैं।

इसके लिए you tube पर जाकर playlist of paropkarini sabha लिख कर सर्च करें, तो आपको अनेक प्लेलिस्ट मिलेंगी, यथा- वेद प्रवचन, योग दर्शन, ईशोपनिषद् आदि। इनमें इच्छानुसार जाकर लाभ उठाया जा सकता है। आप अपने परिचितों को यह सूचना देकर उन्हें भी लाभ उठाने को प्रेरित कर सकते हैं। भविष्य में अन्य भी नये-नये प्रवचन इस सूची में उपलब्ध कराये जाते रहेंगे।

प्रबल राष्ट्रवाद के पर्याय - प्रो. बलराज मधोक

-इन्द्रजित् देव

श्री बलराज मधोक का निधन हो गया। ९६ वर्ष पूर्व उनका जन्म वर्तमान पाकिस्तान के गुजराँवाला नगर के निकट जल्लन ग्राम में हुआ था। उनका पूरा परिवार आर्यसमाजी था। जिस दिन लाला लाजपत राय का बलिदान हुआ, उस दिन उनके परिवार में भोजन नहीं बना था। उनके पिता जी दिन भर उदास रहे व बोले-''आज भारत का सूर्य अस्त हो गया।'' पिता जी कश्मीर-जम्मू के डोगरा-राज्यकाल में शासकीय कर्मचारी थे। पिताजी अपने विद्यार्थी-काल में ही आर्य समाज के प्रभाव में आ गए थे। महर्षि दयानन्द का जीवन और सिद्धान्त उनके आदर्श थे। बी.ए. उत्तीर्ण करने के पश्चात् पिताजी को डाक-तार विभाग में इन्स्पैक्टर के पद के लिए चुना गया था, परन्तु साक्षात्कार के अवसर पर उन्होंने उच्च अंग्रेज अधिकारी द्वारा पूछे गये एक प्रश्न के उत्तर में यह सच्चाई बताई कि उन्होंने 'सत्यार्थ प्रकाश' पढ़ा है तो उनका चयन ही नहीं किया गया। तब उन्होंने संकल्प कर लिया कि वे अंग्रेजी शासन की नौकरी नहीं करेंगे। श्रीनगर में रहते बलराज मधोक का सम्पर्क पं. विश्वबन्धु से हुआ, जिनका उनके जीवन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे आर्य समाज, हजूरी बाग के पुरोहित थे। तब वह आर्य समाज, श्रीनगर के गैर कश्मीरी हिन्दुओं की धार्मिक व सांस्कृतिक गतिविधियों का केन्द्र था। श्री चिरंजीलाल वानप्रस्थी उस आर्य समाज के प्रधान व बलराज मधोक के पिता श्री जगन्नाथ उसके मन्त्री थे। पूरा परिवार प्रत्येक सत्संग में वहाँ जाया करता था। श्री बलराज मधोक के अपने शब्दों में-''महर्षि दयानन्द के जीवन चरित को पढ़ने का मुझे उन्हीं दिनों सौभाग्य प्राप्त हुआ। उनकी हर बात को बुद्धि और तर्क से परखने पर बल देना उनकी सत्यनिष्ठा, निर्भीकता, देशप्रेम और आत्मविश्वास आर्यसमाजियों के जीवन में भी टपकता था। मेरे पूज्य पिताजी में भी ये गुण उत्तम रूप में विद्यमान थे। मुझे अपने श्रीनगर के दिनों में उनके साथ-साथ आर्य समाज के अनेक गुरुजनों को देखने और उनके सम्पर्क में आने अवसर मिला। उन सबका और आर्य समाज के वातावरण का मेरे जीवन पर गहरा और स्थायी प्रभाव पड़ा।'' बलराज मधोक ने एम.ए. की परीक्षा इतिहास विषय में उत्तीर्ण की तो पी-एच.डी. करने का विचार किया और 'स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज का योगदान' विषय चुनकर शोध कार्य भी आरंभ कर दिया, परन्तु १९४६ के बाद देश का राजनैतिक चक्र इतनी तेजी से चलने लगा कि उन्हें अपना सारा समय राजनैतिक गतिविधियों पर केन्द्रित करना पड़ा।

तब लाहौर का डी.ए.वी. महाविद्यालय पंजाब की एक प्रमुख शिक्षण-संस्था थी। इसमें लगभग ४००० विद्यार्थी अध्ययनरत थे। महाविद्यालय और उससे सम्बद्ध अन्य संस्थाएँ तथा आवास गृह लगभग एक वर्गमील क्षेत्र में फैले थे। अपने परिसर के विस्तार तथा विद्यार्थियों की संख्या की दृष्टि से यह उस समय के अलीगढ़ विश्वविद्यालय से कहीं बड़ा था। **देश विभाजन के समय बलराज मधोक ने यह सुझाव दिया था कि अलीगढ वि.वि. के परिसर और डी.ए.वी. महाविद्यालय के परिसर की अदला-बदली कर ली जाए।** विभाजन के बाद अलीगढ़ मुस्लिम वि.वि. के ८० प्रतिशत मुस्लिम विद्यार्थी और प्राध्यापक पाकिस्तान में जा बसे थे। विभाजन से पूर्व यह वि.वि. पाकिस्तान के पक्ष की गतिविधियों तथा मुस्लिम साम्प्रदायिकता का सबसे बड़ा अड्डा था। इसे बन्द करके इसका परिसर डी.ए.वी. महाविद्यालय, लाहौर को देना सर्वथा उचित व राष्ट्रहित में होता, **परन्तु जवाहर लाल नेहरू और मौलाना आजाद को यह रुचिकर व उपयोगी नहीं लगा।** अलीगढ़ मु. विश्वविद्यालय अब पुनः बहुत बड़ा विष वृक्ष बन चुका है। बलराज मधोक का उक्त सुझाव यदि मान लिया गया होता, तो आज स्थिति सर्वथा अच्छी होती। बलराज मधोक की दूरदृष्टि थी, यह इस घटना से स्पष्ट प्रमाणित होता है।

जब १९८० में इन्दिरा गाँधी दोबारा सत्तासीन हुई तो अलीगढ़ में एक हिन्दू विश्वविद्यालय स्थापित करने की पूरी तैयारियाँ पूर्ण हो चुकी थीं, मधोक जो को इसके भूमि

पूजन के अवसर पर आमन्त्रित किया गया था,परन्तु संजय गाँधी की मृत्यु होने से यह योजना रोक दी गई थी।

लाला लाजपत राय, बालगंगाधर तिलक, विपिनचन्द्र पाल व वीर सावरकर के राजनैतिक विचारों का प्रभाव बलराज मधोक पर पड़ता गया। वे सक्रिय राजनीति में प्रविष्ट हुए। भाई परमानन्द से भी वे मिलते रहे, जिनका यह विचार अपने दीर्घ अनुभवों के आधार पर बना था **''हिन्दू समाज एक मरता हुआ समाज है। इसे अपने और पराए की, मित्र और शत्रु की पहचान नहीं.....। इसमें जाति-पाँति और भाषा-भेद इतना अधिक है और हिन्दुत्व की भावना इतनी दुर्बल कि हिन्दू के नाते यह समाज न कुछ सोच सकता है, न ही कुछ कर सकता है।''**

इस प्रकार के वैचारिक उथल-पुथल में बलराज मधोक सनातन धर्म कॉलेज, लाहौर, आत्मानन्द जैन कॉलेज, अम्बाला तथा डी.ए.वी. कॉलेज, श्रीनगर में इतिहास के प्राध्यापक के रूप में भी क्रमशः कार्य करते रहे। उनका यह भी विचार बना कि भारत की अखण्डता को बचाने के लिए पंजाब, सिन्ध, सीमा प्रान्त और पूर्वी बंगाल के राष्ट्रवादी देशभक्त हिन्दुओं को मौत के मुँह में जाने से बचाने को संघ जो भूमिका अदा कर सकता था, वह उसने नहीं की। उस समय यह एक मात्र शक्ति था, जो देश को विभाजन की आग से बचा सकता था। यह ठीक है कि आग लग जाने के बाद इसके स्वयं सेवकों ने अपनी जान हथेली पर रखकर असंख्य लोगों को जलती आग में से निकाला। इसके लिए स्थानीय प्रचारक और स्वयं सेवक प्रशंसा के पात्र हैं, परन्तु परीक्षा की उस घड़ी में संघ का नेतृत्त्व देश और हिन्दू समाज को उचित और आवश्यक मार्ग दर्शन और दिशा न दे सका। मधोक जी का यह भी विचार था कि यदि संघ का हिन्दू महासभा से तालमेल हो जाता तो सम्भवतः हिन्दू महासभा देश विभाजन से पूर्व एक प्रबल राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी राजनैतिक संगठन के रूपमें उभर पाती और भारत की राजनीति को नया मोड़ दे पाती। हिन्दू हिन्दू का शत्रु निकला। संघ हिन्दू महासभा को तो खा गया, परन्तु स्वयं कोई राजनैतिक दिशा न दे पाया।

जब अक्टूबर, १९४८ में पाकिस्तान ने कश्मीर पर आक्रमण किया, तब मधोक डी.ए.वी. कॉलेज, श्रीनगर में उपाचार्य थे। उनके नेतृत्व में संघ ने शानदार कार्य किया। शरणार्थी रिलीफ कमेटी बनाकर उन्होंने विभाजन के कारण कश्मीर में आए शरणार्थी हिन्दुओं की आर्थिक व सामाजिक सहायता की। अन्य कई प्रकार के साहसिक कार्यों से सेना, महाराजा हरिसिंह व कश्मीर की प्रजा की विशिष्ट सहायता करते रहे। कबाइलियों के वेश में पाकिस्तानी सेना ने जम्मू-कश्मीर पर आक्रमण किया। महाराजा का एक दूत तब मधोक जी के घर आया व उसने उनसे भारतीय सेना के आने तक श्रीनगर हवाई-अड्डे की सुरक्षा का प्रबन्ध करने का अनुरोध किया। लगभग २०० स्वयं सेवकों को एकत्रित करके रात-रात में हवाई पट्टी की मरम्मत भी की। जब जवाहर लाल नेहरू ने शेख अब्दुल्ला को जम्मू-कश्मीर के प्रधानमन्त्री के रूप में प्रजा की इच्छा के विपरीत स्थापित कर दिया, तो उसने बलराज मधोक को विशेष निशाना बनाया। शेख अब्दुल्ला ने उन्हें मरवाने की बात एक गुप्त बैठक में कही, परन्तु प्रकट में उनके कश्मीर में रहने पर प्रतिबन्ध लगा दिया। वे अनेक कष्ट सहकर ट्रकों, बसों तथा कई-कई किलोमीटर पैदल चलकर जम्मू पहुँचे। विस्तार भय से हमने उनकी कष्टकारी यात्रा का एक ही वाक्य में वर्णन किया है। जम्मू में आकर पं. प्रेमनाथ डोगरा की सहायता से प्रजा परिषद् नामक एक राजनैतिक संगठन की स्थापना की तथा अब्दुल्ला के अत्याचारों व राष्ट्रद्रोह की गतिविधियों के विरुद्ध आवाज उठानी प्रारम्भ की। अब्दुल्ला ने उन्हें जम्मू से भी निष्कासित कर दिया, तब वे दिल्ली में ही बसने को विवश हुए। उनके माता-पिता को भी जम्मू-कश्मीर छोड़ना पड़ा। इस प्रकार मधोक जी ने नए वलवलों से अपना नया राष्ट्रीय जीवन आरम्भ किया।

स्व. श्यामा प्रसाद मुखर्जी ने जब केन्द्रीय मन्त्री का पद त्याग करके 'भारतीय जनसंघ' नामक एक नये राजनैतिक दल का गठन किया तो बलराज मधोक उसमें सक्रिय हुए। उक्त संगठन के संस्थापकों में उनका नाम भी सम्मिलित है। वे श्यामा प्रसाद मुखर्जी को अपना राजनैतिक गुरु मानते थे। उक्त दल ने जब कश्मीर आन्दोलन आरंभ किया, तो बलराज मधोक ने उसमें भी सक्रिय भाग लिया।

तदनन्तर वे जनसंघ की गतिविधियों में अत्यन्त व्यस्त हुए तथा देशभर में इसके फैलाव के लिए यत्नशील रहे। दिल्ली से वे दो बार लोकसभा के सदस्य भी बने। प्रकाशवीर शास्त्री व डॉ. राममनोहर लोहिया की तरह वे अपने तथ्यपरक, राष्ट्रवादी व प्रभावशाली भाषणों से अन्य सदस्यों को अत्यन्त प्रभावित कर लेते थे। इन्दिरा गाँधी व जवाहर लाल नेहरू की नीतिगत व व्यवहारगत असंगतियों पर वे सटीक आलोचना करने में सिद्धहस्त थे। सन् १९६२ ई. में जब हम चीन से पिटे व चीन ने हमारी ८०,००० वर्गमील धरती हथिया ली थी तो लोकसभा में उन्होंने जवाहर लाल से पूछा था-

न इधर-उधर की तू बात कर,
यह बता कि काफिले क्यों लुटे?
हमें रहजनी से गरज नहीं,
तेरी रहबरी का सवाल है।

राम जन्मभूमि, मथुरा की कृष्ण जन्म भूमि व काशी में विश्वनाथ मन्दिर भूमि को हिन्दुओं को सौंप देने की माँग भी सर्वप्रथम लोकसभा में उन्होंने ही रखी थी, जिसे भारतीय जनता पार्टी ने अपना चुनावी मुद्दा बना लिया था। बलराज ने अन्य पुस्तकों के अतिरिक्त एक पुस्तक Indianisation लिखी थी, जिसमें भारतीय मुसलमानों को अपनी उपासना-पद्धति को जारी रखते हुए भी पाकिस्तान व अन्य देशों के प्रति वफादार न रहकर अपनी मातृभूमि भारत के प्रति सम्पूर्ण वफादार रहने की आवश्यकता, लाभ व उपायों आदि पर विचार दिए थे। दो उपन्यासों के अतिरिक्त राजनैतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक विषयों पर उनकी पुस्तकें हिन्दी तथा अंग्रेजी में प्रकाशित व चर्चित हुईं। वे कई वर्षों तक भारतीय जनसंघ के प्रधान भी रहे, परन्तु दीनदयाल उपाध्याय की रहस्यमयी हत्या में जनसंघ के उन नेताओं, जिनकी गर्दन इन्दिरा गाँधी के हाथ में जा चुकी थी, को अपना हथियार बनाकर बलराज मधोक को जनसंघ से निकलवाकर उनकी राजनैतिक सक्रियता तथा प्रतिष्ठा समाप्त करने की योजना सर्वोच्च राजनैतिक नेतृत्व ने बनाई और सन १९७३ में मधोक जी जनसंघ की प्राथमिक सदस्यता से ही हटा दिए गए।

सन् १९७७ में जब लोकसभा के चुनाव हुए, तो लोकसभा में जनता पार्टी के ८५ प्रतिशत उम्मीदवार विजयी होकर पहुँचने में सफल हुए थे, परन्तु जनसंघ, जो कि जनता पार्टी के घटकों में से एक था, ने मधोक जी को प्रत्याशी न स्वयं बनाया तथा न ही जनता पार्टी के दूसरे घटकों को उन्हें उम्मीदवार बनाने दिया। बलराज मधोक यदि पद व सुविधाओं के ही इच्छुक होते तो वे तब स्वतन्त्र प्रत्याशी के रूप में चुनाव में उतर सकते थे व सफल होकर लोकसभा में सरलता से पहुँच सकते थे। दिल्ली से पहले भी वे दो बार सरलता से सांसद चुने जा चुके थे तथा सन् १९७५ से १९७७ तक १८ मास तक अन्य नेताओं की तरह आपातकाल में बन्दी जीवन व्यतीत कर चुके थे, परन्तु उन्होंने ऐसा न करके राजनैतिक नैतिकता का परिचय दिया।

सन् १९७७ में संजीव रेड्डी को राष्ट्रपति पद पर आसीन किया गया तो संजीव रेड्डी ने उन्हें राज्य सभा में मनोनीत सदस्य के रूप में प्रवेश कराने की पेशकश की, जो उनके लिए सम्मानजनक था, परन्तु बलराज मधोक ने इसे स्वीकार नहीं किया व कहा कि मैं संघर्ष करके आगे बढूँगा व मनोनीत सदस्य के रूप में राज्यसभा में जाना पसन्द नहीं करता। वे अपने नेतृत्व में राष्ट्रवादी हिन्दुत्ववादी सरकार बनाने का स्वप्न देखते थे। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् की स्थापना भी मधोक जी ने ही की थी।

सन् १९६५-६६ में जो गो रक्षा आन्दोलन चला था, उसमें भी उन्होंने सक्रिय भाग लिया था व फरवरी १९६७ में उनके ही नेतृत्व में जनसंघ ने लोकसभा में ३५ सीटें प्राप्त कीं। अनेक प्रदेशों में काँग्रेस हारी थी। परिणाम स्वरूप कुछ प्रदेशों में संयुक्त विपक्षी दलों ने सरकारें बनाई। केन्द्र में भी इन्दिरा गाँधी को कम्युनिस्टों व समाजवादी सदस्यों की सहायता से ही सरकार चलाने पर विवश होना पड़ा था।

वे 'आर्गेनाइजर,' 'वैचारिक विकल्प' तथा 'हिन्दू वर्ल्ड' के कई वर्षों तक सम्पादक रहे। **जनता पार्टी की सरकार ने जब अल्पसंख्यक आयोग की स्थापना की, तो इसके दूरगामी विघटनकारी परिणामों का अनुमान लगाकर इसका विरोध बलराज मधोक ने किया तथा**

मानवधिकार आयोग की स्थापना की जोरदार माँग की, परन्तु उनकी माँग नहीं मानी गई। उन्होंने तत्कालीन प्रधानमन्त्री मोरारजी देसाई से भी इस आयोग की स्थापना न करने को कहा तो मोरारजी ने कहा था, ''मैं सभी घटकों की पारस्परिक सहमति से बना प्रधानमन्त्री हूँ। मेरी संगठन काँग्रेस के केवल ५० सदस्य ही हैं। यदि आपके जनसंघी साथियों ने इस आयोग की स्थापना का विरोध किया होता तो मेरे हाथ मजबूत होते व मैं अल्प संख्यक आयोग के सम्बन्ध में निर्णय बदल देता।''

राष्ट्रवादी व मानववादी दृष्टिकोण की उपेक्षा देखकर बलराज मधोक ने सन् १९७९ में जनता पार्टी से त्याग पत्र दे दिया। सन् १९८० ई. में उनकी पुस्तक 'रेशनल आफ हिन्दू स्टेट' अर्थात् 'हिन्दू राज्य का तार्किक औचित्य' छपी व तहलका मच गया। सभी दलों के ३५ मुस्लिम सांसदों ने इस पुस्तक पर प्रतिबन्ध लगाने की इन्दिरा गाँधी से माँग की। इन्दिरा गाँधी ने स्वयं इस पुस्तक को पढ़कर इसे प्रतिबन्धित करने से इनकार कर दिया। प्रधानमन्त्री इन्दिरा गाँधी ने यह भी कहा कि यह पुस्तक प्रत्येक भारतीय को पढ़नी चाहिए। कुछ दिनों पश्चात् उक्त पुस्तक में दिए तर्कों , तथ्यों व सुझावों से प्रभावित इन्दिरा गाँधी ने तब बलराज मधोक को अपने मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित होकर सरकार के एक प्रतिष्ठित अंग के रूप में अपनी सोच को कार्य रूप देने की पेशकश की, जिसे उन्होंने स्वीकार नहीं किया। वे इसे स्वीकार कर लेते को देश का भविष्य क्या बनता, यह गंभीर विषय विचारणीय है।

वे भारत माता के सच्चे सपूत थे। उनकी भारत-भक्ति गजब की थी। वे आजीवन भारत के लिए सोचते रहे। भारत के लिए लिखते रहे, कर्म करते रहे। उनकी वीरता, विद्वता, सैद्धान्तिक दृढ़ता तथा भारत माता के प्रति निष्ठा अनुकरणीय है। उनका देहान्त २ मई, २०१६ को ९६ वर्ष की अवस्था में हुआ, जो उनकी संयमी और भारतीय जीवन-शैली का प्रमाण है।

- चूना भट्ठियाँ, सिटी सेंटर के निकट, यमुनानगर।

चलभाष क्रमांक-०९४६६१२३६७७

वेदप्रचार करो निष्ठा से

-पं. नन्दलाल निर्भय सिद्धान्ताचार्य

आर्य कुमारो! मिलजुल करके, आगे कदम बढ़ाओ।
वेदप्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

जगत के गुरु ऋषि दयानन्द थे, ईश्वर भक्त निराले।
वेदों के विद्वान् धुरन्धर, देश भक्त मतवाले।।
वीर स्पष्टवादी, बलशाली, बड़े तपस्वी त्यागी।
निर्बल, निर्धन के रक्षक, मानवता के अनुरागी।।

स्वामी जी-से धीर वीर बन, जग को स्वर्ग बनाओ।
वेदप्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

सकल जगत् में पाखण्डी, फिरते हैं शोर मचाते।
वेद विरोधी पोंगा पंथी, दुनियाँ को बहकाते।।
दुष्चरित्र बदमाश लफंगे, धर्मिक गुरु कहलाते।
ईश्वर पूजा छुड़वा दी, खुद को भगवान बताते।।

पोल खोल दो मुस्टंडों की, लेखराम बन जाओ।
वेद प्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

आसाराम, मुरारी की चल रही दुकान यहाँ पर।
घूम रहा सतपाल बना, अब बेईमान यहाँ पर।।
साँईदास तथा ब्रह्मा के भ्रष्ट कुमार-कुमारी।
वैदिक पथ को त्याग बने हैं दंभी और व्यभिचारी।।

लूट रहे भोली जनता को, पोपों के गढ़ ढाओ।
वेदप्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

अगर न दोगे ध्यान कुमारो! पीछे पछताओगे।
दुनियाँ में नासमझ साथियो! निश्चित कहलाओगे।।
स्वामी श्रद्धानन्द बनो तुम, शुद्धि चक्र चलवाओ।
बनो दर्शनानन्द, विश्व में ओ३म् ध्वजा लहराओ।।

कहने का अब समय नहीं है, करके काम दिखाओ।
वेदप्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

युवक-युवतियाँ बिगड़ गए, फैशन के हैं दीवाने।
वेद मन्त्र कुछ याद नहीं, गाते हैं गन्दे गाने।।
अण्डे मांस लगे खाने, करते हैं पाप निरन्तर।
गांजा, सुल्फा, मदिरा पी, पाते संताप निरन्तर।।

'नन्दलाल' नादानों को अब, वैदिक पाठ पढाओ।
वेदप्रचार करो निष्ठा से, सोया जगत् जगाओ।।

-आर्य सदन, बहीन जनपद पलवल (हरियाणा)

चलभाष: - ०९८१३८४५७७४

जिज्ञासा समाधान - ११५

- आचार्य सोमदेव

- श्याम सिंह सहयोगी, उमाही कलां,
सहारनपुर- २४७४५१ उ.प्र.।

जिज्ञासा - आचार्य जी सादर नमस्ते।

विनम्र निवेदन यह है कि जिज्ञासा स्वरूप निम्न सैद्धान्तिक प्रश्न हैं। कृपया लेख पर दृष्टिपात करके निम्न प्रश्नों का समाधान दें। मैं आपका आभारी हूँगा।

१. किसी व्यक्ति का दुर्घटना में अपंग हो जाना मात्र संयोग है अथवा किसी की गलती का परिणाम है अथवा व्यक्ति के पूर्व जन्म के किसी पाप का फल है?

२. क्या किसी माता के गर्भस्थ शिशु के शारीरिक अंग में उत्पन्न दोष जैसे- दिल में छेद हो जाना, अन्धता आदि माता-पिता के शारीरिक दोष का परिणाम है अथवा माता, चिकित्सक आदि किसी की त्रुटि का परिणाम है अथवा दोनों है अथवा शिशु के पूर्व जन्म मे किये गये किसी पाप का फल है?

३. मृत्यु के बाद क्या? एक ऐसा प्रश्न है जो अधिकतर मनुष्यों के समक्ष कभी-न-कभी अवश्य ही जिज्ञासु भावना जगाता है, आप विद्वानों के व्याख्यानों को सुनकर हमारी श्रद्धा निम्न तीन स्थितियों पर टिकी है। **प्रथम** सामान्य जीव सूण्डी नामक कीड़े की भाँति नया जीवन प्राप्त करते हुए ही वर्त्तमान शरीर छोड़ता है। **दूसरी** स्थिति उस अत्यन्त विशिष्ट जीव की है, जिसको शरीर छोड़ते हुए योग्य माता-पिता (गर्भ) की अनुपलब्धता में कुछ काल प्रतीक्षा करनी होती है और **तीसरी** स्थिति दग्ध संस्कार योगी की शरीर छोड़ते ही मोक्षावस्था की प्राप्ति है। अब प्रथम तो हमारी इस मान्यता में जो भी दोष है, उसे प्रगट करें। हमें बतायें। दूसरे ईश्वरीय वाणी वेद हमारे लिए सर्वोपरि है। अत: यजुर्वेद अध्याय-३९ का मंत्र-६ शरीर छोड़ने वाले जीव के १२ दिन का कार्यक्रम वास्तव में क्या है? समझाने की कृपा करें। मंत्र के पदार्थ के अनुसार जीव प्रथम दिन सूर्य, दूसरे दिन अग्नि को प्राप्त होता है। क्या सूर्य में अग्नि नहीं है? इसी प्रकार मंत्र का पदार्थ रहस्यमय दिखाई पड़ता है, जो स्पष्ट ही हमारी अज्ञानता के कारण है। पौराणिक बन्धु इस मंत्र को आधार मानकर देहान्त के १३ दिन बाद अपनी रस्म अदायगी करते हैं। **तमसो मा ज्योतिर्गमय।**

समाधान-(क) वैदिक सिद्धान्त के स्पष्ट समझने से ही मनुष्य के ज्ञान की वृद्धि हो सकती है, इससे भिन्न से नहीं। ठीक-ठीक वैदिक सिद्धान्त समझ लेने पर व्यक्ति का जीवन व्यवहार उत्तम होता चला जाता है, जिससे व्यक्ति सन्तोष व शान्ति की अनुभूति करता है। विशुद्ध वैदिक सिद्धान्त हमारे सामने महर्षि दयानन्द ने रखे हैं, जिनका निर्वहन आर्य समाज करता आया है। उन कठिनता वाले सिद्धान्तों में कर्मफल सिद्धान्त हैं। कर्मफल के विषय में महर्षि मनु ने अपनी मनुस्मृति में, महर्षि पतञ्जलि ने योगदर्शन में, महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश में व अन्य ऋषियों ने अपने शास्त्रों में वर्णन किया है। यह सब वर्णन मिलते हुए भी हम मनुष्य कर्म की गति को सम्पूर्ण रूप से नहीं जान सकते, इसको तो परमेश्वर ही पूर्णरूप से जानने वाला है।

किसी दुर्घटना आदि से व्यक्ति अपंग हो जाता है, उसमें तीनों ही बातें हैं- संयोग, गलती वा कर्म का फल। इन तीनों में से मुख्य कारण अपनी वा अन्य की गलती ही है। जितनी दुर्घटनाएँ होती हैं, उनमें प्राय: किसी-न-किसी की गलती अवश्य होती है। जो वाहन स्वयं चला रहा है, उसकी अथवा सामने वाले की। इनकी गलती के कारण जिस किसी का अंग भंग हो जाता है, उनमें से कुछ स्वस्थ हो जाते हैं, कुछ जीवन पर्यन्त उस अंग के अभाव में जीवन यापन करते हैं। इस गलती के परिणामस्वरूप जो अंग भंग होने से दु:ख मिला, वह उसके कर्मों का फल नहीं है। यहाँ विचारणीय यह है कि कर्म न होते हुए भी दु:ख रूप फल भोग रहा है क्यों? तो इसका उत्तर है- कर्म फल तो कर्म के करने वाले को ही मिलता है और जो दूसरे के अन्याय वा गलती से दु:ख मिलता है, वह कर्म का परिणाम है, कर्म न होते हुए भी इस परिणाम रूप दु:ख मिले हुए की क्षतिपूर्ति न्यायकारी परमेश्वर करता है, अर्थात् जिसको दु:ख मिला है, परमेश्वर उसको आगे मिलने वाले

दु:ख के कटौती कर देगा वा उसको उसके बदले सुख विशेष दे देगा।

हाँ, कई बार किसी की गलती न होते हुए भी संयोग से दुर्घटना हो जाती है, परिस्थिति ऐसी बन जाती है कि हम बच नहीं पाते, ऐसे में जो अपंगता का दु:ख मिला, उसकी भी क्षतिपूर्ति परमेश्वर करेगा। दुर्घटना आदि में जो अपंगता आती है, वह कर्मों का फल हो, इसकी बहुत कम सम्भावना है और यदि है भी तो इसको परमेश्वर ही जानता है, हम जैसों की अल्प बुद्धि यहाँ काम नहीं कर रही।

(ख) इस दूसरे प्रश्न का उत्तर भी उसी प्रकार लिखते हैं, गर्भस्थ शिशु के शारीरिक अंग उत्पन्न दोष का कारण तीनों हो सकते हैं- माता-पिता, चिकित्सक वा बच्चे का कर्म। इन तीनों में उत्पन्न हुए दोष का मुख्य कारण उस बच्चे के कर्म हैं। अपने कर्मों के कारण वह जीवात्मा ऐसे दोषयुक्त शरीर को प्राप्त होता है। जन्मान्धता, जन्म से मूक, किसी अन्य अंग में विकार, ये सब कर्मों का ही फल है। हाँ, विशेष पुरुषार्थ से इनको कुछ ठीक अवश्य किया जा सकता है। कोई है ही नहीं अथवा ठीक होने की सम्भावना नहीं, उसको छोड़कर।

बच्चे में कुछ विकार माता के कारण भी हो सकते हैं। गर्भ में शिशु होते हुए यदि माता का उठना, बैठना आदि ठीक न हो अथवा खान-पान ठीक न हो, तो बच्चे में विकार आ सकते हैं। इसी प्रकार यदि चिकित्सक औषध विपरीत दे देता है, तो उससे भी विकार की सम्भावना है, इससे हुई हानि की क्षतिपूर्ति परमात्मा करता है। फिर भी इस प्रकार के दोष होने का मुख्य कारण तो उस आत्मा के कर्म ही रहेंगे, उसके कर्मों के कारण इस प्रकार के माता-पिता मिले, जो सावधानी नहीं रख रहे, ऐसा परिवेश मिलना कर्मों पर ही आधारित है।

(ग) मृत्यु के बाद आत्मा की क्या गति होती है, हम मनुष्यों के लिए यह रहस्य तो है ही, शरीर के मरने के बाद परमेश्वर उस आत्मा को उसके कर्मानुसार कब, कितने समय में अगला शरीर देता है, यह पूर्ण रूप से तो ईश्वर ही जानता है। इस विषय में कठोपनिषद् के नायक नचिकेता ने भी आचार्य यम से पूछा था, तब आचार्य यम ने कहा था-

देवैश्त्रापि विचिकित्सितं पुरा, न हि विज्ञेयमणुरेष धर्मः।

- कठो. १.२१

पहले इस मृत्यु विषय पर विद्वानों ने भी संदेह किया था, निश्चय ही यह विषय अति सूक्ष्म गहन होने से सुगमता से जानने योग्य नहीं है। यहाँ आचार्य यम ने इस विषय को अति सूक्ष्म कहा है। तथापि इस मृत्यु के रहस्य को ऋषियों, विद्वानों ने खोलने का प्रयत्न किया है, वेद ने भी इस रहस्य का उद्घाटन किया है। इन ऋषियों व वेद की बातों को जो उनके मन्तव्य अनुसार समझ लेता है, वह अधिक-अधिक भ्रम जाल में फँसता जाता है।

मृत्यु के बाद अगला जन्म लेने में कितना समय लगता है, इसको भी पूर्ण रूप से जानने वाला तो परमेश्वर ही है, फिर जो कुछ ऋषियों-विद्वानों से ज्ञात हो रहा है, उसको यहाँ लिखते हैं। यह तो शास्त्र सम्मत है ही, जिस योगी पुरुष ने अपने अविद्या के संस्कार दग्ध कर दिये हैं उसको जन्म न मिलकर मुक्ति मिलेगी, मरने के बाद योगी की आत्मा तत्काल मोक्ष में चल जायेगा। जो ऐसे योगियों से इतर हैं, उनका जन्म कितने काल में होता है, प्रश्न तो यह बना हुआ है। इसमें हमें प्राय: जो उत्तर मिलता है, वह उपनिषद् का प्रमाणयुक्त उत्तर 'जलायुका' के दृष्टांत से दिया जाता है कि जैसे 'जलायुका' अगले भाग को उठा एक स्थान पर रख, पिछला भाग उठा लेता है, इतने समय अगले शरीर प्राप्त होने में लगता है। इस उपनिषद् की बात का विरोध वेद मन्त्र से आ रहा है, लगता है। वेद और ऋषि वचनों में प्राय: विरोध होता नहीं।

उपनिषद् वाली बात को जिस रूप में रखा जाता है, जिसको मैं भी रखता हूँ, रखता रहता हूँ, यह बात विचारणिय तब लगी जब श्रद्धेय आचार्य सत्यजित् जी का समाधान पढ़ा, यह समाधान अधिक संगत लगता है। उस समाधान को यहाँ आचार्य श्री की पुस्तक **''जिज्ञासा समाधान''** में से लेकर लिखते हैं- ''वृहदारण्यक उपनिषद के जिस अंश का प्रश्न में उल्लेख किया गया है, वह ४.४.३ पर है। तृण जलायुका एक प्रकार कीड़ा होता है, जो बिना पैर वाला होता है। वह एक तिनके (डाली आदि) से दूसरे तिनके (डाली आदि) पर जाते समय अपने अग्र (मुख)

भाग को उठाकर, इधर-उधर घुमा कर, उपयुक्त स्थान प्राप्त होने पर अग्रभाग को दूसरे तिनके पर टिका देता है व उसी के आधार से अपने पिछले भाग को, पिछले तिनके से उठा कर दूसरे तिनके पर ले आता है। इस प्रकार वह दो तिनकों के बीच के भाग को पार करता है।''

इस तृण जलायुका की तरह आत्मा को भी बताया गया। पहले तिनके की तरह पिछले जन्म (शरीर) को व दूसरे तिनके की तरह अगले जन्म (शरीर) को बताया गया है। दृष्टान्त का तात्पर्य यह प्रतीत होता है कि आत्मा भी जब तक दूसरे जन्म (शरीर) का आधार नहीं बना लेता, तब तक पिछला जन्म (शरीर) नहीं छोड़ता। किन्तु यह बात पूरी तरह घट नहीं सकती। अत: तात्पर्य यह लिया जाता है कि आत्मा पूर्व शरीर को छोड़कर तत्काल दूसरा शरीर धारण कर लेता है।

प्रश्नकर्त्ता के मन में यही निष्कर्ष है। इस निष्कर्ष का यजु. ३९.६ महर्षि दयानन्द के भाष्य से विरोध दिख रहा है, क्योंकि वहाँ जीव को कुछ काल भ्रमण करके जन्म लेने की बात कही गई है।

प्रश्नकर्त्ता ने लिखा है ''वैदिक मान्यता के अनुसार मृत्यु के उपरान्त तुरन्त पुनर्जन्म हो जाता है।'' उनका 'वैदिक मान्यता' का तात्पर्य आर्यसमाज में सुनी जाने वाली मान्यता लेना चाहिए, जिसे वे वैदिक मान्यता कह रहे हैं। जब स्पष्ट ही वेद मंत्र व उसपर महर्षि के भाष्य से जीव का कुछ काल भ्रमण ज्ञात हो रहा है, तो यही वैदिक मान्यता कहलायेगी, न कि 'तृणजलायुका' दृष्टान्त से लिया गया तात्पर्य। साक्षात् 'वेद' से जानी गई बात उपनिषद् 'ब्राह्मण' से जानी गई बात से निश्चय ही बलवान् होती है। यही 'वैदिक मान्यता' कही जा सकती है।

अब 'तृणजलायुका' वाले दृष्टान्त को समझना आवश्यक है, जिससे कि स्पष्ट हो सके कि वेद व उपनिषद् (ब्राह्मण) में विरोध है या नहीं। दृष्टांत का एक अंश ही दार्ष्टान्त में घटता है, पूरा नहीं। जो अंश संगत होता है, वहीं लागू किया जाता है, असंगत अंश नहीं।

दृष्टांत का 'स्वकर्तृत्व=कीड़े का स्वयं दूसरे तिनके पर जाना' अंश आत्मा पर लागू नहीं होता, क्योंकि एक शरीर से दूसरे शरीर में जाना पूर्णतया ईश्वर पर आधारित है, आत्मा की यह सामर्थ्य नहीं कि वह स्वयं के यत्न से दूसरे शरीर में जा सके।

दृष्टांत का यह अंश भी आत्मा पर लागू नहीं होता 'दोनों तिनकों पर एक ही काल में कीड़े का स्पर्श' 'तृणजलायुका' जब एक तिनके से दूसरे तिनके पर जाती है, तब एक क्षण ऐसा भी आता है, जब उसका अगला भाग दूसरे तिनके पर व पिछला भाग पहले तिनके पर टिका रहता है। आत्मा चूंकि अणु स्वरूप एकादेशी है, अत: एक ही काल में उसका एक छोर पिछले शरीर में व दूसरा छोर अगले शरीर में नहीं रह सकता। कोई कहे कि आत्मा खींच कर लम्बी हो जाती हो, तो ऐसा भी असंभव है, क्योंकि आत्मा अपरिणामी है, उसमें ऐसा बदलाव नहीं हो सकता, जैसा रबर, इलास्टिक आदि में होता है।

दृष्टांत का तात्पर्यांश 'जीव तत्काल दूसरा शरीर धारण करता है' भी मान्य नहीं हो सकता क्योंकि यह वेद के विपरीत होगा।

अब जिज्ञासा होगी कि फिर उपनिषद् में इस दृष्टान्त को क्यों दिया है? इस दृष्टान्त की दार्ष्टान्त (जीव का एक शरीर छोड़, दूसरा शरीर धारण करना) से क्या समानता है? यहाँ तृणजलायुका के व्यवहार में एक विशेषता है-वह पिछले तिनके आधार पर अगले तिनकों को प्राप्त करती है, अर्थात् दूसरे तिनके को प्राप्त करने का आधार पिछला तिनका होता है। इसी तरह जीव के साथ भी समझना लागू करना चाहिए। जीव के अगले जन्म का आधार उसका पिछला जन्म (मनुष्य शरीर) होता है, क्योंकि वहीं उसने जा कर्म किये थे, उन्हीं कर्मों के आधार पर अगला जन्म मिलता है। पुन: जिज्ञासा होगी- जीव मनुष्येतर शरीरों से भी तो अन्य शरीरों में जाता है। तो इसका समाधान है कि वहाँ भी पिछले मनुष्येतर शरीर को भोगने के बाद जो कर्म बचे, उनमें से कुछ आधार पर ही अगला जन्म मिलेगा। अत: मनुष्येतर शरीर (उसमें बचे बिना भोगे कर्म) भी अगले जन्म का आधार बन सकता है।

तृणयलायुका के दृष्टांत में यह भी विशेषता है कि वह अगले तिनके (आधार) पर पहुँचकर पिछले भाग के समेट लेता है, उसका पूरा पिछला भाग अगले तिनके पर आ जाता है। इसी प्रकार जब जीव अगले शरीर में जाता

है, तो उसके पिछले शरीर (जन्म) के ज्ञान, कर्म और वासना भी साथ में आते हैं। पिछले जन्म में जैसे शरीर छूट जाता है, वैसे ये ज्ञान कर्म व वासना नहीं छूटते। इसकी पुष्टि इस बृहद्धा. ४.४.३ से पूर्व ४.४.२ के अन्त से होती है। वहाँ लिखा है-

''तं विद्याकर्मणी समन्वारभेते पूर्वप्रज्ञा च।''

तृण जलायुका दृष्टांत वाले बृहदारण्यक के वाक्य ४.४.३ में लिखा है-

''तद्यथा तृणयलायुका.....आत्मानमुपसंहरति एवमेवात्मा.....आत्मानमुपसंहरति।''

जैसे तृणजलायुका अपने को समेट लेती है (अगले तिनके पर) वैसे आत्मा (जीवात्मा) भी अपने को अगले शरीर में समेट लेता है। यहाँ वस्तुत: 'अपने को समेट लेने' की समानता दिखाई गई है, न कि कोई अन्य समानता। आत्मा के साथ सूक्ष्म शरीर रहता है। वह ज्ञान, वासना, कर्माशय आदि का आधार होता है। आत्मा इन सबके साथ ही अगले शरीर में पहुँचता है। अत: आत्मा का अपने को समेट लेना, माना जा सकता है।

एक और दृष्टि से इसे देख सकते हैं। जीव की जैसी प्रवृत्ति, कर्म, संस्कार इच्छा होती है, उसी के अनुसार उसे अगला शरीर मिलता है। जो कामनाएँ शेष हैं, उनका उठना कीड़े के मुख उठने जैसा समझा जा सकता है। मुख उठाकर जहाँ जायेगा, वहीं पिछला भाग भी उठकर चला जायेगा। जैसी कामना-वासना-इच्छा जीव की होगी, उसी के अनुसार उसके कुछ कर्मों से उसे नया जन्म (शरीर) मिल जायेगा। पिछले जन्म के आधार पर नया जन्म मिलना वैसे ही है जैसे कीड़ा पिछले तिनके के आधार पर अगले तिनके को प्राप्त करता है।

सारांश यह है कि जीव अपनी वासनाओं का जैसा विस्तार करता है, उसके अनुसार ईश्वर उसे अगला जन्म दे देता है। कर्माशय भी इसका आधार बनता है। बिना कर्म के या कर्म के विपरीत जन्म नहीं होता। अत: तृण जलायुका वाले कथन का यह तात्पर्य नहीं कि ''जीव का अगला जन्म तत्काल होता है। वेद के आधार पर हमें जानना चाहिए कि जीव कुछ दिन भ्रमण करके पूर्वकृत् कर्मानुसार अगला शरीर (जन्म) धारण करता है।'' **साभार जिज्ञासा समाधान-आचार्य सत्यजित्।**

इस पूरे समाधान में आचार्य श्री ने बड़े स्पष्ट रूप से विस्तारपूर्वक उपनिषद् के वास्तविक रहस्य व वेद की मान्यता को रखा है। वेदानुसार जीव कुछ काल-दिन भ्रमण कर अगला जन्म प्राप्त करता है। यह कदापि सिद्ध नहीं है कि वह जीव कुछ दिन तक भटकता रहता है, वह तो परमेश्वर की व्यवस्था व आधार से भ्रमण करता है। इन दिनों के परिभ्रमण को देख, पौराणिक लोग जो तेरह दिनों तक उस जीव की शान्ति के लिए अनुष्ठान करते हैं, यह सब उनकी अज्ञानता व स्वार्थ सिद्धि करना है। इसलिए इस प्रकार के अनुष्ठान में अपना सामर्थ्य नष्ट न करना चाहिए। परमेश्वर की व्यवस्था में जो आत्मा है, उसके लिए हम कुछ कर भी नहीं सकते। अस्तु।

- ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर।

अतिथि यज्ञ के होताओं से अनुरोध

अतिथि यज्ञ के होताओं से उनकी वैवाहिक वर्षगांठ अथवा जन्मदिन व विभिन्न अवसरों पर ५१०० रु. प्रतिवर्ष सभा को प्राप्त होते रहते हैं। जो महानुभाव संकल्प के साथ इस पुनीत कार्य से जुड़े हुए हैं, उनसे हमारा अनुरोध है कि वे अपनी राशि भेजते समय जन्म तिथि/वैवाहिक वर्षगांठ आदि व दूरभाष संख्या सूचित करना न भूलें। साथ ही यह भी अवश्य सूचित करा देवें कि पहले से भिजवा रहे हैं अथवा नया शुरू किया है। आप अपनी राशि सभा के बैंक खाते में नगद अथवा चैक द्वारा जमा करा सकते हैं।

इस बात का निश्चय है कि ब्रह्मचर्य्य उत्तम शिक्षा विद्या शरीर और आत्मा का बल आरोग्य पुरुषार्थ ऐश्वर्य सज्जनों का संग आलस्य का त्याग यम-नियम और उत्तम सहाय के विना किसी मनुष्य से गृहाश्रम धारा जा नहीं सकता।

-महर्षि दयानन्द, यजुर्वेद, भावार्थ ८.३१

अतिथि यज्ञ के होता बनें

महर्षि दयानन्द सरस्वती की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा आर्य जगत् की एक मात्र ऐसी संस्था है जो सामूहिक सहयोग से ऋषि द्वारा निर्धारित लक्ष्यों की पूर्ति हेतु कृत संकल्प है।

सभा निरंतर प्रगति के पथ पर अग्रसर है। निरंतर अबाध गति से ऋषि उद्यान को आकर्षक एवं जन उपयोगी बनाने हेतु नव निर्माण करा रही है, वेद प्रचार पूरे देश में संचालित कर रही है, वेदों का एवं ऋषि ग्रंथों का प्रकाशन निरंतर जारी है।

प्रातः एवं सायं दैनिक यज्ञ– प्रवचन, वेद–पाठ, उपनिषद्, दर्शनादि शास्त्रों की कथा द्वारा वैदिक धर्म का कार्य नियमित रूप से आश्रम में चलता है। ***गुरुकुल***– आर्ष पद्धति से संचालित गुरुकुल में पढ़ रहे ब्रह्मचारी जो साधना एवं समाज सुधार का लक्ष्य लेकर अध्ययनरत हैं उनकी सभी आवश्यकताओं की पूर्ति निःशुल्क की जाती है। ***अतिथि सेवा***– अतिथियों को यथोचित सुविधा प्रदान करने हेतु सभा पूर्ण रूपेण प्रयासरत है एवं सभी सुविधाएँ आवास, प्रातराश, भोजन की व्यवस्था निःशुल्क की जाती है। ***गोशाला***– गोशाला में चालीस के लगभग पशु हैं। इससे अधिक का स्थान नहीं है। आश्रमवासियों को गोशाला में उत्पादित दुग्ध का निःशुल्क वितरण किया जाता है। ***वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम***– वानप्रस्थ एवं संन्यास आश्रम में रहकर साधनारत वानप्रस्थियों एवं संन्यासियों की सभी प्राथमिक आवश्यकताओं की पूर्ति सभा द्वारा निःशुल्क की जाती है। स्वाध्याय एवं साधना की व्यवस्था है। ***विशाल पुस्तकालय***– इसमें दुर्लभ ग्रंथों का संग्रह है, सभा द्वारा शोध कर्ता छात्रों को शोध कार्य हेतु ग्रंथ निःशुल्क प्रदान किए जाते हैं जिनका लाभ स्वाध्यायशील व्यक्ति भी उठा सकते हैं। ***व्यायामशाला***– योग्य शिक्षक द्वारा नगर के युवाओं को ऋषि उद्यान में निःशुल्क व्यायाम प्रशिक्षण दिया जाता है। सभा द्वारा नियुक्त व्यायाम शिक्षक आसपास के गांवों से भी आर्यवीर दल का प्रशिक्षण शिविरों में प्रदान करते हैं।

ये सभी क्रियाकलाप आपके पावन उदार सहयोग से ही संभव हैं। जैसा कि सर्वविदित है कि सभा का आधार ही आकाशीय दानवृत्ति है। आपको प्रतिदिन अतिथि मिलना संभव नहीं फिर अतिथि यज्ञ कैसे किया जाय इसका उपाय है, कुछ राशि प्रतिदिन अतिथि यज्ञ के नाम से निकाल ली जाये और उसको एकत्र कर अतिथि सत्कार में गुरुकुल में भोजन आदि के सहयोग में दे दी जाय।

सभा के धार्मिक क्रियाकलापों एवं आवासीय स्थल ऋषि उद्यान में उपर्युत पावन क्रियाकलाप लम्बे समय तक अबाध चलते रहें इसके लिए सभा की योजना है कि प्रतिदिन १० रुपये अथवा प्रतिवर्ष ५ हजार की राशि प्रदान करने वाले उदार यशस्वी दानदाताओं का नाम अतिथि यज्ञ के स्थायी सदस्यों में अंकित किया जाता है ऐसे सज्जनों के नाम का परोपकारी में प्रकाशन भी किया जाता है।

अनेक 'अतिथि यज्ञ के होता' सदस्यों का आग्रह है, निश्चित तिथि जन्मदिन, विवाह वर्ष गांठ या विशेष अवसर पर वे अपनी ओर से संस्था में भोजन कराना चाहते हैं। ऐसे महानुभावों से निवेदन है कि वे अतिथि यज्ञ के होता के रूप में एक दिन के भोजन व्यय की राशि पाँच हजार एक सौ रुपये भेजते हुए इच्छित दिन का विवरण सूचित करेंगे तो उसका उल्लेख आश्रम के सूचना पट्ट पर किया जा सकेगा।

यह अल्प राशि आप दैनिक संचय घट में जमा भी कर सकते हैं, वर्ष में लोग अरबों रुपए आग में पटाके फोड़कर जलाते हैं असावधानी से बिजली जलती छोड़ इसे गंवा देते हैं आदि ऐसी छोटी–छोटी असावधानियों को रोक कर हम उसकी बचत राशि इस पावन कृत्य हेतु सभा को वर्ष में आसानी से दे सकते हैं।

सभा शिविरों के आयोजन द्वारा जन सामान्य को ऋषियों की जीवन प्रणाली सिखा रही है। आप इस योजना में स्थायी सदस्य बनकर ऋषि का संकल्प *संसार का उपकार* की पूर्ति में एक स्तम्भ बनकर सभा को सम्बल प्रदान कर सकते हैं।

यदि अपने सामर्थ्य के अनुसार राशि को न्यूनाधिक करना चाहें तो आपकी स्वतन्त्रता है अधिक से अधिक लोग परोपकारिणी सभा से जुड़ सकें, आप ऐसा करके ऋषि दयानन्द के कार्यों को आगे बढ़ाने में सहायक होंगे इसलिए ऐसी राशि निश्चित की है। आप से प्रार्थना है अपना नाम पता और संकल्प लिखकर अवगत करायें और अतिथि यज्ञ के होता बनें। अपनी राशि प्रतिमाह अथवा सुविधानुसार मनीआर्डर/डीडी/चैक द्वारा अथवा स्वयं उपस्थिति होकर कार्यालय में जमा करा सकते हैं। आपका दान ८०जी (आयकर की धारा) के अंतर्गत कर मुक्त होगा।

अतः आपसे निवेदन है कि आप भी अतिथि यज्ञ के होता बनिये। जिन महानुभावों ने हमारा निवेदन स्वीकार कर यज्ञ में अपनी आहुति दी है, उनके नाम यहाँ प्रकाशित किये जा रहे हैं।

अतिथि यज्ञ के होता
(१६ से ३० जून २०१६ तक)

१. श्री रामस्वरूप गरमकावला, अम्बाला, हरियाणा २. डॉ. खजानसिंह गुलिया, रोहतक, हरियाणा ३. श्री गोपाल प्रसाद यादव, अजमेर ४. श्री आनन्द अग्रवाल, फरीदाबाद, हरियाणा ५. स्व. श्री रामगोविन्द सिंह, गाजीपुर, उ.प्र. ६. श्री महेशचन्द गर्ग, जयपुर, राज. ७. श्री जयपाल सिंह, गाजियाबाद, उ.प्र. ८. श्री जगराम आर्य, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ९. श्री निपुण शुक्ला, भीलवाड़ा, राज. १०. श्रीमती प्रेमवती, हिसार ११. श्री जयकरण आर्य, गुरुकुल मांउटआबू १२. श्री योगेश्वर व श्रीमती राजकुमारी, मुजफ्फरनगर, उ.प्र. १३. स्वामी देवेन्द्रानन्द, अजमेर १४. श्रीमती कंचन आर्या, नई दिल्ली १५. श्री सिद्धसेन शास्त्री, भोपाल, म.प्र. १६. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर १७. श्रीमती सीता देवी वर्मा, अजमेर १८. डी.ए.वी. पब्लिक स्कूल, श्रीगंगानगर, राज. १९. श्री ऋषि मिशन परिवार, अजमेर २०. श्री विनोदेश छाबड़ा, गुडगाँव, हरियाणा २१. माताजी, अजमेर २२. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत, हरियाणा २३. श्री परमानन्द पटेल, सोनभद्रा, उ.प्र. २४. श्री जेठू सिंह, बीकानेर, राज. २५. श्री महानन्द दहिया, सोनीपत, हरियाणा २६. नरेन्द्र कुमार शर्मा, अलवर, राज. २७.श्रीमती रुकमणी देवी, अजमेर २८. श्रीमती लक्ष्मी, सोनीपत २९. श्री लाल चन्द आर्य, अहमदाबाद, गुजरात ३०. श्री प्रफुल्ल बोरा, ३१. अहमदाबाद, गुजरात ३२. डॉ. जगदेव विद्यालंकार, रोहतक, हरियाणा ३३. श्रीमती कमला आर्या (सुनंदा मुनि), जोधपुर, राज. ३४. श्री प्रीतम सिंह आर्य, गौतमबुद्धनगर, उ.प्र. ३५. श्री जगवीर सिंह आर्य, मेरठ, उ.प्र. ३६. डॉ. अरविन्द राजपुरोहित, पूना, महाराष्ट्र ३७. श्री सोहनलाल सिंगारिया, श्री गंगानगर, राज. ३८.श्री ध्रुव, दिल्ली ३९. श्री मुकेश सिंघल, जयपुर, राज. ४०. श्रीमती स्वाति राठौड, रतलाम, म.प्र. ४१. निपुण शुक्ला, भीलवाड़ा, राज. ४२. श्री सदोरोमल खूबानी, गाजियाबाद, उ.प्र. ४३. श्री जसवन्त सिंह, बीकानेर, राज. ४४. कुमारी आध्या, कुरुक्षेत्र, हरियाणा, ४५. श्री नेमिचन्द वर्मा, अजमेर।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

गौभक्तों से निवेदन

ऋषि उद्यान में परमार्थ हेतु गौशाला संचालित है। गौशाला में उत्पादित गौवों के दूध का वितरण सभी गुरुकुलवासियों, संन्यासियों एवं आगन्तुक अतिथियों में निःशुल्क किया जाता है। आप सभी गौ-भक्तों एवं उदारमना दानदाताओं से सभा का निवेदन है कि गौवों को उत्तम चारा मिले, इसके लिए जो भी सज्जन चारा दान देना चाहें, उनका स्वागत है। यदि आप दूरस्थ प्रदेश के हैं तो कृपया चारे हेतु अनुमानित राशि सभा को ड्राफ्ट/चैक/नगद भेज सकते हैं। यशस्वी दानदाताओं के नाम परोपकारी पत्रिका में प्रकाशित किए जाएँगे। आपका दान गौवों के संवर्धन में सहायक होगा।

ऋषि उद्यान में संचालित गौशाला के दानदाता
(१६ से ३० जून २०१६ तक)

१. श्री अतुल कुमार, अलवर, राज. २. स्वामी विज्ञानानन्द, पाली, राज. ३. श्रीमती रामा देवी आर्या, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ४. श्री जगराम आर्य, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ५. श्रीमती चन्द्रकला, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ६. श्री दिलीप सिंह, कैथल, हरियाणा ७. श्री सत्यपाल यादव, रेवाड़ी, हरियाणा ८. श्रीमती सुशीला देवी, अजमेर ९. श्री डाक्टर, जयपुर, राज. १०. स्व. राम गोविन्द सिंह, गाजीपुर, उ.प्र. ११. श्री महेश चन्द गर्ग, जयपुर, राज. १२. श्री राहुल धारीवाल, दिल्ली १३. आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ, उ.प्र. १४. श्रीमती स्नेहलता मेहता, लखनऊ, उ.प्र. १५. श्रीमती आशा अग्रवाल, लखनऊ, उ.प्र. १६. श्रीमती वेदवती आर्या, रोहतक, हरियाणा १७. मा. मुनीराम आर्य, सोनीपत, हरियाणा १८. मा. कपूर सिंह आर्य, जीन्द, हरियाणा १९. श्री पातीराम आर्य, दिल्ली २०. श्रीमती वंदना देवी, सहारनपुर, उ.प्र. २१. श्री प्रेममुनि, लखनऊ, उ.प्र. २२. श्रीमती प्रेमवती, हिसार, हरियाणा २३. श्री प्रभुदयाल आर्य, बरेली, उ.प्र. २४. श्री रजनीश कुमार शर्मा, मुजफ्फर नगर, उ.प्र. २५. श्री श्रीपाल आर्य, बरेली, उ.प्र. २६. श्रीमती द्रौपदी देवी, सोनीपत, हरियाणा २७. बहिन राजबाला, रोहतक, हरियाणा २८. श्री नफेसिंह, रेवाड़ी, हरियाणा २९. श्रीमती विनिता चौहान, अजमेर ३०. श्री सुभाष आर्य, जयपुर, राज. ३१. गौ-सेवक, रेवाड़ी, हरियाणा ३२. गौ-सेवक मण्डली, रेवाड़ी, हरियाणा ३३. श्री रामरतन विजवर्गीय, अजमेर ३४. श्री मुमुक्षु मुनि, अजमेर ३५. ऋषि मिशन परिवार, अजमेर ३६. श्रीमती सन्तोष राठी, झज्जर, हरियाणा ३७. श्री विक्की जोशी, दिल्ली ३८. श्रीमती प्रकाशवती राठी, सोनीपत, हरियाणा ३९. श्री अनिरुद्ध कुमार, टंकारा ४०. श्रीमती मिथलेश सत्येन्द्रसिंह आर्य, अजमेर ४१. श्रीमती कमला शारदा, अजमेर ४२. श्री शिवदत्त काकाणी/श्रीमती रामेश्वरी देवी अजमेर

४३. श्रीमती रामेश्वरी देवी, अजमेर ४४. श्रीमती सरोज मालू/श्री दिनेश चन्द मालू, अजमेर ४५. श्री विजेन्द्र डागर, दिल्ली ४६. श्री देवेन्द्र डागर, दिल्ली ४७. श्री देवेन्द्र सिंह आर्य, बरेली, उ.प्र. ४८. श्री पातीराम आर्य, नई दिल्ली ४९. श्री श्याम कुमार गुप्ता, कासगंज, उ.प्र. ५०. श्री नरेन्द्र कुमार शर्मा, अलवर, राज. ५१. श्रीमती रुकमणी देवी, अजमेर ५२. श्री जयकरण कौशिक, दिल्ली ५३. श्री गुरुदत्त, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ५४. मत्रैयाती (वानप्रस्थी), बीड़, महाराष्ट्र ५५. श्री तेजसिंह आर्य, रामपुर, उ.प्र. ५६. भँवरीलाल, महैन्द्रगढ़, हरियाणा ५७. श्री अखिलेश, रोहतक, हरियाणा ५८.श्री पालराम व श्रीमती राजेशरानी, दिल्ली ५९. श्री मेहर सिंह, सोनीपत, हरियाणा ६०. श्री हंसमुनि योगार्थी, नारनौल, हरियाणा ६१. श्री प्रीतम सिंह आर्य, गौतमबुद्ध नगर, उ.प्र. ६२. श्री शंकरलाल आर्य, नई दिल्ली ६३. श्री संतारपाल आर्य, मेरठ, उ.प्र. ६४. डॉ. उत्कर्ष शर्मा, पिलानी ६५. डॉ. पदमा झा, ईचलकरनजी, महाराष्ट्र ६६. श्री राधेश्याम बाहेती, लातुर, महाराष्ट्र ६७. श्रीमती लीला तुगनवकार, भाल्की, कर्नाटक ६८. श्री दयाराम आर्य, खानपुर ६९. श्री भावेश व भक्तिका, रोहतक, हरियाणा ७०. श्री महेश शाह धारवाड़े, अहमदनगर, महाराष्ट्र ७१. श्री रमेश चन्द्र सन्तोष कुमारी, दिल्ली ७२. लाला किशनचन्द आर्य, दिल्ली ७३. श्री रमेश चन्द त्रिपाठी, लखनऊ, उ.प्र. ७४. श्रीमती कुसुम सिंह, लखनऊ, उ.प्र. ७५. श्री दयालदास आहुजा, रायपुर, छत्तीसगढ़ ७६. श्री पी.ए. देवीकर, पुणे, महाराष्ट्र ७७. श्री जयचन्द आर्य, मेरठ, उ.प्र. ७८. श्री प्रवीण माथुर, अजमेर ७९. श्री राजीव, बीकानेर, राज. ८०. श्री डी.एच. रमानी, अहमदाबाद, ८१. श्री मुकेश बाबू, अलीगढ़ उ.प्र. ८२. श्री गौरव कुमार, अलीगढ़, उ.प्र., ८३. साई प्रदीप कुमार/ श्रीमती चिन्ना रानी, चैन्नई।

– परोपकारिणी सभा, अजमेर।

धनराशि भेजने हेतु सूचना

चैक, ड्राफ्ट, धनादेश (मनीआर्डर) द्वारा राशि भेजने वाले उन पर '**मन्त्री, परोपकारिणी सभा**' अवश्य लिख दें। दानी महानुभाव ऑनलाइन भी राशि जमा करवा सकते हैं। भारतीय स्टेट बैंक में एक सहस्र तक की राशि जमा कराने वाले **२५ रु. बैंक सेवा शुल्क के रूप में अतिरिक्त** जमा करवाने की कृपा करें। कृपया, राशि निम्नांकित बैंकों में ऑनलाइन भिजवाकर, जमा कराई गई स्लिप के साथ उद्देश्य लिखकर सभा कार्यालय को सूचित करवाने का कष्ट करें।

खाताधारक का नाम – परोपकारिणी सभा, अजमेर (PAROPKARINI SABHA)

१. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या–091104000057530 बैंक का नाम–आई.डी.बी.आई. बैंक, पावर हाउस के सामने, जयपुर रोड, अजमेर।

IFSC – IBKL0000091

२. बैंक बचत खाता (Savings) संख्या – 10158172715 बैंक का नाम – भारतीय स्टेट बैंक, डिग्गी बाजार, अजमेर।

IFSC – SBIN0007959

वैशेषिक दर्शन का अध्यापन

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी की उत्तराधिकारिणी परोपकारिणी सभा के द्वारा संचालित 'महर्षि दयानन्द आर्ष गुरुकुल' ऋषि उद्यान, अजमेर में वर्षों से संस्कृत व्याकरण और दर्शनों का अध्यापन कार्य सुचारु रूप से चल रहा है। इसी क्रम में '**महर्षि कणाद**' द्वारा प्रणीत '**वैशेषिक दर्शन**' का **आचार्य श्री सत्यजित् जी** द्वारा सितम्बर–२०१६ के प्रथम सप्ताह से विधिवत् नियमित रूप से अध्यापन कराया जावेगा। यह दर्शन ५–६ महीनों में सम्पूर्ण हो जावेगा।

इस काल में ऋषि उद्यान में प्रतिदिन यज्ञोपरान्त उपदेश व प्रवचन का लाभ भी प्राप्त हो सकेगा। समय–समय पर विविध विषयों पर विद्वानों द्वारा कक्षाएँ भी होती रहेंगी। ब्रह्मचारियों, वानप्रस्थियों, संन्यासियों व अन्य असमर्थों हेतु निवास और भोजन व्यवस्था नि:शुल्क है। समर्थ प्रतिभागी इच्छानुसार यथायोग्य सहयोग कर सकते हैं। माताओं व बहनों की निवास व्यवस्था पृथक् रहेगी। पढ़ने के इच्छुक आर्यजन कृपया, सम्पर्क कर पूर्व स्वीकृति ले लेवें।

सम्पर्क सूत्र – आचार्य सत्यजित् जी – ०९४१४००६९६१, समय रात्रि (८.४५ से ९.१५)

पता – ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर – ३०५००१ (राज.) **ई–मेल** – styajita@yahoo.com

पृष्ठ संख्या ९ का शेष भाग .....

कई पुस्तकों में लिखा भी है। पृथक् पुस्तक लिखने का आश्वासन दिया। वही इसे प्रकाशित करना चाहते थे, परन्तु अकस्मात् चल बसे। आर्यो, श्री ठाकुरदत्त जी धवन ने आर्य साहित्य को समृद्ध किया। उनकी प्रसिद्ध व दुर्लभ उर्दू पुस्तक 'वैदिक धर्म प्रचार' जून मास में सभा को सौंप दी जायेगी।

अमरीका से आर्य यात्री:- एक प्रतिष्ठित आर्य ने अपने बच्चों को विदेश से ऋषि उद्यान, अजमेर लाकर कहा कि यह तुम्हारे कुल का प्रेरणा केन्द्र है, इससे जुड़े रहना। इसी भावना से एक आर्य युवक प्रवेश आर्य सपरिवार जुलाई में अमरीका से ऋषि उद्यान आ रहा है- यह आनन्द दायक समाचार है। इस युवक का सभा से घनिष्ठ सम्बन्ध है। सभा में अपने माता-पिता के नाम पर स्थिर निधि भी स्थापित की है। उसके भावनाशील माता-पिता तथा यह सेवक भी तब उसके साथ कुछ दिन ऋषि उद्यान में रहेंगे। संगठन ऐसे ही सुदृढ़ होता है।

पूर्वजों का अपमान-इतिहास की हत्या:- मैं चुपचाप सुनता व देखता रहा। मात्र संकेत देकर समझाया तो अवश्य कि महर्षि जी को चाँदापुर में मुसलमानों ने ही कहा था कि आर्य और मुसलमान मिलकर ईसाइयों से टक्कर लेकर उन्हें शास्त्रार्थ में पराजित करें। राधास्वामी मत के गुरु हजूरजी महाराज की पुस्तक पं. लेखराम जी के लेख पर मुहर लगाती है। उनका लेख मेरी पुष्टि करता है। दयानन्द सन्देश, वैदिक पथ हिण्डौन और आर्य मित्र ने इतिहास को रौंदते हुए स्वामी श्रद्धानन्द जी, पं. लेखराम जी, लक्ष्मण जी, पं. शान्तिप्रकाश व ठाकुर अमर सिंह का अपमान करते हुए इस सत्य इतिहास को झुठलाने वाले लच्छेदार लेख छापे। प्रयोजन मेरा उपहास उड़ाना व इतिहास प्रदूषण मण्डल को महिमा मण्डित करना था। मैं इन पत्रों के संचालकों का सदा ऋणी रहूँगा। इनके इस उपकार के बोझ से मेरी गर्दन सदा झुकी रहेगी।

इतिहास प्रेमी, सिद्धान्त निष्ठ जनता नोट कर ले कि ऋषि के जीवनकाल में तत्काल उर्दू में यह शास्त्रार्थ लाहौर से छप गया था। उसमें यह घटना दी गई। इसी को पं. लेखराम जी ने अपने एक ग्रन्थ में उद्धृत किया है। दिल्ली में वह ग्रन्थ मेरे पास था। कोई प्रमाण को चुनौती देने ही न आया। इस ग्रन्थ पर मुसलमानों ने सात केस चलाये। सब हार गये। इस घटना को किसी भी मुसलमान नेता, मौलवी व लेखक ने आज पर्यन्त झुठलाने का साहस नहीं किया। इसके विरुद्ध लेख देने व छापने वालों ने पं. लेखराम जी के ग्रन्थ के प्रकाशक व रक्षक सब महापुरुषों का अपमान करने का घृणित पाप किया है। मैंने तो इतिहास प्रदूषण महामण्डल को खुली छूट दे रखी है। मुझे जी भरकर कोसते जाओ। कन्हैया व खालिद को मात देकर आप लोग नया इतिहास रचकर देख लें। सत्य को हम भी मिटने न देंगे।

आर्य समाज की लाज रखिये:- आर्यजन, विद्वान्, संन्यासी व आर्य कार्यकर्त्ता बहुत प्रश्नों के उत्तर चाहते हैं। इतिहास की घटनाओं की प्रामाणिक जानकारी के लिए मेरी विनती है कि जिस विषय का ज्ञान न हो, उस पर लिखने से बचना चाहिये। मिथ्या कथन से आर्य समाज की साख गिरती है। मैं क्या-क्या बताऊँ? मुद्रण दोष की बात दूसरी है। यह दोष तो हम सबके लेखन में सम्भव है। आचार्य रामदेव जी पर मेरे लेख में भी ऐसा दोष रह गया।

आर्य जीवन में दिल्ली के श्री राजेन्द्र शर्मा ने पं. रामचन्द्र जी देहलवी के मौलवी सना उल्ला से एक कल्पित शास्त्रार्थ की कहानी जोड़ दी है। 'आर्य मित्र' में महात्मा धर्मेश्वरानन्द जी ने एक अत्यन्त निम्न स्तर का लेख लाला लाजपतराय जी पर लिखा है। लालाजी की एक भी प्रामाणिक जीवनी या आत्मकथा महात्मा जी ने स्पर्श तक नहीं की। लाला जी के पिता की कोई पुस्तक नहीं पढ़ी। लालाजी के किसी साथी का एक भी लेख नहीं पढ़ा। हदीसें कुछ सुन लीं और कुछ गढ़ लीं। ऋषि दयानन्द जी को बीच में व्यर्थ में घसीट लिया। अच्छा हो कि लीडर लोग भी कुछ पढ़ा करें। भ्रामक व निराधार लेखन से महाराज ने इतिहास प्रदूषण महामण्डल में अपने लिये बहुत पक्का और ऊँचा स्थान बना लिया है। आपको तो लाला जी के जीवन के क,ख,ग का भी ज्ञान नहीं। आपके लेख की जानकारी पाकर बड़ा धक्का लगा। बहुत शर्म आई।

-वेद सदन, अबोहर, पंजाब-१५२११६

संस्था - समाचार

१६ से ३० जून २०१६

यज्ञ एवं प्रवचन-जैसा कि विदित है, ऋषि उद्यान आर्य जगत् के उन स्थलों में से है, जहाँ पूरे वर्ष प्रतिदिन दोनों समय यज्ञ का अनुष्ठान अपरिहार्य रूप से किया जाता है। प्रात:काल यज्ञोपरान्त वेद के कुछ मन्त्रों का पाठ तथा महर्षि दयानन्द कृत वेदभाष्य का स्वाध्याय किया जाता है और तदनन्तर वेद प्रवचन होता है। रविवार प्रात:काल विशेष यज्ञ किया जाता है, जिसमें नगर निवासी आर्य सज्जन, माताएँ, बहनें और बच्चे सम्मिलित होते हैं तथा अपनी-अपनी आहुतियाँ प्रदान करते हैं। अतिथि यज्ञ के होता के रूप में दान देने वाले यजमान यदि ऋषि उद्यान में उपस्थित होते हैं तो उनके जन्मदिन, वैवाहिक वर्षगाँठ, सम्बन्धियों की पुण्य तिथि एवं अन्य अवसरों से संबंधित विशेष मन्त्रों से आहुतियाँ तथा विद्वानों से आशीर्वाद भी दिलवाये जाते हैं। सायंकाल प्रतिदिन यज्ञ और महर्षि दयानन्द जी द्वारा पूना में दिये गये प्रवचन 'उपदेश मञ्जरी' का पाठ एवं व्याख्यान होता है। शनिवार सायंकाल वानप्रस्थी साधक-साधिकाओं द्वारा प्रवचन होता है। प्रत्येक रविवार को सायंकाल गुरुकुल के ब्रह्मचारियों का भजन, प्रवचन होता है। यहाँ पर व्याकरण, दर्शन, रचना-अनुवाद कौमुदी की कक्षायें निरन्तर चलती रहती हैं, जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारियों के साथ-साथ आश्रमवासी संन्यासी, वानप्रस्थी, महिलायें और बाहर से आने वाले जिज्ञासु ज्ञान अर्जित करते रहते हैं।

१२ से १९ जून तक योग शिविर और २१ जून को अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के कारण इन दस दिनों में वेद आधारित योग साधना और ईश्वर पर विशेष चर्चायें हुईं। प्रात:काल प्रवचन के क्रम में त्रैतवाद के सैद्धान्तिक पक्ष की व्याख्या करते हुए **डॉ० धर्मवीर जी** ने कहा कि ईश्वर के स्वरूप को जाने बिना योग साधना से लाभ नहीं हो सकता। संसार में जिसका बड़ा नाम है और जिसकी कोई प्रतिमा नहीं है, वह ईश्वर सब जगह पहुँचा हुआ है। वह एक है और सबका अधिष्ठाता है। वह संसार का व्यवस्थापक है। त्यागपूर्वक भोग करना और लालच न करना-यह उसकी व्यवस्था का एक भाग है। महर्षि दयानन्द जी ने आर्य समाज के दूसरे नियम में ईश्वर के अनेक नाम और विशेषण को एक ही वाक्य में लिखा है-ईश्वर सच्चिदानन्दस्वरूप, निराकार, सर्वशक्तिमान, न्यायकारी, दयालु, अजन्मा, अनन्त, निर्विकार, अनादि, अनुपम, सर्वाधार, सर्वेश्वर, सर्वव्यापक, सर्वान्तर्यामी, अजर, अमर, अभय, नित्य, पवित्र और सृष्टिकर्ता है। उसी की उपासना करने योग्य है। इसी प्रकार आर्याभिविनय ग्रन्थ के आरम्भ में महर्षि ने परमेश्वर के अनेक नाम उद्धृत किये हैं जो उसके गुण, कर्म, स्वभाव और स्वरूप के वाचक हैं। मनु जी महाराज के अनुसार ईश्वर का नाम अत्यन्त मूर्ख, अनपढ़ और विद्वान् सभी लेते हैं, सभी उसकी शरण में हैं। सब गरीब और अमीर ईश्वर के भरोसे ही अपना जीवन चलाते हैं। भले ही गलत नाम और गलत तरीके से याद करते हैं, लेकिन करते हैं। कोई उसके कुछ नाम जानता है तो कोई उसके बहुत नाम जानता है। जैसे जल, वायु और भोजन सबके लिये आवश्यक हैं, वैसे ही ईश्वर भी सबकी आवश्यकता है। संसार के सब पदार्थों की यथावत् जानकारी देने के लिये परमात्मा ने शाश्वत वेदज्ञान प्रकाशित किया है। जो जितना अधिक ज्ञान प्राप्त करेगा, वह उतना ही सांसारिक और पारमार्थिक आनन्द प्राप्त करेगा। सुख, सफलता, उन्नति और ऐश्वर्य के चाहने वाले सभी लोग ईश्वर का ही ध्यान करते हैं, चाहे उनकी अपनी विधियाँ किसी भी प्रकार की हों। संसार का भोग चाहने वाले और मोक्ष का आनन्द चाहने वाले सब लोग ईश्वर से ही माँगते हैं। परमात्मा का भंडार अथाह है, सब मनुष्यों और सब प्राणियों के लिए है। जो जहाँ है जिस योग्य है, उसको वह पदार्थ वहाँ मिल जाता है। जैसे कुएँ का जल सबके लिये होता है, जिसका बर्तन जितना बड़ा होता है, वह उतना ही पानी निकाल लेता है। निराकार ईश्वर पृथ्वी, अन्तरिक्ष और द्युलोक आदि में सब जगह है, किन्तु उसका दर्शन करने के लिए स्थान-स्थान की यात्रा करना, बाहर भटकना व्यर्थ है। उसको जानने और उसके दर्शन का एकमात्र साधन यह हमारा मानव शरीर ही है। पशु आदि अन्य शरीरों में जीवात्मा परमात्मा के दर्शन नहीं कर सकता, क्योंकि उनमें बुद्धि और विचार शक्ति नहीं होती है। वेद, दर्शन, उपनिषद्, ब्राह्मण ग्रन्थ, अन्य आर्ष ग्रन्थों के अध्ययन और विद्वानों के संग से ईश्वर के स्वरूप को जानना योग साधना के लिये अत्यंत आवश्यक है। परमेश्वर की सबसे उत्तम रचना यह मानव शरीर ही है। सत्, रज और तम गुणों से निर्मित इस मनुष्य शरीर में ही ईश्वर के दर्शन सम्भव हैं। मन, बुद्धि और ज्ञानेन्द्रियाँ सब उसे जानने के लिये सहायक साधन हैं। हृदय में जहाँ आत्मा है, वहीं परमात्मा का प्रत्यक्ष होता है। ईश्वर के दर्शन वहीं हो सकते हैं और कहीं नहीं। उस स्थान में क्या दिखता है, कैसा दिखता है-उसका वर्णन सम्भव नहीं है, क्योंकि संसार में कोई पदार्थ उसके समान नहीं है, जिसकी उपमा देकर बताया जा सके। जब मनुष्य सांसारिक पदार्थों और अपना स्वयं का ध्यान छोड़ देता है, तभी परमात्मा का ध्यान होता है और उस ध्यान से आनन्द प्राप्त होता है। संसार में ईश्वर के आनन्द के समान सुख देने वाला दिव्य पदार्थ कुछ भी नहीं है, जिससे उसकी तुलना हो सके। परमात्मा को सम्पूर्ण कोई नहीं जान सकता, क्योंकि वह अनन्त है। जैसे संसार के भी सब पदार्थों और विद्या को कोई मनुष्य नहीं जान सकता, क्योंकि

पदार्थ असंख्य हैं और विद्या भी असीम है, वैसे ही परमात्मा भी सीमारहित है। वह जितना अधिक ईश्वर को जानता है, उतना ही अनुभव करता है कि वह कुछ भी नहीं जानता। उसकी असीमता, विशालता, व्यापकता देखकर आश्चर्यचकित हो जाता है। उसको पकड़ना, पूर्ण रूप से जानना असम्भव है।

हिरण्यगर्भ सूक्त की चर्चा करते हुए आपने बताया कि इस सूक्त में सृष्टि विज्ञान की व्याख्या है। उत्पत्ति काल में सत्, रज और तम के संयोग से परमाणुओं का निर्माण, परमाणुओं से अणु, अणुओं के अलग-अलग मात्रा में मिलने से क्रमशः आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी अदि पंच महाभूतों का निर्माण होता है। पृथ्वी से औषधि, औषधि से अन्न, अन्न से वीर्य, वीर्य से पुरुष अर्थात् शरीर उत्पन्न होता है। परमेश्वर अपनी प्रेरक शक्ति से ही सब परमाणुओं को पकड़ता और गति देता है। सब पदार्थ उसके अन्दर ही हैं। संसार को देखने के लिए नेत्र और समझने के लिये वेदज्ञान की आवश्यकता है।

प्रातःकालीन प्रवचन में आर्य समाज के विख्यात् इतिहासविद् **प्रो. राजेन्द्र जिज्ञासु जी** ने बताया कि ईश्वर के अनेक नामों में एक नाम सुकृत् भी है, क्योंकि वह बिना हाथों के अति सुन्दर रचना करने वाला अनुपम कारीगर है। वह अत्यन्त सूक्ष्म और विशाल पदार्थों का निर्माण करता है। वह नदी, पहाड़, जंगल, रेगिस्तान, विभिन्न वनस्पतियाँ तथा मनुष्य और अन्य प्राणियों के शरीरों की अद्भुत रचना करता है। मनुष्यों के अतिरिक्त प्रकृति में संतुलन बनाये रखने के लिये बुद्धिपूर्वक पशु, पक्षी, सर्प, कीड़े आदि अनेक प्रकार के जीवधारियों को बनाता है। जल की शुद्धि के लिये मछली, मेंढक, कछुआ आदि, भूमि के शुद्धि के लिये सूअर आदि और वायु की शुद्धि के लिये सर्प, अजगर आदि बनाता है। वह सर्वव्यापक है, बिना मुख के उपदेश करता है तथा सृष्टि के आदि में चार ऋषियों के हृदय में चार वेद प्रकाशित करता है। पशुओं, पक्षियों, चीटियों आदि को बिना पाठशाला के आवश्यक ज्ञान देता है। कानों के बिना सुनता और आँखों के बिना देखता है। वह निराकार है, इसलिये स्थान नहीं घेरता है। भक्त लोग आह्वान करके उसे अपने हृदय में धारण करते हैं। वह न्यायकारी, दयालु और परोपकारी है। **हजारों वर्षों के बाद ९० वर्ष की वृद्धा माता हंसा ठकुरानी विश्व की पहली महिला थी, जिसे महर्षि दयानन्द जी ने गायत्री मन्त्र का उपदेश देकर वेदपाठ का अधिकार दिया था।** वह माता धार्मिक प्रवृत्ति की थी। वह अपने क्षेत्र की प्रतिष्ठित महिला थी, इसलिये उसके क्षेत्र में घर-घर यज्ञ होने लगे। वह ऋषि की शिक्षाओं को प्रचारित करती थी। पंडित लेखराम, स्वामी श्रद्धानन्द, स्वामी दर्शनानन्द, पंडित चमूपति, पंडित रामचन्द्र देहलवी, पंडित गंगा प्रसाद उपाध्याय, स्वामी सत्यप्रकाश सरस्वती तथा अन्य ऋषिभक्तों ने वैदिक सिद्धान्तों को संसार में फैलाया। सत्यार्थ प्रकाश तथा आर्य समाज के विद्वानों के लेखन और व्याख्यानों का प्रभाव है कि कुरान और बाइबिल के अनेक विद्वान् अब वेद के सत्य ज्ञान को स्वीकार कर रहे हैं। हिन्दू समाज के ठेकेदार दुनिया भर में ईश्वर, देवता, महापुरुष, धर्म, संस्कार, व्रत, उपवास, कर्मफल आदि के विषय में भ्रम फैलाने में लगे हैं। हम सबको ऋषि मिशन में तन, मन, धन से काम करना चाहिये।

प्रातःकालीन सत्संग में **आचार्य सोमदेव जी** ने कहा कि जीवन यापन करने के लिये जैसे अनेक वस्तुओं की आवश्यकता होती है, वैसे ही परमेश्वर भी आवश्यक है। उपनिषद् में मनुष्य जीवन का लक्ष्य ब्रह्म प्राप्ति कहा गया है। उसके लिये प्रणव (ओम्) धनुष के समान और आत्मा तीर के समान है। प्रमाद को छोड़कर ही मनुष्य अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। ऋग्वेद में दसवें मण्डल के ८२ वें सूक्त के सातवें मन्त्र **'न तं विदाथ य इमा.....उक्थशासश्चरन्ति'** की व्याख्या करते हुए आपने बताया कि जो आत्मा के अन्दर रहते हुए अलग रहता है, उस परमेश्वर को चार प्रकार के मनुष्य नहीं जान सकते-१. जो अविद्या अन्धकार से ग्रस्त है, अर्थात् अनित्य पदार्थों को नित्य, अशुद्ध को शुद्ध, दुःख को सुख, अनात्मा को आत्मा मानते हैं। २. व्यर्थ की बकवाद करने वाले ईश्वर को नहीं जान सकते। जैसे नवीन वेदान्ती लोग 'ईश्वर सत्य जगत् मिथ्या' की रट लगाये रहते हैं। ३. जो केवल अपने देह पोषण और स्वार्थ सिद्धि में ही लगे रहते हैं, वे भी ईश्वर को नहीं जान सकते। ४. इन्द्रियों के सुखों को भोगनेवाला सांसारिक सुखों में लिप्त मनुष्य ईश्वर को नहीं जान सकता। संसार के सभी मनुष्यों को उनके दुःखों से मुक्ति तभी मिल सकती है, जब वे परमेश्वर के स्वरूप को जानकर उसे प्राप्त करने का लक्ष्य बना लें।

प्रातःकालीन प्रवचन में **श्री सत्येन्द्र सिंह जी आर्य** ने २१ जून अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर कहा कि स्वामी रामदेव जी और प्रधान मन्त्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के प्रयासों से योग का विश्व में प्रचार हो रहा है। इसके लिये ये दोनों धन्यवाद के पात्र हैं। विश्व के कुछ मुस्लिम देशों को छोड़कर अधिकांश देशों ने योग को स्वीकार किया है। योग भारतीय दर्शन का एक भाग है। योग के माध्यम से विश्व के मनुष्यों को एक परिवार के रूप में संगठित किया जा सकता है। संसार के सब मनुष्य योगाभ्यास करके तन और मन दोनों से स्वस्थ रह सकते हैं। योग की परम्परा बहुत प्राचीन है। वर्तमान में योग के नाम पर आसन-प्राणायाम का प्रचलन अधिक है, जो योग शास्त्र के अनुसार अधूरा है, लेकिन इससे संसार के लोगों का शारीरिक स्वास्थ्य ठीक रहे तो यह भी एक उपलब्धि है। महर्षि पतंजलि का योगदर्शन हमें ईश्वर तक पहुँचने का प्रामाणिक और व्यावहारिक उपाय बताता है। यहाँ ऋषि उद्यान में योगाभ्यास के लिये उचित वातावरण है। प्रतिदिन हम सब अपनी दिनचर्या का प्रारम्भ ध्यान, उपासना और व्यायाम से करते हैं। योग के विषय

में भ्रान्तियों का निवारण करने के लिये हमारे यहाँ अत्यन्त योग्य विद्वान् रहते हैं। गीता में कहा है-'योगः कर्मसु कौशलम्', अर्थात् अपने-अपने कर्त्तव्यों का कुशलतापूर्वक सम्पादन करना योग ही है। महर्षि दयानन्द जी ने सत्यार्थ प्रकाश के तीसरे समुल्लास में पठन-पाठन के साथ ही ईश्वर उपासना को अनिवार्य बताया है, अतः योगाभ्यास के अन्तर्गत आसन, प्राणायाम, प्रत्याहार, धारणा, ध्यान आदि का प्रारम्भ बचपन से ही करना/करवाना चाहिये। इससे आयु लम्बी होगी और जीवनभर स्वास्थ्य ठीक रहेगा। किसी प्रकार का दुर्व्यसन और दुर्गुण भी निकट नहीं आयेगा।

बीकानेर निवासी **आचार्य शिवकुमार जी** ने प्रातःकालीन सत्संग में कहा कि ब्रह्मवर्चसी ब्राह्मण और अतिरथी क्षत्रिय राष्ट्र का संचालन करते हैं। ब्रह्म अर्थात् वेद और ईश्वर का जानने वाला विद्वान् ब्राह्मण कहलाता है। ब्राह्मण शब्द गुणवाचक है। ब्राह्मण को पंडित, विद्वान्, मनीषी, प्रगल्भ, आचार्य आदि भी कहते हैं। यदि किसी का जन्म धार्मिक विद्वानों के परिवार में होता है और वह वेद शास्त्रों का अध्ययन करके उच्च कोटि का विद्वान् बन जाता है तो सोने में सुहागे के समान होता है। वह अत्यन्त श्रेष्ठ और पूजनीय भी हो जाता है। ब्राह्मण को सत्यवादी और श्रेष्ठ आचरण वाला होना चाहिये। वह अपने ज्ञान-विज्ञान को निरन्तर बढ़ाता रहे। समाज के शेष वर्ण ब्राह्मण का ही अनुसरण करते हैं। महर्षि दयानन्द और पूर्ववर्ती आचार्यों ने ब्राह्मण के ज्ञान की अपेक्षा आचरण को महत्त्वपूर्ण बताया है। वेद में ब्राह्मण को परमेश्वर के मुख से उत्पन्न हुआ कहा गया है। वेदों में आलंकारिक उपदेश है। जैसे शरीर में सिर अन्य अंगों से ऊपर है तथा रक्षणीय, परिपालनीय और ज्ञान का अधिकरण है, वैसे ही ब्राह्मण का स्थान समाज के अन्य वर्णों की अपेक्षा ऊँचा होता है। समाज में अन्य वर्ण वाले मनुष्यों की अपेक्षा ब्राह्मण श्रेष्ठ गुणों के कारण कम संख्या में होते हैं और पूजनीय भी होते हैं। जब ज्ञान-विज्ञान में श्रेष्ठ ब्राह्मण और युद्ध कला में निपुण क्षत्रिय मिलकर एक दूसरे का सम्मान करते हुए कार्य करते हैं, तब देश में सब प्रकार की उन्नति होती है। शूद्र भी तप करते हुए श्रेष्ठ विद्या प्राप्त कर ब्राह्मण बन सकता है।

भगवती आर्ष कन्या गुरुकुल गुड़गाँव की आचार्य जी ने प्रातःकालीन सत्संग में बताया कि हमारी सनातन भारतीय वैदिक संस्कृति विश्व के सब मनुष्यों और प्राणियों का कल्याण करने वाली है, जबकि पाश्चात्य जीवन शैली सर्वथा अहंकार व स्वार्थपूर्ण होने के कारण दुःखदायक है। मनुष्य जीवन के सर्वोत्तम लक्ष्य मुक्ति को प्राप्त करने के लिये प्राचीन काल से ऋषियों ने पंच महायज्ञ का विधान किया है, जिसे हम लोग प्रतिदिन करते हैं, लेकिन पाश्चात्य जीवन शैली में इस प्रकार का कोई कार्य कभी नहीं किया जाता है।

योग शिविर सम्पन्न-१२ से १९ जून २०१६ तक आयोजित होने वाले योग शिविर में देश के विभिन्न प्रान्तों से २४६ साधक-साधिकायें सम्मिलित हुए, जिसमें युवाओं ने बड़े उत्साह से भाग लिया। शिविर प्रातः से सायं काल तक कई सत्रों में विभक्त था, जिसमें शिविरार्थियों को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक ज्ञान मिले-इसका विशेष ध्यान रखा गया। शिविर के अन्तिम दिन शिविरार्थियों ने जीवन को उच्च बनाने के लिये कई संकल्प लिये और शिविर के मध्य अच्छी व्यवस्था के लिये परोपकारिणी सभा के अधिकारियों, आचार्यों एवं गुरुकुल के ब्रह्मचारियों की भूरि-भूरि प्रशंसा की।

२० जून से ऋषि उद्यान में वृष्टि यज्ञ का प्रारम्भ-स्वर्गीय सन्त श्री हृदयराम जी ने इस वृष्टि यज्ञ का प्रारम्भ किया था। वे आर्य समाजी न होते हुए भी महर्षि दयानन्द के बड़े भक्त थे और यज्ञ के प्रति उनकी बड़ी निष्ठा थी। उनके देहांत के पश्चात् उनके शिष्यों ने जीव सेवा समिति का गठन किया था। श्री कुंगवानी जी ने बताया कि समिति के द्वारा यह यज्ञ पिछले २० वर्षों से भी अधिक समय से प्रतिवर्ष निरन्तर आयोजित किया जाता है जो श्रावणी पर्व तक चलता है।

ज्योतिष परिचय शिविर सम्पन्न- २५ से २८ जून तक चलने वाले इस चार दिवसीय शिविर में नोयडा निवासी आचार्य दार्शनेय लोकेश जी ने जिज्ञासुओं की अनेक शंकाओं का समाधान करते हुए ज्योतिष के विषय में अत्यन्त सूक्ष्म एवं विस्तृत जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि 'सूर्यसिद्धान्त' वैदिक गणित का सबसे प्राचीन ग्रन्थ है। उसमें अंकगणित, बीजगणित और रेखागणित के आधार पर पृथ्वी, सूर्य आदि सभी आकाशीय पिण्डों की गति, मार्ग आदि का पूर्ण ज्ञान है। आधुनिक वैज्ञानिकों की ग्रह, नक्षत्र सम्बन्धी जानकारी से बहुत पहले हमारे पूर्वज ऋषियों को भूगोल, खगोल आदि का सम्पूर्ण ज्ञान था। इस शिविर में भाग लेने के लिए स्थानीय लोगों के साथ ही विभिन्न गुरुकुलों के आचार्य, ब्रह्मचारी और ज्योतिष शास्त्र में रुचि रखने वाले लोग भी विभिन्न प्रान्तों से आये थे। सोमवार २७ जून को आचार्य दार्शनेय लोकेश जी के जन्मदिन पर ऋषि उद्यान में विशेष यज्ञ का आयोजन किया गया। उनके परिवार के सदस्य भी इस अवसर पर उपस्थित रहे।

***डॉ. धर्मवीर जी का प्रचार कार्यक्रमः-**

सम्पन्न कार्यक्रम-(क)२१ जून २०१६- एन.आई.टी. कुरुक्षेत्र में योग पर व्याख्यान।

(ख) १-३ जुलाई २०१६ आर्य समाज सूरजकुण्ड मेरठ के वार्षिकोत्सव में व्याख्यान।

***आचार्य सोमदेव जी का प्रचार कार्यक्रम-**

सम्पन्न कार्यक्रम-(क) २८-३० जून २०१६-श्री महेशचन्द्र शर्मा जी के घर अथर्ववेद पारायण यज्ञ।

(ख) ३ जुलाई-आर्य समाज आदर्श नगर अजमेर में व्याख्यान।

आगामी कार्यक्रम-१५-१७ जुलाई २०१६-आर्य समाज वैदिक भक्ति साधना आश्रम रोहतक में यज्ञ व प्रवचन।

स्तुता मया वरदा वेदमाता-३७

आ त्वागमं शंतातिभिरथो अरिष्टतातिभिः।
दक्षं ते भद्रमाभार्षं परा यक्ष्मं सुवामि ते।।

चिकित्सक का आना आशा का सूचक है। इससे रोगी को आश्वासन मिलता है। मनुष्य को आश्वासन से बड़ा बल मिलता है। चिकित्सक रोगी को आश्वासन दे रहा है-मैं तेरे पास आ रहा हूँ। ऐसे ही नहीं आ रहा हूँ, मैं श्रेय कल्याण को लेकर आ रहा हूँ। मेरे हाथों से तेरा कल्याण निश्चित है। कल्याण करने वाले उपायों को लेकर आ रहा हूँ। रिष्ट रोग हिंसा और कष्ट को कहते हैं। वैद्य कहता है- मैं तुझे रोग रहित करने आ रहा हूँ।

इस सूक्त के सभी मन्त्रों में जहाँ औषध की चर्चा है, वहाँ वाणी और स्पर्श चिकित्सा का भी वर्णन मिलता है। हाथ को विश्वभेषजः कहा है। चिकित्सक के हाथ के स्पर्श से रोगी को शान्ति और स्वास्थ्य का अनुभव होता है। मेरा हाथ समस्त रोगों की औषध है। स्पर्श मात्र से रोग का निवारण करता हूँ। समस्त अशिव को मेरा हाथ मसल देने में समर्थ है। वाणी से भी रोगी को स्वास्थ्य का अनुभव कराता हूँ।

मूल रूप से मनुष्य शरीर के रोग तो सहन कर लेता है, परन्तु यदि मानसिक रूप से निराशा का अनुभव करने लगे तो फिर उसको स्वस्थ करना कठिन हो जाता है। मनुष्य को किसी की सहायता का विश्वास होता है तो वह अपने में बल का अनुभव करता है। आस्तिक होने का मनुष्य को सबसे अधिक लाभ मानसिक स्तर पर ही मिलता है। आस्तिक मनुष्य परमेश्वर की सहायता का अनुभव हर समय कर सकता है, अतः उसे भय नहीं लगता। डेल कार्नेगी ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'चिन्ता छोड़ो, सुख से जीओ' में अपने अनुभव लिखे हैं। एक अनुभव में कहा गया है कि रोगी पर औषध उपचार के साथ-साथ आस्तिकता का क्या प्रभाव पड़ता है, इसका भी परीक्षण किया गया। आस्तिक और नास्तिक रोगियों पर औषध का समान उपयोग किया गया, परिणाम में पाया गया कि आस्तिक रोगी शीघ्र स्वस्थ हुये तथा उनका प्रतिशत भी अधिक रहा। मनुष्य को परमेश्वर का विश्वास होता है तो उसका आन्तरिक बल बढ़ता है।

इसके साथ वातावरण भी मनुष्य के मन पर प्रभाव डालता है। जहाँ का वातावरण स्वच्छ होता है, पवित्र होता है तो ऐसे स्थान पर जाकर मन प्रसन्न होता है। इसका मुख्य कारण वातावरण में ऊर्जा बढ़ाने वाले तत्त्वों का होना है। शुद्ध वायु में ऊर्जा का होना, प्राण शक्ति का होना ही वायु की शुद्धता है। शुद्ध वायु का शरीर में संचार होते ही शरीर की कोशिकाएँ विस्फारित होने लगती हैं। प्रसन्नता में शरीर की मांसपेशियों में विस्तार आता है। जो व्यक्ति प्रसन्न रहता है, उसे ही स्वास्थ्य का बल मिलता है। मन्त्र कहता है- मैं तेरे लिये बल बढ़ाने वाली औषध लाया हूँ। पिछले मन्त्र में भी कहा गया है कि वातावरण की वायु ऐसी होनी चाहिये, जो अन्दर जाते हुए बल का संचार करे, प्राण शक्ति को बढ़ावे और अन्दर से बाहर की ओर निकलती हुई वायु अन्दर के दोषों को बाहर ले जावे। वैद्य कह रहा है- मैं तेरे लिये बल और सुख की प्राप्ति का उपाय लेकर आया हूँ। निश्चित रूप से तेरे रोग को **'परा सुवामि'** दूर करने में समर्थ हूँ। तेरे रोग को निकाल कर दूर फेंक देता हूँ।

मन्त्र के शब्द से चिकित्सा की विश्वसनीयता तथा वैद्य की योग्यता और आत्मविश्वास-दोनों का बोध होता है। जैसे वैद्य में आत्मविश्वास होता है, वैसे ही रोगी में भी जिजीविषा होनी आवश्यक है। इस सूक्त के मन्त्रों में रोगी को विश्वास बढ़ाने की प्रेरणा की गई है। इन मन्त्रों के पाठ से रोगी के विचारों को बल मिलता है। इससे पता लगता है कि चाहे स्वस्थ होना हो या रोग दूर करना हो, किसी अकेले उपाय से सिद्धि नहीं मिलती। जितने भी प्रयत्न सम्भव हैं, सबका उपयोग करना चाहिये, इसीलिये औषध के साथ पथ्य पर बल दिया जाता है। पुराने चिकित्सक पथ्य को भी औषध का भाग स्वीकार करते हैं। उसके मत में औषध पथ्य होता है, अतः औषध के साथ पथ्य भी आवश्यक है। आजकल की चिकित्सा लाक्षणिक है, अतः औषध केवल लक्षण का निवारण करती है, कारण का नहीं। औषध रोग का निवारण करती है, पथ्य कारण को दूर करता है, अतः दोनों को मिलाकर ही मनुष्य शीघ्र और पूर्ण स्वस्थ हो सकता है।

क्रमशः .....

आर्यजगत् के समाचार

१. अभिनन्दन समारोह- आर्यसमाज के क्षेत्र में जो महिलाएँ, संन्यासिनी, उपदेशिका, भजनोपदेशिका के रूप में स्वतन्त्र रूप से कार्य कर रही हैं अथवा जो कन्या गुरुकुलों में आचार्या हैं अथवा अध्यापन का कार्य कर रही हैं अथवा किसी भी रूप में आर्यसमाज के कार्य को आगे बढ़ा रही हैं। हम उन सभी का अभिनन्दन करेंगे। सम्पूर्ण विवरण, कार्य क्षेत्र, आयु, शिक्षा आदि लिखकर भेंजे।

सम्पर्क- ठाकुर विक्रमसिंह ट्रस्ट, ए-४१, लाजपत नगर-द्वितीय, (निकट मेट्रो स्टेशन), नई दिल्ली- ११००२४ दूरभाष- ०११-४५७९११५२, ९५९९१०७२०७

२. पुरोहित प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न- आर्य समाज कलकत्ता, आर्य समाज बड़ा बाजार, आर्य समाज हावड़ा, स्त्री आर्य समाज भवानीपुर तथा आर्य समाज आसनसोल के सम्मिलित प्रयास से विगत २९ मई से ५ जून २०१६ तक आर्य समाज कलकत्ता १९ विधान सरणी में पण्डित ओमप्रकाश विद्यावाचस्पति स्मृति द्वितीय आर्य पुरोहित प्रशिक्षण शिविर का आयोजन बड़े ही उत्साह के साथ किया गया। शिविर के उद्घाटन समारोह में विद्वान् पं. ज्वलन्त कुमार शास्त्री और आचार्य हरिप्रसाद शास्त्री ने पुरोहित की परिभाषा, कर्त्तव्यों, चारित्रिक वैशिष्ट तथा प्रचार करने के सूत्र (टिप्स) बताते हुए शिविरार्थियों को वैदिक धर्म में उद्बुद्ध किया। श्री श्रीराम आर्य, सुरेशचन्द जायसवाल, खुशहालचन्द आर्य, मदनलाल सेठ, अच्छेलल सेठ, छोटेलाल सेठ, रंजीत झा, नरेश गुप्त, विवेक जायसवाल, सत्यप्रकाश जायसवाल आदि ने भाग लिया। शिविरार्थियों को मन्त्रोच्चारण, संस्कृत सम्भाषण, सोलह संस्कार, वैदिक सिद्धान्तों तथा ऋषि जीवनी से विशेष रूप से जानकारी दी गई। इस अवसर पर शिविरार्थियों को सत्यार्थ प्रकाश श्री खुदीराम वेरा की ओर से, आशदतला वेद मन्दिर नन्दीग्राम की ओर से वैदिक धर्मधारा, आर्याभिविनय तथा पूना प्रवचन आर्य समाज कलकत्ता की ओर से, संस्कार विधि शिविर प्रबन्धन की ओर से, कुछ किताबों का एक सेट श्री प्रमोद अग्रवाल की ओर से तथा श्री अरविन्द सेठ की ओर से वैदिक यज्ञ विधि (गुट्का के रूप में) वितरित किया गया। शिविर में विद्वानों के रूप में शिविरार्थियों को शिक्षित करने में पं. आत्मानन्द शास्त्री, पं. देवनारायण तिवाड़ी, पं. योगेशराज उपाध्याय, आचार्य ब्रह्मदत्त आर्य, पं. सतीशचन्द मण्डल, पं. वेदप्रकाश शास्त्री, पं. वासुदेव शास्त्री, महात्मा प्रेमभिक्षु, पं. मधुसुदन शास्त्री, पं. अपूर्वदेव शर्मा, पं. वेदभानु शास्त्री, पण्डिता अर्चना शास्त्री, पं. कार्तिक ठल आदि का सहयोग रहा।

३. प्रवेश सूचना- महर्षि दयानन्द सरस्वती के मन्तव्यों के प्रचार-प्रसार में संलग्न १०५ वर्षों से संस्कृत जगत् में आर्ष ग्रन्थों के माध्यम से संस्कारित करने वाली संस्था श्री स्वामी वीतराग संन्यासी सर्वदानन्द जी द्वारा स्थापित, स्वामी ध्रुवानन्द जी द्वारा पोषित श्री सर्वदानन्द संस्कृत महाविद्यालय साधु आश्रम अलीगढ़ में प्रवेश प्रारम्भ है, अलीगढ़ रामघाट मार्ग पर एकान्त स्थान कालिन्दी का सुरम्य तट, स्वच्छ एवं सघन वृक्षों के मध्य स्थित, कड़ा अनुशासन, शुद्ध सात्विक भोजन, सुयोग्य आचार्यों द्वारा संस्कृत व्याकरण, साहित्य, दर्शन, गणित, विज्ञान, अंग्रेजी आदि की पठन-पाठन की समुचित व्यवस्था। नियमित यज्ञ, आर्यवीर दल की शाखा, व्यायाम आदि। **सम्पर्क सूत्र- ९७१९३७५८४८**

चुनाव समाचार

४. आर्यसमाज मन्दिर मल्हारगंज, जि. इन्दौर, म.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- डॉ. दक्षदेव गौड़, **मन्त्री**- डॉ. विनोद आहलुवालिया, **कोषाध्यक्ष**- सुश्री सुशीला शर्मा को चुना गया।

५. आर्यसमाज नागदा जं., जि. उज्जैन, म.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री पूनमचन्द आर्य, **मन्त्री**- श्री कमल आर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री जगदीश पांचाल को चुना गया।

६. आर्यसमाज गोमती नगर, लखनऊ, उ.प्र. के चुनाव में **प्रधान**- श्री बाल गोविन्द पालीवाल, **मन्त्री**- श्री शिवधर मौर्य, **कोषाध्यक्ष**- श्री वासुदेव वर्मा को चुना गया।

आगामी ऋषि मेला

४, ५, ६ नवम्बर २०१६, शुक्र, शनि, रविवार

को ऋषि उद्यान में होगा